वार्षिकी

(संस्थान द्वारा सम्पादित शैक्षिक कार्यों का वार्षिक प्रतिवेदन)

सत्र - 1989 - 90

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
उदयपुर

NIEPA DC
D06012

वार्षिकी 89--90
संस्थान का वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन

संरक्षक :
सी. के. नागर
निदेशक

मार्गदर्शक :
दुलीचंद जैन
उपनिदेशक (विभाग 7)

सम्पादक मण्डल :
डॉ. श्यामसिंह मंडलिया
अनुसंधान अधिकारी (अनुसंधान अनुभाग)

चाँदसिंह मुर्डिया
सहायक निदेशक
प्रकाशन अनुभाग

वासुदेव चतुर्वेदी
अनुसंधान सहायक
प्रकाशन अनुभाग

मुद्रक :
कोटावाला आफसेट
जयपुर

अनुक्रमाणिका

अध्याय - 1	संस्थान का स्वरुप (पुनर्संरचना एवं सुदृढ़ीकरण)	1 से 10
अध्याय - 2	विभागीय कार्य सम्पादन एवं उपलब्धियाँ	10 से 39
	(1) मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग	
	(2) विज्ञान एवं गणित विभाग	
	(3) मनोवैज्ञानिक आधार एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग	
	(4) शिक्षक-शिक्षा विभाग	
	(5) शैक्षिक प्रशासन एवं आयोजना विभाग	
	(6) शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग	
	(7) शैक्षिक अनुसंधान एवं विस्तार सेवा विभाग	
	(8) अनौपचारिक शिक्षा एवं विशिष्ठ शिक्षा विभाग	
	(9) पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास तथा मूल्याकंन विभाग	
अध्याय - 3	प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन में संस्थान का योगदान	40 से 45
अध्याय - 4	(अ) केन्द्र प्रवर्तित योजनाएँ	46 से 66
	(ब) यूनिसेफ सहायता प्राप्त प्रायोजनाएँ	
अध्याय - 5	अध्ययन वृत्त-एक नवाचार	67 से 71
अध्याय - 6	(अ) राज्य स्तरीय परामर्श दात्री समिति की पालना रिपोर्ट	72 से 84
	(ब) राज्य नवाचार विकास समूह की बैठक का प्रतिवेदन ।	
परिशिष्ट "		84 से 120
	(क) संस्थान के कुछ आकर्षण	
	(ख) संस्थान का सत्र 1989-90 का स्वीकृत बजट	
	(ग) राज्य स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय कार्यक्रमों में शैक्षिक अधिकारियों की सहभागिता	
	(घ) शैक्षिक अधिकारियों की सूची	
	सत्र 1990-91 के प्रस्तावित कार्यक्रम	121 से 150

...s Unit, ...cational
D-6012
15-4-91

प्राक्कथन

संस्थान प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु सतत् प्रयत्नशील रहा है। वर्ष 89-90 की उपलब्धियों और वर्ष 1990 के कार्यक्रमों को संयोजित कर समग्र उल्लेखनीय बिन्दुओं को वार्षिकी के इस अंक में समाहित किया गया है।

संस्थान के ढाँचे में एक क्रांतिकारी परिवर्तन संस्थान की पुनर्संरचना और सुदृढीकरण जुलाई 89 से कर उपलब्ध शैक्षिक अधिकारियों का उपयोग करते हुए किया गया । जहाँ संस्थान अपनी स्थापना के साथ ही मात्र प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता के लिए प्रयत्नशील रहा वहीं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में उच्च माध्यमिक शिक्षा के उन्नयन की दिशा में संस्थान ने कदम रखा । व्यावसायिक शिक्षा एवं विज्ञान शिक्षण सुधार योजना की क्रियान्विति के अन्तर्गत मानव संसाधनों एवं भौतिक संसाधनों के विकास की दिशा में संस्थान ने अपने दायित्वों का निर्वहन किया है । उल्लेखनीय है कि 11 अन्य केन्द्रप्रवर्तित योजनाओं की क्रियान्विति हेतु महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं ।

ग्रीष्मावकाश 89 में आपरेशन ब्लेक बोर्ड योजना के अन्तर्गत चयनित पंचायत समितियों के लगभग 8000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया । उल्लेखनीय है कि जिन प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया है उन विद्यालयों में आपरेशन ब्लेक बोर्ड योजना के अन्तर्गत किट भी मुहैया किए गए हैं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रमों में वांछित परिवर्तन परिवर्द्धन कर राज्य सरकार से अनुमोदित करवाए गए । समान केन्द्रीक तत्वों को ध्यान में रख कर कक्षा पहली दूसरी तीसरी, चौथी, छठी एवं सातवीं की सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकें तैयार कर राज्य सरकार को भेजी जा चुकी है । अंतिम चरण में कक्षा पाँच और आठ की सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकें निर्मित इस वर्ष कराया जाना प्रस्तावित है ।

संस्थान शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग की दृष्टि से भी प्रयत्नशील है । राज्य परामर्शदात्री समिति के निर्णयानुसार शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग जयपुर से श्रव्य दृश्य शिक्षा कार्यालय में स्थानान्तरित किया जा चुका है और फरवरी 90 से विधिवत कार्य कर रहा है । नवोदय विद्यालय खोलने के प्रस्ताव कम्प्यूटर शिक्षा, फिल्मलायब्रेरी आदि के संचालन का कार्य यह विभाग करता रहा है ।

संस्थान में राज्य नवाचार विकास समूह की स्थापना के बाद सभी विभागों से ताल-मेल बिठा कर नवाचारों के प्रयोगों के बारे में कार्य सम्पादित हो रहा है । शैक्षिक अध्ययन एवं अनुसंधान से सम्बंधित प्रतिवेदित अवधि में 16 अध्ययन पूर्ण हुए ।

संस्थान द्वारा अनौपचारिक शिक्षा, विकलांग शिक्षा, महिला शिक्षा, अनुसूचित जाति जनजाति की शिक्षा की कार्य-योजनाओं की क्रियान्विति कर रहा है वहीं केप प्रायोजना, पूर्वप्राथमिक शिक्षा, विकलांग एकीकृत शिक्षा, न्हीस प्रायोजना एवं जनसंख्या शिक्षा प्रायोजना की क्रियान्विति कर रहा है ।

संस्थान की सत्र 1989-90 की समस्त गतिविधियों उपलब्धियों, परिलब्धियों को उजागर

समझ लेना आवश्यक हैं । इसके पहले संस्थान की भूमिका और दायित्वों के बारे में जान लेना आवश्यक है । संस्थान की भूमिका निम्नानुसार है :-

राज्य में स्कूली शिक्षा के कार्यक्रमों की क्रियान्विति एवं उसका मूल्यांकन करना एवं शिक्षक-शिक्षा (प्रशिक्षण/अभिनवन) का आयोजन-नियोजन करना,प्राथमिक शिक्षा से माध्यमिक शिक्षा के स्तर तक शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि के प्रयास करने हेतु मॉड़ल एजेंसी के रुप में कार्य करना, शैक्षिक संस्थान में होने के नाते राज्य में चलाए जा रहे सभी प्रायोजनाओं एवं कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित करना, राज्य की स्कूली-शिक्षा के उन्नयन के लिए परामर्श एवं सलाह देने वाली संस्था के रुप में अपनी भूमिका का निर्वाह करना ।

- यों तो संस्थान के मूलभूत दायित्व हैं - शैक्षिक अनुसंधान (नवचार एवं विकासात्मक प्रवृत्तियाँ) प्रशिक्षण, प्रसार-सेवा, शैक्षिक आयोजना एवं प्रबन्ध, विकास कार्यक्रम एवं प्रकाशन। लेकिन बदली हुई परिस्थितियों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी, व्यावसायिक शिक्षा (10+2) मनोवैज्ञानिक आधार एवं व्यावसायिक निर्देशन, शैक्षिक कार्यक्रमों के सम्पादन हेतु मॉनिटरिंग एवं मूल्यांकन, नीति विषयक कार्यों में सलाह परिवीक्षण एवं निर्देशन, राष्ट्रीय-शिक्षा-नीति की क्रियान्विति राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर पर + यूनिसेफ सहायता प्राप्त प्रायोजनों तथा केन्द्र से सहायता प्राप्त योजनाओं की क्रियाच्विति करना, पाठ्यक्रम का विकास एवं पाठ्यसामग्री का निर्माण करना, शैक्षिक सूचनाओं एवं सांख्यिकी दत्तों का विश्लेषण, विज्ञान सुधार कर्यक्रम के अनतर्गत प्रयोगशालाओं एवं पुस्तकालयों का उन्नयन करना, जिला स्तर, राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर के शैक्षिक अभिकरणों व संगठनों के कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित करना । प्रकाशन एवं जन सम्पर्क करना तथा राज्य सरकार एवं निदेशालय द्वारा सौंपे कार्यों का निष्पादन करना आदि भी संस्थान के महत्वपूर्ण दायित्व है ।

इसी परिप्रेक्ष्य में संस्थान की पुनर्संरचना की गई । राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर में अब तक प्रभागीय व्यवस्था थी । आठ प्रभाग कार्यरत थे । अब संस्थान के सुदृढीकरण के प्रस्ताव की संस्थान की राज्य परामर्श दात्री समिति के अनुमोदन पर क्रियान्वित करते हुए संस्थान के विभागों की संरचना की गई है तथा प्रत्येक विभाग के अन्तर्गत अनुभागों एवं प्रकोष्ठ/प्रायोजनाओं की संरचना की गई है ।

यह विभागीय व्यवस्था नए शैक्षिक सत्र के समारंभ के साथ अर्थात् जुलाई, 89 से लागू हो गई है । अब संस्थान में निम्नांकित विभाग कार्यरत हैं -

1- मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

इस विभाग के अन्तर्गत दो अनुभाग है । मानविकी अनुभाग एवं समाज विज्ञान अनुभाग ।

मानविकी अनुभाग के अन्तर्गत दो प्रकोष्ठ है - । भाषा प्रकोष्ठ, जिसके अन्तर्गत हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षण उन्नयन हेतु कार्य-योजना बनाकर उनकी क्रियान्विति की जा रही है) ।

दूसरा प्रकोष्ठ - कला शिक्षा प्रकोष्ठ है, जो कला शिक्षण की प्रभावी बनाने हेतु कला, नृत्य, संगीत के कार्यक्रमों को गति दे रहा हैं ।

समाज विज्ञान अनुभाग के अन्तर्गत एक प्रकोष्ठ समाज विज्ञान प्रकोष्ठ बनाया गया है जो समाज विज्ञान से संबंधित विषयों के उन्नयन की दिशा में कार्य कर रहा है । दूसरा प्रकोष्ठ मूल्य परक शिक्षा का बनाया गया है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत जहां मूल्य परक शिक्षा के बारे में काफी कुछ कहा है वहीं प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक कला शिक्षा का पृथक विषय भी जोड़ा गया है ।

2- विज्ञान एवं गणित विभाग -

जैसा कि इस विभाग के नाम से ज्ञात होता है कि यह विभाग विज्ञान एवं गणित विषय के उन्नयन हेतु कार्य कर रहा है ।

विज्ञान अनुभाग के अन्तर्गत तीन प्रकोष्ठ हैं - पहला प्रकोष्ठ प्राथमिक शिक्षा विज्ञान जिसमें प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान के प्रयोग-आधारित शिक्षण एवं शिक्षकों की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु कार्य किया जाता है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लागू होने के बाद यह विभाग विज्ञान सुधार योजना पर कार्य करता रहा है । माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों की प्रयोगशालाओं को समृद्ध करने और पुस्तकालयों के वर्तमान स्तर को सुधारने हेतु केन्द्रीय सहायता का लाभ पहुंचाने के प्रयास भी यह विभाग करता रहा है । इसी दृष्टि से संस्थान की तीनों प्रयोग शालाओं को संलग्न करते हुए माध्यमिक शिक्षा विज्ञान प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के केरिक्यूलम फ्रेम वर्क की देखें तो ज्ञात होगा कि प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक की कक्षाओं में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की एक स्वतन्त्र विषय के रुप में स्थान दिया गया है । संस्थान में उसी दृष्टि से स्वास्थ्य एवं शरीरिक शिक्षा प्रकोष्ठ की संरचना की गई है ।

इसी विभाग के अन्तर्गत दूसरा अनुभाग है - गणित अनुभाग । चूँकि जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में कम्प्यूटर शिक्षा की दृष्टि से प्रत्येक संस्थान को कम्प्यूटर उपलब्ध कराए गए है । उनके रख-रखाव से लेकर संचालन की तकनीक का प्रशिक्षण देते की एवं माध्यमिक स्तर तक गणित की प्रयोगशाला का निर्माण कर क्रिया आधारित शिक्षण की व्यवस्था संयोजित की जानी है ।

संस्थान के इस अनुभाग में मात्र एक प्रकोष्ठ गणित प्रयोगशाला एवं कम्प्युटर शिक्षा प्रकोष्ठ है जो उक्त संकल्पना को गति देते हुए अपनी कार्य योजना की क्रियान्विति कर रहा है।

इस अनुभाग के अन्तर्गत जनंसख्या शिक्षा की प्रयोजना एवं न्हीस प्रायोजना की क्रियान्विति भी की जा रही है ।

3- मनोवैज्ञानिक आधार एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग

इस विभाग के अनतर्गत तीन अनुभाग है। इनमें से पहला अनुभाग है कार्यानुभव अनुभाग । इसके अन्तर्गत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर तक कार्यानुभव की शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम का विकास, मानव संसाधनों के विकास एवं उसके अध्ययन-अध्यापन की दिशाएँ खोजने और

कार्य-योजनाएँ तैयार करने का काम है । यहां यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि प्राथमिक उच्च प्राथमिक स्तर पर तो इस विषय की कार्यानुभव के रुप में ही स्थान दिया गया है, लेकिन माध्यमिक स्तर पर इसका रुप समाजोपयोगी उत्पादक कार्य भी सम्मिलित किया गया है । इस दृष्टि से इस अनुभाग का नाम कार्यानुभव अनुभाग रखा गया है ।

व्यावसायिक शिक्षा अनुभाग की कार्य पद्धति संचालन के लिए दो प्रकोष्ठों की संरचना की गई है - (1) व्यावसायिक शिक्षा एवं मानव संसाधन आयोजना प्रकोष्ठ और (2) व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम विकास प्रकोष्ठ ।

चूंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत 10+2 स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को लागू किया गया है, इसलिए इस धारा को व्यवस्थित एवं नियोजित रुप से संचालित करने हेतु पहला प्रकोष्ठ मानव संसाधनों के विकास की आयोजना पर कार्य-योजना की क्रियान्विति कर रहा है तथा दूसरा प्रकोष्ठ व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम के विकास का कार्य कर रहा है ।

राष्ट्रीय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु जिन ट्रेडों का चयन किया गया है उनकी योजना का निर्माण राज्य के पर्यावरण को तथा भौतिक एवं वित्तीय संसाधनों की उपलब्धि को ध्यान में रखकर की जाती है । यह अनुभाग पाठ्यक्रम विकास एवं मानव संसाधनों के विकास की कार्य-योजना को प्रभावी बनाने का कार्य करेगा।

इसी विभाग के अन्तर्गत शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन का अनुभाग है, जिसे मनोवैज्ञानिक आधार तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन अनुभाग का नाम दिया गया है । मनोवैज्ञानिक आधार तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन संबंधी संकल्पनागत कार्यों की कार्य-योजना की प्रभावी क्रियान्विति इस अनुभाग द्वारा की जाती है ।

4- शिक्षक शिक्षा विभाग

पूर्व में शिक्षक प्रशिक्षण एवं पत्राचार प्रभाग के नाम से प्रभागीय व्यवस्था का यह एक स्वतंत्र प्रभाग था । राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत सेवा पूर्व शिक्षकों के प्रशिक्षण के साथ सेवारत शिक्षकों के अभिनवन की संकल्पना को भी दोहराया गया है ; सभी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम जो मानव संसाधन विकास हेतु आयोजित किए जा रहे है । उनकी कार्य योजनाओं की निर्मिति एवं क्रियान्विति का दायित्व इस विभाग का होगा ।

इस विभाग के अन्तर्गत दो अनुभाग है एक सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा अनुभाग एवं दूसरा सेवारत शिक्षक शिक्षा अनुभाग ।

सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा अनुभाग के अन्तर्गत एक प्रकोष्ठ "सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा प्रकोष्ठ" है जो विभिन्न सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रमों के विकास का कार्य तो करता ही है साथ ही मानव संसाधन विकास हेतु अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी करता है ।

राज्य में "सीड़ा" के आर्थिक सहयोग से शिक्षाकर्मी योजना की क्रियान्विति की जा रही है। इस योजना की सफल क्रियान्विति हेतु सेवापूर्व प्रशिक्षण के लिए शिक्षाकर्मी योजना प्रकोष्ठ की संरचना की है, जो इस योजना की कार्य-योजना को गति प्रदान करता है ।

इस अनुभाग का तीसरा प्रकोष्ठ होगा - पत्राचार प्रकोष्ठ । अब तक सेवापूर्व शिक्षकों के द्वितीय वर्ष (शिक्षक प्रशिक्षण) के शिक्षकों हेतु पत्राचार पाठ्यक्रम की क्रियान्विति यह प्रभाग करता रहा है । इस कार्यक्रम को आवश्यकता अनुरुप विकास विभाग के अप्रशिक्षित शिक्षकों को पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा शिक्षा देने की एक योजना राज्य सरकार के विचाराधीन है । स्वीकृति प्राप्त होने पर यह प्रकोष्ठ प्रभावी होगा । वर्तमान में इस प्रकोष्ठ द्वारा पत्राचार द्वितीय वर्ष का कार्य सम्पादन किया जा रहा है । सेवारत शिक्षक शिक्षा अनुभाग के अन्तर्गत सेवारत शिक्षक शिक्षा प्रकोष्ठ की संरचना की गई है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत राष्ट्रीय व्यापक शिक्षक अभिनवन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अब इस प्रकोष्ठ द्वारा किया जा रहा है । सेवारत शिक्षकों के विभिन्न प्रशिक्षण अभिनवन कार्यक्रमों का आयोजन-नियोजन भी यही प्रकोष्ठ कर रहा है ।

राज्य में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना के बाद लिंकेज के रुप में कार्य करने वाला प्रकोष्ठ शिक्षक शिक्षा संस्था प्रकोष्ठ है । यह प्रकोष्ठ इन संस्थाओं के लिए संदर्भ व्यक्ति भी तैयार करता है ।

5- शैक्षिक आयोजना एवं प्रशासन विभाग

"सीपा" के गठन की बात राज्य सरकार के विचाराधीन है। जब तक "सीपा" का गठन नहीं हो जाता, तब तक इस विभाग द्वारा शैक्षिक आयोजना एवं प्रबंध का कार्य सम्पन्न किया जाता है। इस विभाग की कार्य प्रणाली को देखकर सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह विभाग आयोजना एवं प्रबंध पक्ष की रीढ़ है। इस विभाग के तीन अनुभाग हैं - पहला अनुभाग है - शैक्षिक आयोजना। इसके अन्तर्गत संस्थागत आयोजना, सूक्ष्म आयोजना, जिला योजना एवं राज्य योजना का कार्य संपन्न होता है । शैक्षिक प्रबंधन की दृष्टि से शैक्षिक प्रबंध सूचना प्रणाली एवं दत्त संसाधन शैक्षिक वित्त, संस्थान के कार्यक्रमों का समन्वयन एवं प्रसार इस अनुभाग द्वारा किया जाता है ।

इसके कार्य संपादन हेतु चार प्रकोष्ठों की संरचना की गई है - शैक्षिक आयोजना प्रकोष्ठ, शैक्षिक वित्त प्रकोष्ठ, शैक्षिक प्रबंध सूचना प्रणाली एवं दत्त संसाधन समन्वय कार्यक्रम प्रकोष्ठ।

दूसरा अनुभाग शैक्षिक प्रशासन अनुभाग है । शैक्षिक प्रशासन के अन्तर्गत शैक्षिक परिवीक्षणं, संस्थागत मूल्यांकन, शैक्षिक प्रशासन प्रणाली का स्वरुप, प्रधानाध्यापक वाक्पीठ, विद्यालय संगम, शैक्षिक अधिकारियों का अभिनवन कार्यक्रम, (जिसमें शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारियों, एस.डी.आई. एवं ई.ई.ओ., वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारियों, प्रधानाध्यापक माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक विद्यालयों) का प्रारंभिक एवं अभिनवन कार्यक्रम सम्मिलित है का आयोजन हो रहा है ।

संस्थान के विभागों के उत्थान एवं उन्नयन कार्यक्रम - यही अनुभाग संपन्न करेगा, जिसके अन्तर्गत निम्नांकित कार्यक्रम है :-

राज्य स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय शैक्षिक नीतियों का क्रियान्वयन, नामांकन एवं ठहराव, शिक्षा में-समुदाय सहभागिता, सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑफ एज्यूकेशन, राज्य परामर्श दात्री समिति, जिला शिक्षा, बोर्ड एवं ग्राम शिक्षा समिति की संरचना और उनकी सहभागिता के लिए आयोजना की निर्मित्ति एवं प्रबन्धन, शिक्षक कार्य मूल्यांकन अन्य राज्य से एन.सी.ई.आर.टी. से सम्पर्क आदि ।

इस अनुभाग के अन्तर्गत 3 प्रकोष्ठों का संरचना की गई है -

(1) शैक्षिक प्रशासन प्रकोष्ठ (2) शैक्षिक प्रशासन-प्रशिक्षण प्रकोष्ठ

(3) शिक्षा नीति एवं कार्यक्रम प्रकोष्ठ

तीसरा अनुभाग सामान्य प्रशासन एवं लेखा का है जिसके अनतर्गत संस्थापन, एवं व्यक्तिगत प्रबंध लेखा एवं सामान्य प्रशासन लाइब्रेरी, स्टेंडिंग कमेटी (संस्थान की) सामान्य प्रबोधन का कार्य किया जाता है ।

उक्त कार्य सम्पादन की दृष्टि से इस अनुभाग के 3 प्रकोष्ठ है - (1) संस्थान प्रकोष्ठ (2) लेखा, प्रकोष्ठ एवं (3) पुस्तकालय प्रकोष्ठ. इसके अलावा यह विभाग जिला मेपिंग एवं सूक्ष्म आयोजना के प्रोजेक्ट पर भी कार्य करेगा ।

6- शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग-

शैक्षिक प्राद्योगिकी विभाग के रुप में वर्तमान में कार्यरत विभाग शैक्षिक प्राद्योगिकी प्रभाग जयपुर में एवं इसी का एक अनुभाग दृश्य-श्रृव्य शिक्षा अनुभाग, अजमेर में कार्यरत है । राज्य परामर्श दात्री समिति की 20.4.89 को सम्पन्न हुई बैठक में वह प्रस्ताव पारित हुआ है कि शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग की अजमेर में स्थानान्तरित किया जाकर इसको गति प्रदान की जाए तथा ऐसी स्ट्रेटेजी तैयार की जाए जिससे बेहतर तालमेल बैठाकर शैक्षिक प्राद्योगिकी का उपयोग स्कूली शिक्षा में किया जा सकें ।

संस्थान के इस विभाग की भूमिका एवं दायित्व निर्वहन की दृष्टि से दो अनुभाग रखे गए है । विभाग के अन्तर्गत दूरस्थ शिक्षा अनुभाग है जिसकी कार्य-प्रणाली में दूरस्थ शिक्षा की योजना बनाने एवं अनुसंधान परक कार्य करना, रेडियों कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम को उन्नत एवं प्रभावी बनाने, शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों का विकास करने, शैक्षिक फिल्म निर्माण, फिल्म स्ट्रीप्स बनाने फिल्म लाइब्रेरी की सेवाओं की विद्यालयों तक पहुँचाने तथा सूचनाओं एवं दस्तावेजों के प्रसार का कार्य किया जाता है ।

इस अनुभाग के अन्तर्गत दो प्रकोष्ठ बनाये गए है - एक आकाशवाणी कार्यक्रम प्रकोष्ठ एवं दूसरा दूरदर्शन वीडियो कार्यक्रम प्रकोश्ठ ।

इस विभाग का दूसरा अनुभाग दृश्य-श्रव्य शिक्षा अनुभाग है । इस अनुभाग के अन्तर्गत श्रवय-दृश्य सामग्री का निर्माण एवं विकास करना, कम लागत की शिक्षण सामग्री का निर्माण एवं ग्राफिक्स प्रदर्शनी एवं मुद्रण मुख्य कार्य होंगे ।

इस अनुभाग की कार्य प्रणाली 5 प्रकोष्ठों में विभक्त कर संचालित की जा रही है ।

पाँचों प्रकोष्ठ है -

(1) फिल्म एवं फोटो ग्राफी
(2) पुरालेख सूचना एवं डॉक्यूमेंटेशन
(3) दृष्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री एवं चलचित्र
(4) ग्राफिक्स प्रदर्शनी एवं मुद्रण
(5) अल्प लागत शिक्षण समग्री प्रकोष्ठ

7- शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रसार सेवा विभाग -

शैक्षिक अनुसंधान-अध्ययनों के प्रतिकल्न द्वारा एवं प्रायोजनाओं की क्रियान्विति द्वारा न केवल संस्थान अपितु क्षेत्र में अनुसंधान प्रक्रिया अपनाने हेतु इस विभाग द्वारा रिसर्च मेथोडोलॉजी का अभिनवन, जिला शिक्षा अनुसंधान वाक्पीठों को गति देना, राष्ट्रीय नवाचार विकास समूह एवं राज्य शैक्षिक नवाचार र्ताओं के अनुभवों एवं नवाचारों की उपलब्धियों को सहेजना तथा उनका क्षेत्र से प्रचार-प्रसार करना । इस विभाग का प्रमुख कार्य हैं ।

विभाग में दो अनुभाग है । पहला शैक्षिक अनुसंधान अनुभाग-इसके अन्तर्गत तीन समूह हैं। (1) शिक्षा अनुसंधान प्रकोष्ठ (2) राज्य नवाचार विकास प्रकोष्ठ एवं (3) शैक्षिक प्रायोजना प्रकोष्ठ । राष्ट्रीय स्तर के अभिकरणों से मार्गदर्शन एवं सक्रिय सहयोग प्राप्त कर अनुसंधान, प्रायोजनाओं एवं नवाचारों के प्रयोग को दिशाएँ खोजना एवं उपलब्ध मानव संसाधनों को अनुवर्तन हेतु प्रेरित प्रोत्साहित करना इस अनुभाग के प्रमुख कार्य है ।

दूसरा अनुभाग "प्रसार सेवा अनुभाग" है। जिसके अन्तर्गत प्रसार सेवा प्रकोष्ठ प्रकाशन एवं जन-सम्पर्क है। संस्थान के मूलभूत दायित्वों-अनुंसधान, प्रशिक्षण, प्रसार, विकास और प्रकाशन में से सुविचारित एवं सुनियोजित प्रक्रिया के अंग के रुप में अनुसंधान, प्रसार और प्रकाशन का यह महत्वपूर्ण विभाग है । क्षेत्र के अनुसंधान परक कार्यों, नवाचारों की उपलब्धियों का प्रसार, प्रकाशन करना इसी विभाग का दायित्व है ।

प्रसार सेवा के कार्यो के अन्तर्गत प्रसार सेवा को प्रभावी बनाना तथा संस्थानिक कार्यो-गतिविधियों को प्रकाश में लाना मुख्य है । जन-सम्पर्क एवं प्रकाशन का यह कार्य इस विभाग के मुख्य कार्य हैं ।

8- अनौपचारिक शिक्षा एवं वंचित वर्ग शिक्षा विभाग -

इस विभाग के प्रथम अनुभाग-अनौपचारिक शिक्षा अनुभाग के अन्तर्गत दो प्रकोष्ठ हैं । एक प्रकोष्ठ अनौपचारिक शिक्षा-पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन प्रकोष्ठ तथा दूसरा प्रकोष्ठ अनौपचारिक शिक्षा कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण प्रकोष्ठ है ।

इस दृष्टि से अनौपचारिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का विकास करना पाठ्य सामग्री का निर्माण एवं मूल्यांकन प्रक्रिया का निर्धारण अनौपचारिक शिक्षा के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण शिविरों/अभिनवन कार्यक्रमों का आयोजन करना तथा अधिगम केन्द्रों को शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध कराना हैं । इसी अनुभाग के अन्तर्गत फिलहॉल शिक्षा कर्मी योजना का कार्य भी है जो कालांतर में शिक्षा विभाग के अन्तर्गत क्रियान्वित होंगी । प्रशिक्षण कार्यक्रम की कार्य योजना की

क्रियान्विति उक्त विभाग करता है ।

दूसरा अनुभाग वंचित वर्ग की शिक्षा का अनुभाग है जिसके अन्तर्गत बालिका शिक्षा, महिला समानता की शिक्षा, अनुसूचित जाति/जनजाति की शिक्षा, अल्प संख्यकों की शिक्षा तथा विशिष्ट शिक्षा विकलांगों की शिक्षा पर कार्य होता है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत वंचित वर्ग की शिक्षा पर विशेष बल देने एवं सक्रियता लाने की बात कही गई है । उसी दृष्टि से इस अनुभाग की संरचना की गई है ।

इसी अनुभाग के अन्तर्गत यूनिसेफ सहायता प्राप्त दो प्रायोजनाओं की क्रियान्विति होगी, जिनमें शिक्षा से वंचित ऐसे बालकों की शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराना है जो या तो कभी विद्यालय गए ही नहीं या किन्हीं कारणों से विद्यालय छोड़ बैठे । 6 से 14 आयु वर्ग के ऐसे बालकों की शिक्षा के लिए केप प्रायोजना एवं विकलांग बालकों की शिक्षा के लिए चलाए जा रहे छब्बड़ा प्रोजेक्ट की क्रियान्विति इसी अनुभाग में होती है ।

9- शिक्षाक्रम एवं मूल्यांकन विभाग

शिक्षाक्रम विकास एवं मूल्याकंन विभाग के अन्तर्गत दो अनुभाग एवं पाँच प्रकोष्ठ हैं कार्य-योजना की दृष्टि से देखा जाए तो यह विभाग काफी महत्वपूर्ण हैं । इस विभाग के अन्तर्गत शिक्षा क्रम के फ्रेम वर्क की तैयार करना, जिसमें पाठ्यक्रम में निर्देशित बिन्दुओं के आधार पर अध्ययन-अध्यापन सामग्री का निर्माण एवं नवीन पाठ्य-पुस्तकों का प्रणयन कर उनका ट्राई-आउट करना, मुख्य कार्य है । इसके साथ ही शिक्षकों को विषय वस्तु से परिचित कराने हेतु अभिनवन कार्यक्रम का नियोजन करना, दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग की स्थितियाँ सुझाना भी इसके कर्तव्य की सीमा में आता है ।

इस विभाग की कार्य योजना में अविभक्त इकाई शिक्षण की प्रभावी बनाने, शिशु क्रीड़ा केन्द्रों की गुणवत्ता वृद्धि के प्रयास करने एवं पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की बाल माध्यम प्रयोगशाला को समृद्ध बनाने हेतु संस्थानिक प्रयासों की गति देना भी है । इसी प्रकार भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से सी. सी. आर. टी. के कार्यों एवं कार्यक्रमों का आयोजन-नियोजन है । शिशु-देखभाल एवं शिक्षा प्रायोजना की क्रियान्विति सामुदायिक सहयोग की विकासात्मक प्रवृत्तियाँ प्रायोजना का अनुवर्तन करना भी इस विभाग के जिम्मे है ।

इस विभाग का एक अनुभाग शिक्षा-क्रम अनुभाग है - जिसके कार्य तीन प्रकोष्ठों में विभक्त होंगे (1) शिक्षा क्रम प्रकोष्ठ जो सामान्य शिक्षा के उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षाक्रम का विकास कर उसमें क्षेत्र के सुझावों की सम्मिलित करने का काम किया जाता है । (2) शैक्षिक-प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ जो शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग को शिक्षण अधिगम एवं तकनीक के रूप में सुनिश्चित दिशा देने का उपक्रम किया जाता है । (3) पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रकोष्ठ शिशु देखभाल और शिक्षा से जुड़े सभी अभिकरणों से समन्वय स्थापित कर शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि हेतु उनकी कार्य प्रणाली को सुनिश्चित कार्य-योजना का अंग बना कर तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रायोजना की क्रियान्विति की जाती है ।

इस विभाग का दूसरा अनुभाग-मूल्यांकन एवं परीक्षा सुधार, सतत व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया का निर्धारण, तकनीक एवं परीक्षा सुधार की कार्य योजना की क्रियान्विति इस अनुभाग द्वारा की जाती है । इस अनुभाग के दो प्रकोष्ठ है । (1) मूल्यांकन एवं परीक्षा सुधार तथा (2) परीक्षण सेवाएँ

शिशु देखभाल शिक्षा की यूनिसेफ प्रायोजना की क्रियान्विति इस विभाग के अन्तर्गत है ।

संस्थान के सुदृढीकरण एवं पुनर्संरचना के इस ढाँचे को उपलब्ध स्टाफ से ही समायोजित कर कार्य सम्पादन करना एक चुनौती पूर्ण कार्य था । संस्थान निदेशक श्री सी.के. नागर, ने अपनी प्रशासनिक सुझ-बूझ एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आयामों एवं प्रोग्राम ऑफ एक्शन की पैनी पकड़ से यह स्वरुप स्थिर किया है । इस ढाँचे से प्रत्येक विभाग की कार्य सम्पादन हेतु अन्य विभागों के कार्यो से तालमेल बैठाकर सहयोग प्राप्त करने हेतु भी उल्लेखित किया है ।

यह पुनर्संरचना एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली के विभागों की तरह ही है । आशा है अच्छे तालमेल और कार्य निष्पादन की दृष्टि से यह काफी उपयोगी सिद्ध हो सकेगा ।

संस्थान के वर्तमान स्वरुप में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर तथा नए आयामों की जोड़कर विभागों की संरचना की गई है जिससे शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन में संस्थान दायित्व वृद्धि के अनुरुप शैक्षिक समन्वय स्थापित कर उनका निर्वहन कर सकेगा ।

विभाग तथा अनुभाग - एक दृष्टि में

1. मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
(अ) मानविकी अनुभाग (ब) समाज विज्ञान अनुभाग

विज्ञान एवं गणित विभाग
(अ) विज्ञान अनुभाग (ब) गणित अनुभाग

3. मनोवैज्ञानिक आधार एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग
(अ) कार्यानुभव अनुभाग (ब) व्यावसायिक शिक्षा अनुभाग
(स) मनोवैज्ञानिक आधार तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन अनुभाग (द) उप प्रायोजना - टीम (कार्यानुभव)

4. शिक्षक शिक्षा विभाग
(अ) सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा अनुभाग (2) सेवारत शिक्षक शिक्षा अनुभाग

5. शैक्षिक आयोजना एवं प्रशासन विभाग
(अ) शैक्षिक आयोजना अनुभाग (ब) शैक्षिक प्रशासन अनुभाग (स) सामान्य प्रशासन अनुभाग

6. शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग
(अ) दूरस्थ शिक्षा अनुभाग (ब) श्रव्य दृश्य अनुभाग

7. शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रसार सेवा विभाग
(अ) शिक्षा अनुसंधान अनुभाग (ब) प्रसार सेवा अनुभाग
(स) प्रकाशन अनुभाग

8. अनौपचारिक शिक्षा एवं वंचित वर्ग शिक्षा विभाग
(अ) अनौपचारिक शिक्षा अनुभाग (ब) वंचित वर्ग शिक्षा अनुभाग

9. शिक्षाक्रम एवं मूल्यांकन विभाग
(अ) शिक्षाक्रम अनुभाग (ब) मूल्यांकन एवं परीक्षा सुधार अनुभाग

समग्र स्थिति - (अनुभाग समूह एवं प्रोजेक्ट)										योग
विभाग	1	2	3	4	5	6	7	8	9	(9)
अनुभाग	2	2	3	2	3	2	2	2	2	(20)
समूह	4	6	4	5	8	7	5	6	5	(50)
प्रोजेक्ट	1	2	1	1	2	1	-	4	4	(16)

अध्याय 2

विभागीय गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

1. मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

इस विभाग के अन्तर्गत दो अनुभाग हैं । मानविकी अनुभाग एवं समाज विज्ञान अनुभाग ।

मानविकी अनुभाग के अनतर्गत दो प्रकोष्ठ हैं - भाषा प्रकोष्ठ, जिसे अन्तर्गत हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षण-उन्नयन हेतु कार्य योजना बना कर उनकी क्रियान्विति की जाती है ।

दूसरा प्राकेष्ठ-कला शिक्षा प्रकोष्ठ हैं, जो कला शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु कला,नृत्य, संगीत के कार्यक्रमों को गति देता हैं ।

समाज विज्ञान अनुभाग के अन्तर्गत एक प्रकोष्ठ समाजविज्ञान प्रकोष्ठ है जो समाज विज्ञान से सम्बन्धित विषयों के उन्नयन की दिशा में कार्य करता है । दूसरा प्रकोष्ठ मूल्यपरक शिक्षा का है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत जहाँ मूल्य परक शिक्षा के बारे में काफी कुछ कहा है, वहीं प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक कला का पृथक विषय भी जोड़ा गया है ।

सत्र 89-90 में सम्पादित कार्य

प्रशिक्षण कार्यक्रम	अवधि	संभागी संख्या
1. माध्यमिक विद्यालय में अंग्रेजी शिक्षकों का प्रशिक्षण	19 से 28 जून 89	34
2. अंग्रेजी भाषा पाठों के परिवीक्षको के लिए परिवीक्षक मार्ग दर्शिका का निर्माण	24 से 29 जुलाई 89	16
3. उच्च प्राथमिक विद्यालय के अंग्रेजी शिक्षकों के लिए 10 दिवसीय प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम का	7 से 11 अगस्त 89	10
नवीनी करण एवं सन्दर्भ साहित्य निर्माण	18 से 21 सितम्बर 89	8
4. उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अंग्रेजी शिक्षकों के 28 दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का नवीनीकरण	8 से 13 जनवरी 90	9
5. आदिवासी क्षेत्र के लिए कक्षा 8 व 9 के छात्रों के अंग्रेजी की पूरक पुस्तकों का निर्माण कार्य गोष्ठी ।	22 से 27 जनवरी 90	15
6. मूल्य परक साहित्य समीक्षा कार्यगोष्ठी ।	29 जनवरी से 3 फरवरी 90	12
कुल कार्यक्रम	7	104

विकास :- (सामग्री निर्माण) :- प्रशिक्षण कार्यक्रम कुल 7 सम्पादित हुए तथा 104 संभागियों ने कक्षा 3 के लिए हिन्दी, कक्षा 6 के लिए संस्कृत व अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया। मूल्यों से सम्बन्धित हिन्दी सामाजिक अध्ययन विषय के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के दो पाठ श्रीमती कमला जैन तथा श्रीमती भुवनेश्वरी भटनागर द्वारा निर्मित किये गये । अंग्रेजी विषय के 10 दिवसीय प्रशिक्षण पाठयक्रम एवं शिक्षण सामग्री का उपयोग डाइट में किये जाने हेतु तैयार किये गये । शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय के नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित आदर्श प्रश्न पत्र अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, सामाजिक अध्ययन एवं कला शिक्षा के विभाग के सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा बनाये गये । महिला शिक्षा कर्मी प्रशिक्षण केन्द्र, शिक्षाकर्मी बोर्ड सीकर हाउस जयपुर द्वारा महिला शिक्षाकर्मी पाठ्यक्रम के बिन्दु मांगे गये श्रीमती भुवनेश्वरी भटनागर ने तैयार किया । श्री हरीशचन्द्र शर्मा ने वीडियो फिल्म निर्माण कार्य ने भाग लिया । उर्दू विषय की कक्षा 2 और 7 के लिए पाठ्यपुस्तकें बनाई गई ।

अनुसंधान :-

राज्य नवाचार विकास समूह के अन्तर्गत क्षेत्रीय शैक्षिक नवाचारों का सर्वेक्षण कार्यक्रम प्रक्रिया में -

प्रकाशन -

निम्नलिखित सामग्री प्रकाशन हेतु दी गई :-

1. बालकों का विद्यालय में परित्याग एवं ठहराव के कारणों का अध्ययन ।
2. संस्कृत शिक्षकों की अनुभूत कठिनाइयों का अध्ययन ।
3. ग्रीष्मकालीन हिन्दी-शिविर के पाठ्यक्रम की उपयोगिता का अध्ययन ।

निम्नलिखित सामग्री प्रकाशन प्रक्रिया में -

1. अंग्रेजी भाषा पाठों के परिवीक्षकों के लिए परिवीक्षण मार्ग - दर्शिका ।
2. उच्च प्राथमिक विद्यालय के अंग्रेजी अध्यापकों के लिए 10 दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।
3. मूल्यपरक शिक्षा के अन्तर्गत कक्षा 3 की पुस्तक
4. मूल्य परक शिक्षा में छात्र दैनन्दिनी का प्रारुप ।

प्रसार -

1. संस्कृत शिक्षण संदर्शिका कक्षा 6,7,8 केलिए राज्य के सभी जिलों में उच्च प्राथमिक विद्यालयों (ग्रामीण, शहरी) हायर सेकेण्ड्री विद्यालयों में वितरित की गई ।
2. लोहिया कॉलेज चुरु के डा. बी. के. चड्डा के द्वारा अन्तर्क्षेत्रीय शैक्षिक नवाचार प्रोजेक्ट रिपोर्ट डा. एम. एस. खापरेड़ा राष्ट्रीय विकास एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली को प्रेषित की ।
3. बालिकाओं के नामांकन में वृद्धि अथवा कमी के कारणों का अध्ययन (सभी जि. शि. अ. को भेजी)
4. 28 दिवसीय सेवारत प्रशिक्षण शिविरों की प्रभावशीलता का अध्ययन (सभी जि. शि. अ. को भेजी ।)
5. नैतिक शिक्षा एवं जीवन मूल्य की पुस्तकों को राज्य के सभी जिला शिक्षाधिकारियों की भेजी गई ।
6. राज्य नवाचार विकास समूह के कार्यकारिणी की बैठक स्पेंश्यल सेकेट्री एजुकेशन राजस्थान सरकार जयपुर के कक्ष में श्रीमती आशासिंह की अध्यक्षता में दिनांक 29-11-89 को सम्पन्न हुई ।
7. श्री हरिशचन्द्र शर्मा प्रवक्ता ने फील्ड एक्सपीयरेन्स इन एलीमेन्ट्री एजुकेशन का प्रतिवेदन समेकित कर प्रस्तुत किया ।
8. मानव मूल्य पर लिखे गये पाठों की समीक्षा श्रीमती कमला जैन स. नि. द्वारा की गई ।
9. उदयपुर पी. ई. डी द्वारा मण्डल स्तरीय हस्तलिखित पत्रिकाओं का मूल्यांकन कार्य श्री वासुदेव शास्त्री अ. स., श्रीमती भुवनेश्वरी भटनागर व श्रीमती कमला जैन द्वारा किया गया।
10. हिन्दी निबन्ध एवं संस्कृत श्लोक पाठ प्रतियोगिता का राज्य स्तरीय आयोजन किया गया। तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय को पृथक पृथक पुरस्कार स्वरुप 250, 150, 100 रुपये दिये

गये ।

बागड़ी हिन्दी परियोजना

केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मानस गंगोत्री मैसूर द्वारा बागड़ी हिन्दी परियोजना की क्रियान्विति संस्थान के सहयोग से कर रहा है । इस परियोजना के अन्तर्गत प्रतिवेदित अवधि में कक्षा 2 के लिए बागड़ी हिन्दी प्रवेशिका को संशोधित कर अन्तिम रुप दिया गया । शब्द कोष का एवं बागड़ी में प्रौढ़ो के लिए निर्माण किया गया । इसके लिए संस्थान में तीस दिवसीय कार्यक्रम दिनांक 16 मई से 15 जून 89 तक आयोजित किया गया । जिसमें चयनित विद्यालयों के 42 शिक्षकों ने भाग लिया । उदयपुर बांसवाड़ा एवं डूंगरपुर के 6 विद्यालयों में दि. 28.9.89 से 9 अक्टूबर 89 तथा 2 मार्च 90 से 10 मार्च 90 तक मूल्यांकन कार्य सम्पन्न किया गया ।

प्रायोजना के अन्तर्गत हिन्दी में सहायक सामग्री निर्माण हेतु भारतीय भाषा संस्थान मैसूर में 14 दिस.89 से 2 जनवरी 90 तक एक कार्य गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान से श्रीमती भुवनेश्वरी भटनागर अनु. सहायक में भाग लिया ।

भारतीय भाषा संस्थान मैसूर के उपनिदेशक एवं संस्थान निदेशक की बैठक दि. 26, 27 सित. 89 को आयोजित हुई और उपलब्धियों की समीक्षा को गई ।

2- विज्ञान एवं गणित विभाग

इस विभाग में प्रमुखतः विज्ञान एवं गणित विषयों के उन्नयन हेतु कार्य किये जाते है । विज्ञान अनुभाग के अन्तर्गत तीन प्रकोष्ठ हैं - पहला प्राकेष्ठ प्राथमिक शिक्षा विज्ञान, जिसमें प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान विषय के प्रयोग-आधारित शिक्षण एवं शिक्षकों की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु कार्य किया जाता है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लागू होने के बाद यह विभाग विज्ञान सुधार योजना पर कार्य करता रहा है । माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों की प्रयोगशालाओं को समृद्ध करने और पुस्तकालयों के वर्तमान स्तर की सुधारने हेतु केन्द्रीय सहायता का लाभ पहुंचाने का प्रयास भी यह विभाग करता रहा है । इसी दृष्टि से संस्थान की तीनों प्रयोगशालाओं को संलग्न करते हुए माध्यमिक शिक्षा विज्ञान प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के केरिक्यूलम फ्रेम वर्क को देखें तो ज्ञात होगा कि प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक को कक्षाओं में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को एक स्वतंत्र विषय के रुप में स्थान दिया गया है । संस्थान में उसी दृष्टि से स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा प्रकोष्ठ की संरचना की गई है ।

इस विभाग के अन्तर्गत दूसरा अनुभाग है - गणित अनुभाग चूंकि जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में कम्प्यूटर शिक्षा की दृष्टि से प्रत्येक संस्थान को कम्प्यूटर उपलब्ध कराये गये हैं । उनके रख रखाव से लेकर संचालन की तकनीक का प्रशिक्षण देने की एवं माध्यमिक

स्तर तक गणित की प्रयोगशाला का निर्माण कर क्रिया-आधारित शिक्षण की व्यवस्था संयोजित की जा रही है ।

संस्थान के इस अनुभाग में मात्र एक प्रकोष्ठ गणित प्रयोगशाला एवं कम्प्यूटर शिक्षा प्रकोष्ठ है जो उक्त संकल्पना को गति देते हुए अपनी कार्य योजना की क्रियान्विति करता है ।

इस अनुभाग के अन्तर्गत जनसंख्या शिक्षा की प्रायोजना एवं न्हींस प्रायोजना की क्रियान्विति भी की जाती है । विद्यालय के शिक्षकों को जनसंख्या शिक्षा में प्रशिक्षण, पाठयक्रम व पाठ्यपुस्तकों में जनसंख्या शिक्षा का समावेश भी इस अनुभाग द्वारा किया जाता है । क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या शिक्षा पर क्विज प्रतियोगिताएँ भी इस अनुभाग द्वारा आयोजित की जाती है ।

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	अवधि	सम्भागियों की संख्या
1. प्रशिक्षण			
(a)	प्रतिभाखोज प्रशिक्षण शिविर (दो)	26.4.89 से 10.5.89 तक	(131) (जयपुर व उदयपुर)
(b)	प्रतिभाखोज साक्षात्कार प्रशिक्षण शिविर	13.7.89 से 17.7.89 तक	(93)
(c)	उ.प्रा.वि. में विज्ञान-गणित विषय पढ़ाने वाले अध्यापकों हेतु ग्रीष्मकालीन शिविर (चार)	24.5.89 से 20.6.89 तक	153
(d)	प्रयोगशाला सहायक प्रशिक्षण कार्यगोष्ठी	26.3.90 से 31.3.90 तक	(12)
(e)	उ.प्रा.वि. स्तर के अध्यापकों हेतु	12.3.90 से 17.3.90 तक	(11)
(1)	आंशुरचित उपकरण निर्माण कार्य गोष्ठी विज्ञान एवं गणित विषयों हेतु सन्दर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण कार्यगोष्ठी	2.5.89 से 4.5.89 तक	(18)
2. विकास			
(a)	उ.प्रा.स्तर गणित विषय के शिक्षण हेतु सहायक सामग्री का निर्माण (दो)	-	-
(b)	कक्षा 3 के छात्रों के लियें गणित विषय में इकाई परख प्रश्न तैयार करना	12.2.90 से 16.2.90 तक	7

(c)	विज्ञान शिक्षण सुधार योजनान्तर्गत उ.प्रा. स्तर अधिगम सामग्री निर्माण 2 कार्य गोष्ठियाँ	5.8.89 से 11.8.89	11+12 = (23) 8 सन्दर्भ व्यक्ति
(d)	कक्षा xi की गणित पाठ्य पुस्तक हेतु शिक्षण संदर्शिका को अन्तिम स्वरुप प्रदान करना ।	15.1.90 से 24.1.90	(15)

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	अवधि	सम्भागियों की संख्या
(e)	विज्ञान शिक्षण सुधार योजना उ.प्रा.विद्यालयों के अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु अधिराम सामग्री की समीक्षा कार्यगोष्ठी (विज्ञान विषय हेतु)	15.1.90 से 17.1.90 तक	(07)

3. प्रसार

(a)	जिला विज्ञान मेला	21.10.89 तक	(243) छात्र
(b)	राज्य स्तरीय विज्ञान मेला	8 जनवरी से 12 जन. 90 तक	(201) छात्र
(c)	उ.प्रा.वि. के विज्ञान अध्यापकों की जिला स्तरीय शिक्षण प्रतियोगिता	21.12.89 से पूर्व	15 जिलों में
(d)	राज्य स्तरीय	23.3.90 से 24.3.90 तक	(06)
(e)	राज्यस्तरीय विज्ञान सेमिनार	3.8.89	(15)
(f)	विडियो केसेट्स पुस्तकालय		(20) सत्र पर्यन्त 20 कैसेट्स क्रय की गई

4. अनुसंधान

(a)	विज्ञान क्लब किट की उपयोगिता का अध्ययन कर उपकरण का दत्त संकलन एवं विश्लेषण कार्यगोष्ठी	29.8.89 से 31.8.89 तक	17 (NCERT द्वारा)

विज्ञान गणित विभाग में कुल 22 कार्यक्रम सम्पादित हुए उनमें 844 संभागी लाभान्वित हुए ।

3- मनोवैज्ञानिक आधार एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग

व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम को राजस्थान राज्य द्वारा 1987-88 में स्वीकार किया गया। कतिपय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा के विषय आरंभ किये गये व्यावसायिक शिक्षा के लिये प्रशिक्षण एवं शैक्षिक कार्यो को आयोजित करने के लिये संस्थान में जनवरी 89 में व्यावसायिक शिक्षा विभाग में अधिकारियों एवं कर्मचारियों का पदस्थापन हुआ - एक विशिष्ट इकाई के रुप में केन्द्र प्रवर्तित इस योजना के लिये कार्य आरंभ हुआ । निर्धारित वित्तीय राशि राज्य सरकार से आवंटन नहीं हो पाने के उपरान्त भी इस विभाग द्वारा व्यावसायिक शिक्षा को एकरुपता एवं गतिशीलता प्रदान करने हेतु प्रयास किये हैं ।

प्रशिक्षण :-

1. मुख्य मार्गदर्शकों का अभिनव प्रशिक्षण

1.01 दिनांक 13.6.89 से 16.6.89 तक 4 दिवसीय कार्यक्रम ।
संभागी संख्या 211 स्थल पौद्दार रा.सी.उ.मा.वि. जयपुर

1. मण्डल स्तर पर कार्यरत अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी व्यावसायिक शिक्षा एवं उनके साथ कार्यरत उप जिला शिक्षा अधिकारी एवं दो अनुसंधान सहायक ।

2. व्यावसायिक शिक्षा विभाग - 3 संस्थान में कार्यरत अधिकारी मुख्य मार्गदर्शक एवं संदर्भ व्यक्ति :
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली के शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग के अधिकारी ।
इस प्रशिक्षण में निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की सहभागिता रही । व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा उद्देश्य एवं क्रियान्विति के चरणों का व्यावहारिक विश्लेषण हुआ ।

" व्यावसायिक सर्वे प्रशिक्षण "

1.02 दिनांक 23.10.89 से 27.10.89 तक 5 दिवसीय कार्यक्रम
स्थल :- रमणसभागार - संस्थान , उदयपुर
संभागी - संख्या - 21
पांचों मण्डल - जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा एवं उदयपुर में कार्यरत अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी/उप जिला शिक्षा अधिकारी एवं दो अनुसंधान सहायक ।

(2) व्यावसायिक शिक्षा विभाग -3 संस्थान में कार्यरत अधिकारी ।

मुख्य मार्गदर्शक -

1. डा. एम.सेन. गुप्ता 2. डॉ. डी.के.वैद्य, प्रवाचक शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली ।

उपयोगिता - विद्यालयों के लिये व्यावसायिक शिक्षा के लिये विषय चयन करने के लिये उस क्षेत्र के व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में उपलब्ध रोजगार के अवसरों एवं स्थानीय आवश्यकता एवं उपलब्ध साधन सुविधाओं के अनुसार स्वरोजगार के अवसरों की जानकारी लेने हेतु व्यावसायिक शिक्षा सर्वे की विभिन्न प्रक्रियाओं की जानकारी दी गई ।

प्रत्येक अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी व्यावसायिक शिक्षा की अपने मण्डल के एक जिले का सर्वे करने हेतु समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर संस्थान द्वारा दिया गया ।

" हेण्ड बुक फार वोकेशनल सर्वे वर्कस " पुस्तिका के आधार पर सर्वे के लिये हिन्दी के प्रपत्र तैयार कर उपलब्ध करवाये गये ।

1.03 उपप्रधानाचार्य व्यावसायिक शिक्षा सी.उ.मा.वि. व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्य गोष्ठी :-

(दो चरणों में)

प्रथम दिनांक 11.12.89 से 13.12.89 तक त्रिदिवसीय

स्थल :- गांधी सभागार संस्थान

संभागी संख्या - 36 (बीकानेर,जोधपुर मण्डल एवं अलवर अजमेर जिले के विद्यालयों के उप प्रधानाचार्य व्या.शि.)

1.04 द्वितीय दिनांक 18.12.89 से 20.12.89 तक त्रिदिवसीय संभागी संख्या 47 (उदयपुर,कोटा मण्डल एवं जयपुर भरतपुर जिले के विद्यालयों के उपप्रधानाचार्य व्या.शि.)

संदर्भ व्यक्ति - पूर्व प्रशिक्षित मुख्य मार्गदर्शक एवं संस्थान के प्रशिक्षित अधिकारी ।

उपयोगिता - व्यावसायिक शिक्षा के विषयों के अध्यापन हेतु व्यावस्था कैसे की जाये, अध्यापन कार्य निराक्षण करे - छात्र-छात्राओं की विषय रुचि की जानकारी कैसे की जाय आदि बातों के साथ व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश्य ,अवधारणा व क्रियान्विति के चरणों की जानकारी दी गई । प्रश्नावली व प्रपत्र तैयार किये गये ।

2. विकास :-

व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित ग्यारह प्रकार के चार्ट्स तैयार कर इनकी स्क्रीन प्रिन्टिंग " 2,200 प्रतियां सी.उ.मा.वि. व्या.शि. को भेजी गई ताकि व्या.शिक्षा का प्रचार प्रसार हो सके ।

3. प्रकाशन एवं प्रसार -

- व्यावसायिक सर्वे कार्य में मार्गदर्शन हेतु -
"ए हेन्ड बुक फार वोकेशनल सर्वे वर्करस"

3.001 पुस्तक जो शिक्षा व्यादसायीकरण विभाग राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित के आधार पर सर्वे कार्य प्रपत्रों का हिन्दी अनुवाद तैयार कर फोटोस्टेट प्रतियां अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी व्या. शि. को भेजी गई ।

3.02 सर्वेकार्य हेतु - जनवरी से अप्रेल 90 तक एक जिले का सर्वे करने हेतु समयबद्ध कार्यक्रम दिया गया जिससे सर्वे के विभिन्न चरणों के कार्य को विधिवत पूरा किया जा सके । यह कार्य भी अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी व्या. शि. को करना था ।

3.03 मनोवैज्ञानिक आधार पर व्यावसायिक शिक्षा विभाग "व्यावसायिक शिक्षा के क्रियाकलाप पर एक विहंगम दृष्टि सत्र 89-90" शीर्षक फोल्डर्स तैयार कर चार हजार प्रतियां छपवाई गई । यह फोल्डर्स प्रत्येक उ. मा. वि. को व्यावसायिक शिक्षा के प्रचार हेतु प्रेषित किये गये ।

3.04 आवश्यक सूचियाँ : उपप्रधानाचार्य व्या. शि. के मार्गदर्शनार्थ व्या. शि. शिक्षण एवं व्यवस्था हेतु आवश्यक उपकरणों , सामान एवं पुस्तकों का सूचियाँ शिक्षा व्यावसायिकरण विभाग राष्ट्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण पिरषद नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित " मिनिमम वोकेशनल कोम्पीटेन्सीज बेस क्यूरीकूलम" विभिन्न विषयों से संकलित कर चक्रांकन प्रतियाँ भेजी गई ।

4. अनुसंधान :-

व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत शिक्षाकर्मियों की रुचियों का अध्ययन प्रश्नावली का विकास कर व्यावसायिक शिक्षा की कक्षा - 11वीं में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की रुचि का अध्ययन किया जाकर दत्त विश्लेषण का कार्य किया जा रहा है ।

4. प्रोजेक्ट टीम (सीकर हाउस जयपुर)

कार्यालय उप प्रायोजना अधिकारी शिक्षा विभाग सीकर हाउस जयपुर में कार्यरत प्रोजेक्ट टीम के सदस्य ये हैं

श्री पी. सी. छबड़ा (उप प्रायोजना अधिकारी) स्थानान्तरित डा. रामनारायण अटोलिया (अनुसंधान अधि.) श्री मीना झा - वरिष्ठ अध्यापक श्री राशीद अली कनि. लिपिक श्री ओमप्रकाश चतुर्थ श्रेणी कर्म. श्री जगतसिंह ड्राइवर R. R. G. 883

प्रोजेक्ट टीम ग्रीष्मावकाश में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (कार्यानुभव) के अन्तर्गत विद्युत प्रवृतियों में 28 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करती है । प्रत्येक 28 दिवसीय शिक्षिक प्रशिक्षण हेतु स्वीकृत बजट 10290/- हैं । इसके अलावा स्कूटर रिपेयरिंग

का आठ दिवसीय कार्यक्रम - विद्युत सम्बन्धी पार्ट प्रथम एवं सिलाई पाठ्यक्रम पार्ट प्रथम के दस दिवसीय शिविर (लघु अवधि) आयोजित करने का प्रावधान हैं ।

इन लघु अवधि के शिविरों में छात्रों को प्रशिक्षित करने का कार्यक्रम प्रस्तावित है । समाजोपयोगी उत्पादन कार्य के अन्तर्गत आयोजित शिविरों में व्यावहारिक कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है ।

उल्लेखनीय है कि टीम के द्वारा प्रस्तावित इन कार्यक्रमों की स्वीकृति राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान की अनुशंसा पर ही निदेशालय बीकानेर से प्राप्त होती है । यह टीम संस्थान के अधीन ही अपने कार्यक्रमों को गति देती है ।

4- शिक्षक शिक्षा विभाग

शिक्षक प्रशिक्षण एवं पत्राचार प्रभाग के नाम से जाने जानेवाला इस स्वतंत्र प्रभाग में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत सेवापूर्व शिक्षकों के प्रशिक्षण के साथ सेवारत शिक्षकों के अभिनवन की संकल्पना को भी महत्ता दी हैं । सभी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम जो मानव संसाधन विकास हेतु आयोजित किये गये है उनकी कार्ययोजनाओं की निर्मिति एवं क्रियान्विति का दायित्व इस विभाग का हैं ।

इस विभाग के अन्तर्गत दो अनुभाग हैं - एक सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा अनुभाग एवं दूसरा सेवारत शिक्षक शिक्षा अनुभाग ।

सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा प्रकोष्ठ विभिन्न सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रमों के विकास को कार्य के साथ मानव संसाधन विकास हेतु अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी करता है ।

राज्य में "सीडा" के आर्थिक सहयोग से शिक्षाकर्मी योजना की क्रियान्विति की जा रही है। इस योजना की सफल क्रियान्विति हेतु सेवापूर्व प्रशिक्षण के लिए शिक्षाकर्मीयोजना प्रकोष्ठ की संरचना की है , जो इस योजना की कार्य-योजना की गति प्रदान करता है ।

इस अनुभाग का तीसरा प्रकोष्ठ-पत्राचार प्रकोष्ठ अब तक सेवापूर्व शिक्षकों के द्वितीय वर्ष शिक्षक प्रशिक्षण के शिक्षकों हेतु पत्राचार पाठ्यक्रम की क्रियान्विति करता रहा हैं । इस कार्यक्रम को आवश्यकता अनुरुप विकास विभाग के अप्रशिक्षित शिक्षकों के पत्राचार (पाठ्यक्रम द्वारा) शिक्षा देने की एक योजना राज्य सरकार के विचाराधीन हैं । स्वीकृति प्राप्त होने पर यह प्रकोष्ठ प्रभावी होगा । वर्तमान में इस प्रकोष्ठ द्वारा पत्राचार द्वितीय वर्ष का कार्य सम्पादन किया जा रहा है । सेवारत शिक्षक शिक्षा अनुभाग के अन्तर्गत सेवारत शिक्षक शिक्षा प्रकोष्ठ की संरचना को गई हैं । राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत राष्ट्रीय व्यापक शिक्षक अभिनवन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अब इस प्रकोष्ठ द्वारा सम्पादित किया जाता है । सेवारत शिक्षकों के विभिन्न प्रशिक्षण अभिनवन कार्यक्रमों का आयोजन-नियोजन भी वहीं प्रकोष्ठ करता है ।

राज्य में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना के बाद लिंक के रुप में कार्य

करने वाला प्रकोष्ठ शिक्षक प्रकोष्ठ होगा । यह प्रकोष्ठ इन संस्थानों के लिए संदर्भ व्यक्ति भी तैयार करेगा ।

प्रशिक्षण

सेवारत 28 दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर प्रतिवेदित अवधि में निम्नांकित आयोजित किए गए।

कार्यक्रम	तिथियाँ	संभागी
उर्दू (केन्यून में)	1-6-89 से 28-6-89	31
सिंधी (अजमेर में)	25-5-89 से 21-6-89	50
विज्ञान गणित	24-5-89 से 20-6-89	153
(कोटा,धौलपुर,जयपुर,उदयपुर)		
अंग्रेजी (3) जालौर	25-5-89 से 21-6-89	49
भरतपुर		47
पाली	11-12-89 से 7-1-90	35
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण	6-11-89 से 8-11-89	17
संस्थानों के प्रधानाचार्यों की बैठक		
कुल 10 कार्यक्रम		378

शिक्षाकर्मी प्रायोजना

परिचय :- सार्वजनीन प्राथमिक शिक्षा के संकल्प की पूर्ति में बाधक अनेक कारणों में से एक कारण अध्यापक की अनियमितता भी है । दुर्गम-दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों तथा पहाड़ी एवं रेगिस्तानी स्थलों पर स्थित विद्यालय अध्याक की अनियमितता के कारण सत्र के अधिकांश समय बंद पड़े रहते हैं जिसके कारण अध्यापन स्तर की गिरावट के साथ-साथ कम नामांकन तथा अधूरी प्रा. शिक्षा छोड़कर जाने वाले छात्र/छात्राओं की संख्या बढ़ती जा रहीं हैं । ऐसे विद्यालयों की सतस्या निवारण हेतु "समाज सेवा एवं अनुसंधान केन्द्र तिलोनिया (अजमेर)" ने एक अभिनव योजना 1984 में तैयार की जो अब "शिक्षाकर्मी प्रायोजना" के नाम से चलाई जा रहीं हैं ।

यह प्रायोजना जुलाई 1987 में भारत सरकार ,राजस्थान सरकार द्वारा स्विडिश इंटरनेशनल डवलपमेंट अथॉरिटि (सीडा) के संयुक्त प्रयास से राजस्थान में 6 साल के लिए आरंभ की गयी ।

इस प्रायोजना के अन्तर्गत ऐसे समस्या प्रधान विद्यालयों में स्थानीय शिक्षित (युवक,आठवीं पास तथा युवती पांचवीं पास) की कक्षा पांच तक पढ़ाने के लिए लिया जाता हैं और उसे पूर्ण प्रशिक्षण दे कर कक्षा 1 से 5 तक का पाठ्यक्रम पढ़ाकर पढ़ाने योग्य बना दिया जाता है । ये शिक्षक शिक्षाकर्मी के नाम से जाने जाते हैं ।

प्रगति :- वर्तमान में यह प्रायोजना राजस्थान के 11 जिलों की 15 पंचायत समितियों में चल रही हैं । 225 दिवस केन्द्र तथा 323 रात्रि केन्द्रों में कुल 458 शिक्षाकर्मी कार्यरत हैं । दिवस केन्द्रों में 7654 छात्र और 2093 छात्राऐ तथा रात्रि केन्द्रों में 2657 छात्र और 2385 छात्राऐं अध्ययनरत हैं ।

5. शैक्षिक आयोजना एवं प्रशासन विभाग -

"सीपा" के गठन की बात राज्य सरकार के विचाराधीन हैं । जब तक "सीपा" का गठन नहीं हो जाता , तब तक इस विभाग द्वारा शैक्षिक आयोजना एवं प्रबंध का कार्य सम्पन्न किया जावेगा । इस विभाग की कार्य प्रणाली को देखकर सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह विभाग आयोजना एवं प्रबंध पक्ष की रीढ़ हैं । इस विभाग के तीन अनुभाग है पहला अनुभाग हैं - शैक्षिक आयोजना । इसके अन्तर्गत संस्थागत आयोजना ,सूक्ष्म आयोजना, जिला योजना एवं राज्य योजना का कार्य सम्पन्न होता हैं । शैक्षिक प्रबंधन की दृष्टि से शैक्षिक प्रबंध सूचना प्रणाली एवं दत्त संसाधन शैक्षिक वित्त, संस्थान के कार्यक्रमों का समन्वयन एवं प्रसार इस अनुभाग द्वारा किया जाता हैं ।

इसके कार्य संपादन हेतु चार प्रकोष्ठों की संरचना की गई हैं - शैक्षिक आयोजना प्रकोष्ठ,शैक्षिक वित्त प्रकोष्ठ ,शैक्षिक प्रबंध सूचना प्रणाली एवं दत्त संसाधन एवं समन्वय एवं कार्यक्रम प्रकोष्ठ ।

दूसरा अनुभाग शैक्षिक प्रशासन अनुभाग है । शैक्षिक प्रशासन के अन्तर्गत शैक्षिक परिवीक्षण, संस्थागत मूल्यांकन, शैक्षिक प्रशासन प्रणाली का स्वरुप, प्रधानाध्यापक वाक्पीठ विद्यालय संगम, शैक्षिक अधिकारियों का अभिनवन कार्यक्रम, जिसमें शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारियों,एस.डी.आई. एवं ई.ई.ओ.,वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारियों प्रधानाध्यापक (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों) का प्रारंभिक एवं अभिनवन कार्यक्रम सम्मिलित है - का आयोजन हो रहा हैं ।

संस्थान के विभागों का सुदृढ़ीकरण एवं उन्नयन कार्यक्रम - यहीं अनुभाग संपन्न करेगा, जिसके अन्तर्गत निम्नांकित कार्यक्रम हैं :-

राज्य स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय शैक्षिक नीतियों का क्रियान्वयन नामांकन एवं ठहराव , शिक्षा में - समुदाय सहभागिता, सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑफ एजूकेशन, राज्य परामर्शदात्री समिति, जिला शिक्षा बोर्ड एवं ग्राम शिक्षा समिति की संरचना और उनकी सहभागिता के लिए आयोजना की निर्मिति एवं प्रबन्धन, शिक्षण कार्य मूल्यांकन ।

अन्य राज्यों एवं एन.सी.ई.आर.टी. से सम्पर्क आदि ।

इस अनुभाग के अन्तर्गत - 3 प्रकोष्ठों की संरचना की गई है - (1) शैक्षिक प्रशासन प्रकोष्ठ (2) शैक्षिक प्रशासन - प्रशिक्षण प्रकोष्ठ (3) शिक्षा नीति एवं कार्यक्रम प्रकोष्ठ ।

तीसरा अनुभाग सामान्य प्रशासन एवं लेखा का हैं जिसके अन्तर्गत संस्थापन एवं व्यक्तिगत प्रबंध लेखा एवं सामान्य प्रशासन लाइब्रेरी, स्टेडिंग कमेटी (संस्थान की) सामान्य प्रबोधन का कार्य किया जाता हैं ।

उक्त कार्य सम्पादन की दृष्टि से इस अनुभाग के 3 प्रकोष्ठ हैं - (1) संस्थापन प्रकोष्ठ (2) लेखा प्रकोष्ठ एवं (3) पुस्तकालय प्रकोष्ठ

इसके अलावा यह विभाग जिला मेपिंग एवं सूक्ष्म आयोजना के प्रोजेक्ट पर भी कार्य करेगा ।

शैक्षिक प्रशासन एवं प्रशिक्षण विभाग - 5

वर्ष 89-90 में संपादित कार्यों का संक्षिप्त विवरण

विभाग 5 प्रकोष्ठ 6 द्वारा वर्ष 1989-90 में संपादित कार्यो का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है ।

(1) मंत्रालयिक कर्मचारी प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रथम)

दिनांक 11512-89 से 22-12-89

प्रशासनिक प्रक्रिया में लगे इस वर्ग को पूर्णतः अद्यतन एवं जागरुक रखने के लिए नवीन नियमों, कार्य पद्धतियों, विकास कार्यक्रमों एवं विभागीय रीति नीति के बारे में जानकारी कराने बाबत् एक प्रशिक्षण 11-22 दिसम्बर 89 को हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशासन संस्थान जयपुर के सौजन्य से आयोजित किया गया ।

इस प्रशिक्षण में संस्थान के शिक्षा विभाग कार्यालय एवं विद्यालयों के कुल 36 संभागियों ने भाग लिया। प्रस्तावित कार्यक्रम के लिए प्रतिदिन 4 कालांशों की व्यवस्था की गई। एक वार्ताकार ने 1.30 घंटा अपनी वार्ता दी । इसके अलावा पैनल चर्चा, प्रश्नोत्तर प्रायोगिक कार्य एवं टेस्ट का भी आयोजन किया गया ।

(2) मंत्रालयिक कर्मचारी प्रशिक्षण कार्यक्रम (द्वितीय)

दिनांक 12 से 26 मार्च 90

मंत्रालयी कर्मचारियों का द्वितीय प्रशिक्षण भी हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशासन संस्थान मालवीय नगर जयपुर के सौजन्य से दिनांक 12 से 26 मार्च 90 को आयोजित किया गया । इस प्रशिक्षण में भी शिक्षा विभागीय कार्यालयों विद्यालयों एवं संस्थान से कुल 36 कनिष्ठ एवं वरिष्ठ लिपिकों ने भाग लिया । वार्ता के विषय एवं समय की व्यवस्था प्रथम प्रशिक्षण के समान ही रही ।

इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों से मूल्यांकन प्रपत्र भरवाया गया जिसका सारांश यह रहा है कि ऐसे प्रशिक्षण की समयावधि बढाई जानी चाहिए तथा प्रायोगिक कार्य की अधिकता रहनी चाहिए ।

दोनों ही प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों को वार्ताओं का सारांश व संदर्भ सामग्री उपलब्ध करवाई गई । हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशासन संस्थान जयपुर से प्राप्त पुस्तक "वित्त एवं लेखा नियमावली" सभी संभागियों को उपलब्ध कराई गई ।

6(3) प्रधानाध्यापक (माध्यमिक विद्यालय) प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 26.12.89 से 9.1.90 तक

प्रधानाध्यापक विद्यालय प्रशासन की धुरी है एक प्रधानाध्यापक के रुप में उसकी प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ बहुमुखी है एक प्रधानाध्यापक अपने कार्यो को योग्यता के साथ पूर्ण सफलता से निभा सके इस दृष्टिकोण से विभाग की रीति नीति के अनुसार संस्थान उदयपुर

द्वारा एक प्रशिक्षण कार्यक्रम दि. 26 दिसम्बर 89 से 9 जनवरी 90 तक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में प्रतिदिन 5 कालाशों की व्यवस्था थी । प्रथम एवं द्वितीय कालांश डेढ घंटे का व मध्यान्तर पश्चात् ब्लक - एक घंटे के तीन कालंशों की व्यवस्था की गई सम्पूर्ण पाठयक्रम को दो भागों में बांटा गया ।

(1) सैद्धान्तिक पक्ष (2) क्रियात्मक पक्ष

सैद्धान्तिक पक्ष में प्रधानाध्यापक की भूमिका-जिसमें प्रधानाध्यापक प्रशासक के रुप में, प्रधानाध्यापक शैक्षिक रुप में एवं प्रध्यानाध्यापक प्रबन्ध के रुप में । योजना निर्माण कार्य करवाया गया ।

इस प्रशिक्षण में विभाग द्वारा कुल 60 प्रधानाध्यापकों की प्रतिनियुक्ति की गई जिसमें से 25 प्रधानाध्यापकों में प्रशिक्षण में भाग लिया ।

कुल 65 कलांक्षा की व्यवस्था की गई । प्रत्येक संभागियों से प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन करवाया गया जिसमें निम्नलिखित सुझाव प्राप्त हुए ।

(1)क्रियात्मक दृष्टि से समस्या को समझने के लिए क्षेत्र में ले जाकर वास्तविक रुप से कार्य का अवसर दिया जावे ।

(2)वार्ताकार हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करे ।

(3)समयावधि (प्रशिक्षण के दिनों की संख्या) बढाई जावें ।

(4)जिला शिक्षा योजना पाठ्यक्रम निर्माण एवं समीक्षा

दिनांक 5-9मार्च 1990

जिला योजना निर्माणकर्ता प्रशिक्षण पठयक्रम की योजना की समीक्षा हेतु एक कार्यक्रम उक्त अवधि में रखा गया । समीक्षाकर्ता ने पूरी योजना का अध्ययन किया एवं उसकी समीक्षा की । इस कार्य हेतु निम्न संदर्भ व्यक्तियों में अपना सहयोग प्रदान किया ।

1. श्री गिरिराजगिरी गोस्वामी प्रधानाचार्य गंगापुर (भीलवाड़ा)
2. श्री सत्य निवास आचार्य प्रधानाचार्य ब्यावर (अजमेर)
3. श्री लक्ष्मी नारायण जोशी प्रधानाचार्य ऋषभदेव (उदयपुर)
4. श्री राधेश्याम मेहता प्रधानाचार्य घासा (उदयपुर)

उक्त अधिकारियों ने कुल 21 छात्र/छात्रा संस्थाओं से जिला शिक्षा योजनाओं को प्राप्त करके उसकी समीक्षा की । सार संक्षेप में इनसे निम्न सुझाव प्राप्त हुए है ।

विभाग द्वारा सन् 1972 में जिला शिक्षा योजना निर्माण हेतु विस्तृत निर्देश प्रदान किये गये थे किन्तु वे बहुत पुराने हो गये हैं तथा कई जिला शिक्षा अधिकारियों के कार्यालय में उपलब्ध नहीं होंगे । सन् 1972 से अब ब्लक विशेषतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के संदर्भ में कई परिवर्तन हुए और कई नये आयाम जुडे हैं अतः जिला शिक्षा योजना सम्बन्धी समस्त सामग्री का गहन अध्ययन कर एक मार्गदर्शिका तैयार की जानी चाहिए जिसमें जिला शिक्षा योजना में दी जाने वाली आवश्यक सारणियों व कार्यक्रमों की सूची के अतिरिक्त योजना निर्माण व मूल्यांकन के प्रारुप भी सम्मिलित हैं ।

विभिन्न अनुभागों से प्रबोधन के कुल 519 पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 494 पत्रों का निस्तारण किया गया और 20 पत्र शेष रहे । एक पत्र का अंतरिम उत्तर दिया गया एवं प्रपत्र प्रकियाधीन है ।

8. 1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 86 के बिन्दुओं व क्रियान्विति व उपलब्धियों की रिपोर्ट अक्टूबर से मार्च 90 तक निदेशक व शिक्षा सचिव की प्रेषित की ।

2. नामाकंन अभियान एवं ठहराव की उपलब्धियों को सभी जिला शिक्षा अधिकारियों से एकत्रित की गई ।

3. सिरोही जिले के नामाकंन अभियान संबधी प्राप्त त्रैमासिकी रिपोर्ट अक्टूबर से मार्च तक की तैयार की गई।

4. शिक्षा में स्थानीय समुदायों के योगदान के अन्तर्गत ग्राम शिक्षा समिति के गठन उसकी उपलब्धियों बाबत् सभी जिला शिक्षा अधिकारियों लिखा गया एवं ग्राम शिक्षा समिति की उपलब्धियों की समेकित किया गया।

6. शैक्षिक प्राद्योगिकी विभाग

शिक्षा की कोटि में सुधार के लिए प्राद्योगिकी साधनों के प्रयोग के लिए कई प्रयत्न किये गये है शैक्षिक फिल्मों और प्रोजेक्शन । गैर प्रोजेक्शन उपकरणों के प्रयोग की प्रोन्नति के लिए केन्द्र और राज्यों में श्रव्य दृश्य एक को तथा टेलीविजन एवं अन्य शैक्षिक माध्यमों के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए इस विभाग की स्थापना की गई थी । जिससे रेडियो, टेलीविजन तथा कम्प्यूटर आदि शैक्षिक प्रोद्योगिकी कार्यक्रमों के संबंध में विद्यालयों में जागरुकता उत्पन्न हो । छात्र छात्राओं के राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने की दृष्टि से यह कार्यक्रम शालाओं में आयोजित हो सके । कार्यक्रमों के संचालन से संबंधित रेडियों संबंधित सूचना संकलन तथा इसके निर्माण हेतु आलेख लेखन प्रशिक्षण कार्य यह विभाग करता रहा है । इन कार्यो के अतिरिक्त कम्प्यूटर शिक्षा (क्लास प्रोजेक्ट) तथा नवोदय विद्यालयों का दायित्व इस विभाग के पास है । इन क्षेत्रों में भारत सरकार के बीच समन्वयात्मक कार्य के अतिरिक्त यह विभाग विद्यालयों के लिए सम्पर्क सूत्र रहा है जो कम्प्यूटर शिक्षा में कार्यरत अध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करता है ।

(1) विकास

(1) कम्प्यूटर शिक्षा :- सत्र 1988-89 तक राज्य के 91 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में (केन्द्रीय विद्यालय भी सम्मिलित है) कम्प्यूटर शिक्षा उपलब्ध थी । सत्र 89-90 में 17 विद्यालय भारत सरकार द्वारा कम्प्यूटर शिक्षा हेतु चयनित किये गये । इस सत्र में 70 विद्यालयों में 2,45,000 रुपयें अनुदान के रुप में इस विभाग द्वारा वितरित किये गये । लेकिन संदर्भ केन्द्रों द्वारा सत्र 89-90 में 17 विद्यालयों में कम्प्यूटर स्थापना के प्रबन्ध की सूचना न मिल पाने के कारण इन शालाओं कको अनुदान राशि वितरित नहीं की जा सकी । कम्प्यूटर विद्यालयों में बजट आवंटन, मानीटरिंग व अध्यापकों के प्रशिक्षण संबंधी व्यवस्था इस विभाग द्वारा की जाती है ।

(2) नवोदय विद्यालय :- सत्र 89-90 में 7 जिलों में नवोदय विद्यालय खोले जाने प्रस्तावित थे तथा इसमें गत सत्र में 20 नवोदय विद्यालय स्थापित किये जा चुके हैं । अतः इन विद्यालयों के चयन, संचालन व समस्या समाधान संबंधी समन्वय कार्य यह विभाग करता हैं ।

(3) शैक्षिक उपकरणों का वितरण :- राष्ट्रीय शिक्षा नीति योजना के क्रियान्वनयन के अन्तर्गत राज्य के 1100 उच्च प्राथमिक विद्यालय और 10,000 प्रायमिक विद्यालय में क्रमशः दूरदर्शन यंत्र व टूइन वन उपलब्ध कराने हेतु भारत सरकार से एक करोड़ तेरह लाख तरेसठ हजार रुपये का अनुदान स्वीकृत हुआ था ।

पंचायती

लेकिन अब यह राशि पंचायती राज एवं विकास विभाग की स्थानान्तरित की गई हैं ।

प्रशिक्षण :- सत्र 89 में एक आलेख शिविरों दिनांक 18-23 सितम्बर तक जयपुर में आयोजित किया गया जिसमें आकाशवाणी के सहयोग से रेडियों आलेख संदर्भ व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया । कम्प्यूटर शिक्षा के संचालन हेतु भी अध्यापकों को प्रशिक्षण हेतु संदर्भ केन्द्रों के लिए भेजा गया ।

पाठ्यक्रम निर्माण :- एस.टी.सी. के लिए इस विभाग द्वारा नये शैक्षिक प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम की रुपरेखा बनाकर संस्थान को प्रस्तुत की गई । जो इस वर्ष से एस.टीसी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर दी गई है ।

प्रसार एवं प्रकाशन :- शैक्षिक प्रौद्योगिकी के द्वारा टेलीविजन एवं रेडियों पर उपयोगी एवं लाभदायक वार्ताऐं तथा उनके महत्व एवं रख रखाव कें बारे में पाडुलिपियॉं अवलोकनार्थ संस्थान की भेजी गई जिनका भविष्य में प्रकाशन करवाया जायेगा ।

विभाग का स्थानान्तरण :- राज्य सरकार क आदेश क्रमांक प-5 (1) शि. 2189 जयपुर दिनांक 25-9-89 के द्वारा राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग, जयपुर के अजमेर में स्थानान्तरित आदेश प्राप्त हुए । फलतः इस विभाग को समस्त उपकरण, फाइल फर्नीचर आदि की व्यवस्था कर अजमेर में स्थानान्तरण करने की तैयारी करनी पड़ी तथा विभाग का सामान विभिन्न स्तरों पर अजमेर स्थानान्तरित होता रहा व वि. 5-2-90 से यह विभाग पूर्णतया श्रव्य दृश्य शिक्षा परिसर में स्थाई रुप से कार्य करने लगा है ।

अन्य कार्य :- प्रभाग कें अधिकारियों द्वारा समय समय पर कम्प्यूटर केन्द्रों का अवलोकन एवं नवोदय विद्यालयों का आकस्मिक निरीक्षण किया गया ।

श्रव्य दृश्य शिक्षा द्वारा 6 कार्यक्रम (प्रशिक्षण) के आयोजित हुए । जिसमें 157 लाभान्वित हुए । फिल्म लायब्रेरी की तकनीकी में कुल 21 प्रचालक प्रशिक्षित किए गए एवं प्रतिवेदित अवधि में.695 फिल्में प्रदर्शित की गई जिनसे 6,95,100 छात्र - छात्राएं लाभान्वित हुए । 505 फिल्में संस्थाओं के उपयोगार्थ प्रेषित की गई ।

वर्ष 89-90 से सम्पादित कार्यक्रम

क्र. सं.	प्रशिक्षण/शिविर	स्थल	अवधि	सम्भागी संख्या	सामग्री निर्माण	उपलब्धियाँ	प्रसार
1.	श्रव्य दृश्य शिक्षण निर्देशन शिविर क्षेत्र जोधपुर क्षेत्र के उ.प्रा. वि. के सेवारत अध्यापकों हेतु ।	राज. माध्यमिक विद्यालय सिवांची गेट नाई की बगीची चौपासनी रोड़ जोधपुर	दिनांक 26-9-89 से 29-9-89	(34)	निम्नलिखित विषयो पर शिक्षण सामग्री निर्माण किया गया। गणित - 4 सा.ज्ञान - 8 सा. विज्ञान - 14 भूगोल - 7 उपरोक्त सामग्री फ्लेश कार्ड एवं चार्ट से सम्बधित बने ।	श्रव्य शिक्षण सामग्री का सही उपयोग कैसे किया जावे, रंगों का सही उपयोग एक रेखीय चित्र का उपयोग मॉडल निर्माण की प्रक्रिया बोर्ड का (श्यामपट्ट) का ही उपयोग आदि को समझाया गया। शैक्षिणिक फिल्मों का प्रदर्शन भी किया गया ।	
2.	श्रव्य दृश्य शिक्षण निर्देशन शिविर अलवर क्षेत्र की उ.प्रा.वि. की सेवारात अध्यापिकाओं हेतु	राज. बालिका उ.प्रा.वि. नया बास अलवर	दिनांक 18.10.89 से 21.10.90	(30)	विषयों के आधार पर समूह विभाजन कर सा.	श्रव्य दृश्य शिक्षण साधनों द्वारा शिक्षण को प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है, फलालेन ग्राफ द्वारा ,	
3.	अनौपचारिक प्रौढ शिक्षण निर्देशन शिविर (अजमेर क्षेत्र की अनुदेशिकाओं हेतु)	श्रृव्य दृष्य शिक्षण विभाग अजमेर	दिनांक 23.10.89 से 28.10.89	(28)	ज्ञान,सा.विज्ञान, भूगोल गणित आदि के चार्ट बनाने बने एवं बनी हुई शिक्षण सामग्री का वितरण सम्भागियों की कर दिया गया।	ग्राफ द्वारा, चाक बोर्ड द्वारा,एक रेखीय चित्र द्वारा द्विआयामी साधनों द्वारा शिक्षण को प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है । सम्बन्धित वार्ताओं की फिल्में दिखलाई ।	
					अजमेर क्षेत्र में चल रहे अनौपचारिक केन्द्रों की अनुदेशिकाओं से प्राय एवं उ.प्राय स्तर की शिक्षण सामग्री का निर्माण कराया गया व दृश्य साधनों के सही उपयोग के बारे में जानकारी दी ।	अनौपचारिक शिक्षण केन्द्रो में अनुदेशिका। दृश्य सामग्री द्वारा शिक्षण को सही रुप कैसे दे सकती है तथा श्यामपट्ट का सही उपयोग कैसे किया जाता है चित्र की बनाने में क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए आदि, के बारे में जानकारी होगी ।	

क्र.सं.	प्रशिक्षण/शिविर	स्थल	अवधि	सम्भागी संख्या	सामग्री निर्माण	उपलब्धियाँ	प्रसार
4	रेशम पटट्रण प्रशिक्षण शिविर। वृहत् उत्पादन कार्य-गोष्ठी (सिल्क सक्रीन)	श्रृव्य दृष्य शिक्षा कार्यालय अजमेर	दिनांक 11-12-89 से 19-12-89	(16)	कक्षा VI से कक्षा VIII तक विषय से सम्बन्धित चित्रों के नेगेटिव बनवाये गये तथा प्रत्येक नेगेटिव की सहयता से वृहत उत्पादन किया गया । निम्न विषयों के नेगेटिव बनाये गये। (1) राजस्थान का मानचित्र मय जिले (2) इन्दिरा गांधी नहर (3) Articals का उपयोग (4) शब्द शक्ति की परिभाषा (5) SUPW का चार्ट	रेशम पर मुद्रण की कार्य प्रणाली को समझा इसका व्यावसायिक रुप क्या है की जानकारी प्राप्त की। कौशलात्मक विकास वृहत् उत्पादन कैसे किया जाता है तथा इस विधि का शिक्षा में उपयोग कैसे लिया जाता है। रेशम पर मुद्रण से सम्बधित फिल्म भी दिखाना।	
5.	श्रव्य दृश्य शिक्षण निर्देशन शिविर बीकानेर की उ.प्रा.वि. की सेवारत अध्यापिकाओं हेतु	राजकीय बालिका सीनियर उ.मा विद्यालय दयानंद मार्ग बीकानेर	दिनांक 9.1.90 से 12.1.90	(24)			
6.	अनौपचारिक शिक्षण निदेशन शिविर (अजमेर क्षैत्र की अनुदेशिकाओं हेतु)	श्रृव्य दृश्य शिक्षा विभाग अजमेर	दिनांक 12.2.90 से 17.2.90	(25)	निम्न चार्ट एव फलालेन पाठ का निर्माण किया गया सामा. ज्ञान - 10 गणित - 3 भुगोल - 5 विज्ञान - 4	श्याम पट्ट का सही उपयोग, एक रेखीय चित्र, रंग संयोजन चित्र रंग संयोजन रेशम पट द्रण, माडल निर्माण ग्राफिक्स आदि केबारे में जानकारी दी गई तथा श्रव्य दृश्य शिक्षा. साधनों के उपयोग के बारे में बताया गया ।	
	कुल कार्यक्रम - 6 संभागी 157				लगभग सभी अनुदेशिकाओं ने फ्लेश कार्ड का निर्माण किया। तथा शिक्षण में उनका उपयोग कैसे लिया जा सकता है पर प्रकाश डाला । कुछ शैक्षणिक फिल्मों का प्रदर्शन भी भी किया गया ।	अनौपचारिक शिक्षण के अन्तर्गत दृश्य सामग्री का उपयोग कैसे लिया जाये, अनुदेशिकाऐ बोर्ड का सही उपयोग कैसे करें एक अच्छे चिन्ह को बनाने में क्या क्या सावधानी बरतनी चाहिए ।	

7- शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रसार सेवा विभाग

इस विभाग का गठन दिनांक 1-7-89 को संस्थान की पुनर्संरचना के आधार पर हुआ। इस विभाग के अन्तर्गत दो अनुभाग है ।

प्रथम अनुभाग शिक्षा अनुसंधान का अनुभाग है जिसके अन्तर्गत शैक्षिक अनुसंधान प्रकोष्ठ, एवं शैक्षिक प्रयोजना प्रकोष्ठ है । राज्य नवाचार विकास समूह वर्तमान में विभाग-1 में स्थापित है । इसी प्रकार दूसरा अनुभाग प्रसार सेवा अनुभाग है । जिसके अन्तर्गत प्रसार सेवा प्रकोष्ठ एवं प्रकाशन तथा जनसंपर्क प्रकोष्ठ है ।

शैक्षिक अनुभाग के अन्तर्गत संस्थान स्तर पर चल रहे शोधकार्यो का समन्वयन, सहयोग एवं मार्गदर्शन का कार्य किया जाता है । राज्य में चल रही जिला शिक्षा अनुसंधान वाकूपीठों से वार्षिक योजनाऐं आमंत्रित कर समीक्षा की जाती है । तथ वाकपीठ प्रतिवेदनों की समीक्षा की जाती है । जिला शिक्षा अनुसंधाता वाकूपीठों को मार्गदर्शन प्रदान कर उनसे शोध आकल्प आमंत्रित कर चयनित शोध प्रायोजनाओं को 500-500 रुपये का आर्थिक अनुदान प्राप्त किया जाता है ।

शैक्षिक प्रयोजना प्रकोष्ठ के अन्तर्गत युनिसेफ द्वारा प्रायोजित प्रायोजनाऐं तथा केन्द्रीय प्रवर्तित योजनाओं का समन्वयन, बैठक आयोजन एवं समीक्षा कर त्रैमासिक एवं वार्षिक प्रतिवेदन संबंधित को प्रस्तुत किया जाता है ।

प्रसार सेवा प्रकोष्ठ के अन्तर्गत प्रसार सेवाओं का वार्षिक कार्यक्रम निर्धारण शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारियों एएवं समन्वयकों की बैठकें आयोजित कर मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। अध्ययन वृत की मासिक बैठकें आयोजित करना, एन.सी.ई.आर.टी, द्वारा शिक्षक प्रशिक्षकों एवं शिक्षकों की पत्र-वाचन प्रतियोगिताओं का आयोजन कराना, प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक

विद्यालयों को शिक्षा के राज्य स्तरीय पत्र-वाचन प्रतियोगिता का आयोजन भी इसी विभाग द्वारा किया जाता है ।

प्रकाशन एवं जनसंपर्क प्रकोष्ठ के अन्तर्गत संस्थानिक कार्यो की रपट, प्रतिवेदन समाचार टिप्पणियां तथा आकाशवाणी प्रसारण हेतु आलेख भेजे जाते है । संस्थान की गतिविधियों का प्रतिवेदन वार्षिकी के रुप में प्रकाशन करना, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का संक्षिप्त प्रतिवेदन तैयार करना राज्य स्तरीय पुस्तक विकास परिषद् एवं राष्ट्रीय पुस्तक विकास परिषदो से संबधित कार्य संपादित किये जाते है । समय-समय पर गतिविधियों के प्रतिवेदन एवं फोल्डर का प्रकाशन किया जाता है ।

विभाग कोआवंटित कार्यो के अतिरिक्त इस विभाग द्वारा संस्थान की राज्य स्तरीय परामर्शदात्री समिति की बैठक का आयोजन तथा किये गये निर्णयों की अनुपालना की जाती है । संस्थान की सुदृढीकरण स संबंधित कार्य तथा राज्य में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना से संबंधित कार्य भी सपादित किये जाते है ।

संस्थान की राज्य स्तरीय परामर्शदात्री समिति की दशम बैठक 20-4-90 को आयोजित करवाई गई । नवीन तथा पुराने प्रस्तावों पर लिये गये निर्णयों के अनुरुप क्रियान्विति की गई । 16 में से 10 बिन्दुओं का निष्पादन हो चुका है । 3 बिन्दु निदेशालय तथा 3 बिन्दु राज्य सरकार के विचाराधीन है ।

राज्य में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना से संबंधित प्रोजेक्ट निर्माण की दृष्टि से सत्र 88-89 में 9 जिलों के तथा 89-90 में शेष 9 जिलों के डाईट प्रोजेक्ट निर्मित करा राज्य सरकार को प्रस्तुत किये एवं तद्नुसार प्रोजेक्ट स्वीकृत हुए ।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के सुदृढीकरण के प्रस्ताव निर्मित कर निदेशालय, राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार को प्रस्तुत किये ।

अनुसंधान :- इस विभाग में निम्नांकित शोध कार्य पूर्ण किये -

1. बाडमेर जिले की प्राथमिक शालाओं में कक्षा-2 के बाद विद्यालय परित्याग की प्रवृति का अध्ययन ।
2. पंचायत समिति बिछीवाड़ा में अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों की प्रदत्त उत्प्रेरकों की उपादेयता का अध्ययन ।
3. शिक्षा प्रशासन अधिकारियों के शैक्षिक कार्यक्रम एवं विद्यालय परिवीक्षण की वस्तुस्थिति का अध्ययन ।

राजस्थान राज्य के समस्त जिला शिक्षानुसंधाता वाक्पीठों शोध आकल्पों की समीक्षा कर 10 शोध आकल्पों का चयन कर उन्हें 500 रु. की राशि आवंटित की गई । इनकी 5-2-90 से 6-2-90 तक संगोष्ठी आयोजित कर मार्गदर्शन किया ।

राजस्थान राज्य की समस्त जिला शिक्षा अनुसंधान की चार सत्रों की समीक्षा कर बीकानेर निदेशालय भेजी गई । इनमें करणीय कार्यों का प्रारुप निर्धारण प्रसारण किया ।

जिला सीकर की वाक्पीठ संगोष्ठी में इसका Try out कर सुधार किया गया ।

संस्थान में चल रहे शोध अध्ययनों के लिए सहयोग एवं मार्गदर्शन किया । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 86के प्लान ऑफ एक्शन की बिन्दु संख्या 11 (अ) तथा (ब) अनुसंधान एवं विकास की त्रैमासिक प्रगति निश्चित अवधि में भेजी गई । उदयपुर जिले कीशैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारियों की बैठक आयोजित कर सहयोग प्रदान किया गया ।

1. गोष्ठी का आयोजन-संस्थानगत यूनिसेफ प्रायोजनाओं की छः माही समीक्षा करवाई गई।
2. सामान्य समन्वयन की छः गोष्ठियां संपन्न।
3. त्रैमासिक केन्द्र प्रवर्तित योजना नई शिक्षा नीति, 86 के शैक्षिक आंकडों का प्रगति प्रतिवेदन निर्धारित स्थानों को भेजे गये।
4. प्रोजेक्ट निर्माण यूनिसेफ स्तर पर स्वीकृति हेतु दो प्रायोजनाएँ विज्ञान पर्यावरण एवं प्रगति के लिए लगभग 29 लाख डालर एवं सांख्यिकी संदर्भ केन्द्र की स्थापना हेतु लगभग 1,50,000 डालर, निर्मित कर विशेषाधिकारी शिक्षा, सचिवालय को भिजवाई गई।
5. विभिन्न अभिकरणों को प्रोजेक्ट निर्माण हेतु दिशा निर्देश भी दिए गये।

प्रसार सेवा (विभाग - 7)

1. उच्च माध्यमिक/मा. विद्यालयों, राजस्थान के समस्त शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय के शिक्षकों की पत्रवाचन प्रतियोगिता सम्पन्न।
2. एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा आयोजित पत्रवाचन प्रतियोगिता में राजस्थान के 8 सम्भागियों में भाग लिया और पांच पुरस्कृत हुए।
3. उ.प्रा./प्रा. विद्यालयों की जिला स्तरीय, उ.प्रा./प्रा. विद्यालयों की राज्य स्तरीय शिक्षकों हेतु पत्रवाचन प्रतियोगिताएँ सम्पन्न एवं पुरस्कृत।
4. यूनिसेफ प्रायोजना - 3 के अन्तर्गत छः सामुदायिक केन्द्रों की योजना निर्माण एवं मार्गदर्शन ।
5. मण्डल स्तरीय शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारियों की कार्यगोष्ठी 28-29 सितम्बर, 89 की आयोजित।
6. सत्र 89-90 के अप्रेल माह से आरम्भ किये गये संस्थान के अध्ययनवृत में प्रत्येक माह के प्रथम सोमवार को शिक्षा से संबंधित विभिन्न विद्वानों विचारकों, मनीषियों तथा शिक्षाविदों की वार्ताओं का आयोजन किया जा रहा है। अध्ययनवृत के 14 कार्यक्रम आयोजित किये जा चुके हैं।

प्रकाशन-

1. फील्ड एक्सपीरियेन्स इन एलीमेन्ट्री एजूकेशन इन राजस्थान नामक पुस्तिका का निर्माण किया गया।
2. संस्थान की गतिविधि की निर्देशित निर्मित्त फोल्डर का प्रकाशन हुआ।

8. अनौपचारिक शिक्षा एवं वांचित वर्ग शिक्षा विभाग

राजस्थान में अनौपचारिक शिक्षा का प्रारंभ सन् 1975 में 216 केन्द्रों पर संचालित कर हुआ। जनवरी 1983 में इस कार्य को पंचायत समितियों को स्थानान्तरित किया गया इस समय राजस्थान की 236 पंचायत समितियों में से 179 पंचायत समितियों में यह योजना चल रही है।

नवम्बर 1989 तक राज्य द्वारा स्वीकृत केन्द्रों की संख्या 11604 थी। जिनमें से 7200 बालक 8000 बालिका एवं 804 स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा संचालित 733 केन्द्र अनौपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत कार्यरत हैं।

दिसम्बर 1989 से प्रोजेक्टाइजेशन स्कीम लागू की गई है जिसके अन्तर्गत 1000 बालक 3000 बालिका कुल 4000 केन्द्र इस योजना में लिए गए हैं। शेष 32 बालक एवं 3000 बालिका केन्द्र कुल 3032 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र पूर्व-योजनानुसार ही कार्यरत रहेंगे ।

कार्यरत के केन्द्रों पर लाभान्वितों की संख्या निम्नानुसार है।

वर्ण	बालक	बालिका	योग
सवर्ण	91509	85563	177062
अनुसूचित जाति	30524	27774	56298
अनुसूचित जन जाति	40158	33740	73898
योग -	162191	145070	307268

इस प्रकार केन्द्रों पर 307268 बालक, बालिकाओं को इस योजना के अन्तर्गत लाभान्वित हुए।

इस प्रभाग के अन्तर्गत विकलांग एकीकृत शिक्षा, (ब्लबड़ा प्रोजेक्ट) केप प्रायोजना एवं अनुसूचित जाति जनजाति प्रतिभा विकास कार्यक्रम तथा महिला शिक्षा के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं ।

विभाग के अन्तर्गत अनौपचारिक शिक्षा अनुदेशक प्रशिक्षण शिविर, सहायक परियोजना अधिकारी कार्यशाला एवं अनौपचारिक शिक्षा का प्रथम चरण पाठ्यक्रम समीक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत कुल 65 कार्यक्रम जिलास्तर पर एवं संस्थान में आये किए गए, जिनमें 31060 व्यक्ति लाभान्वित हुए ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत वंचित वर्ग की शिक्षा के नवीन आयाम-महिला शिक्षा एवं अनुसूचित जाति/जनजाति की शिक्षा की कार्य-योजना की क्रियान्विति भी इसी विभाग के जिम्मे हैं ।

- यूनिसेफ सहायता प्राप्त प्रायोजना एवं विकलांग एकीकृत शिक्षा यद्यपि इसी विभाग के अन्तर्गत संचालित होती हैं पर उपलब्धियां-यूनिसेफ प्रायोजनाओं के अन्तर्गत दर्शाई जा रही हैं।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम को राज्यव्यापी गति देने की दृष्टि से मानव संसाधनों के विकास की दिशा में क्षेत्र में कार्यरत कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने हेतु संस्थान द्वारा इस वर्ष निम्नांकित कार्यक्रम आयोजित किए गए -

प्रशिक्षण	कार्यक्रम	संभागी
1. अनौपचारिक शिक्षा सघन अनुदेशक प्रशिक्षण शिविर	60	3000
2. अनुदेशक प्रशिक्षण कार्यक्रम	1	28
3. सहायक प्रायोजना अधिकारी कार्यशाला	1	16
4. पर्यवेक्षक कार्यशाला	1	20
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में अनौपचारिक शिक्षण प्रथम चरण पाठ्यक्रम समीक्षा कार्यगोष्ठी	1	22
	65	3106

अनुसंधान :-

इस विभाग द्वारा निमनलिखित अनुसंधान कार्य किए जा रहे हैं :-

1. अनौपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा में अध्ययनरत शिक्षार्थियों के ठहराव एवं शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन ।"
   (जिला -चित्तौड़गढ, झालावाड़, एवं अलवर)

प्रकाशन :-

1. अनौपचारिक शिक्षा परीक्षा परिणाम का समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन (सत्र 1986-87 1987-88 एवं 1988-89 के संदर्भ में)
2. " औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा में अध्ययनरत शिक्षार्थियो के ठहराव एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन ।"
   (जिला- चित्तौड़, झालावाड़ एवं अलवर)
   राजस्थान में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम का प्रगति प्रतिवेदन (सत्र 1989)

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र :-

	बालक	बालिका	योग
स्वीकृत	7650	2650	10200
कार्यरत	6988	2285	9273

शिक्षाकर्मी प्रयोजना

इस प्रोयाजना के अन्तर्गत 11 जिलों के 15 पंचायतों समितियों में 385 शिक्षाकर्मी कार्यरत है । इनके द्वारा संचालित दिन के विद्यालय 196 तथा रात्रि केन्द्र 279 हैं ।

इनमें लाभान्वित बालक बालिकाओं की संख्या निम्न प्रकार है :-

	बालक	बालिकाएँ	योग
दिन के विद्यालय	8690	2291	10981
रात्रि केन्द्र	2679	2374	5053

महिला शिक्षा

महिला शिक्षा के अन्तर्गत राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा किये गये कार्यों का प्रगति विवरण -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के परिप्रेक्ष्य में सन् 1988 में संस्थान में महिला शिक्षा शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना की गई ।

सत्र 89-90 में संस्थान स्तर पर महिला शिक्षा के संदर्भ में निम्नांकित कार्य किये गये ।

कार्यक्रम	अवधि	संभागी
(अ) राष्ट्र स्तरीय कार्य गोष्ठियों में संभागित्व :-		डा. रेणु चौधरी सहा. निदेशक
(i) एन.सी.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा महिला समानता शिक्षा साहित्य को क्षेत्रीय एवं हिन्दी भाषा में अनुवादित करना	30.1.89 से 3.2.89	
(ii) एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा	4.9.89 से 20.10.89	डा. रेणु चौधरी
(iii) महिला जागृति हेतु महिला शिक्षा पाठ्यक्रम व पुस्तके निर्माण कार्य भी जारी है ।		
(iv) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में रा.शै.अ.एवं.प्र. नई दिल्ली के सहयोग से महिला समानता हेतु राजस्थान के शिक्षा प्रशासकों की कार्य गोष्ठी	अवधि 4.1.89 से 6.1.89	संभागी 80
v) नारी समानता हेतु अध्यापिकाओं की महिला शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम	7.8.89 से 9.8.89	25
(vi) राजस्थान की अनुसूचित जाति एवं जनजाति बालिका शिक्षा कार्य गोष्ठीएन.सी.ई.आर.टी नई दिल्ली के तत्वधान में शिक्षा विभाग, समाज कल्याण एवं जिला परिषदों के अधिकारियों की कार्य गोष्ठी	9.1.90 से 11.1.90	17
कुल कार्यक्रम	5	124

इस कार्य गोष्ठी में NCERT की डा. जनक दुग्गल एवं डा. किरण देवेन्दा ने संदर्भ व्यक्ति के रुप में कार्य किया । सुझाव निम्नांकित रहें -

(i) विद्यालय में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के द्वारा कैसे इन बालिकाओं को विद्यालय में आकर्षित कर रोका जाय ।

(ii) ग्रामीण इलाकों की महिलाओं में जागृति लाने के लिए करणीय कार्य ।

(iii) अ.जा. एवं ज.जा. क्षेत्र की बालिकाओं का नामांकन एवं ठहराव बढ़ाने सम्बन्धी नीति निर्धारित की गई ।

समापन समारोह डा. गिरजाव्यास पर्यटन राज्यमंत्री एवं संस्थान के निदेशक श्री नागर के सानिध्य में सम्पन्न हुआ ।

प्रकाशन -

प्रकोष्ठ द्वारा "राजस्थान में महिला शिक्षा सांख्यिकी विवरण नामक पुस्तिका का प्रकाशन किया गया ।

विकलांग बालकों हेतु एकीकृत शिक्षा योजना

केन्द्र प्रवर्तित विकलांग बालकों हेतु एकीकृत शिक्षा योजना राज्य के 6 जिलों, अजमेर, कोटा, जोधपुर, बीकानेर एवं उदयपुर में एक-एक राज्यकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में वर्ष 1978 से आरंभ की गई । इस योजना के संचालन हेतु राज्य की केन्द्र सरकार द्वारा शत प्रतिशत अनुदान प्राप्त होता है ।

इस योजना में सामान्य बालकों के साथ ही विभिन्न विकलांगता श्रेणी के बालकों की विशिष्ट अध्यापकों एवं आवश्यक उपकरणों की सहायता से अध्ययन कराया जाता है । योजनासे सम्बन्धित प्रत्येक विद्यालय में विभिन्न विकलांगता श्रेणी के कुल 90 विकलांग बालकों के शिक्षण की व्यवस्था है । वर्ष 1988-89 में इस योजना का विस्तार किया गया, जिसके परिणामस्वरुप इस योजनान्तर्गत पूर्व के 6 जिलों में 8वीं कक्षा उत्तीर्ण बालक-बालिकाओं को आगे शिक्षा का अवसर देने हेतु 6 राजकीय सीनियर उ.मा. विद्यालयों का चयन किया गया एवं राज्य के दस अन्य जिलौ चित्तोडगढ़, बांसवाड़ा, डूँगरपुर, भीलवाड़ा, पाली, बाड़मेर, धौलपुर, अलवर, टोंक, बून्दी में एक एक रा.उ.प्रा. विद्यालयों में यह योजना आरंभ की गई । इस प्रकर वर्तमान में राज्य में यह योजना 16 राजकीय उ.प्रा. विद्यालयों एवं 6 सी.उ.मा. विद्यालयों मा.वि. में चल रही है ।

वर्तमान में इन विद्यालयों में अध्ययनरत विभिन्न विकलांगता श्रेणी के आंशिक बधिर । आंशिक दृष्टिहीन, शारीरिक दोषयुक्त एवं मन्द बुद्धि बालकों की संख्या 910 है ।

इन विद्यालयों में विकलांग बालकों के शिक्षण में सहयोग प्रदान करने वाले कार्यरत विशिष्ट शिक्षकों को अल्पकालीन सेवारत प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों द्वारा दिया जाता है ।

इसी विद्यालयों में विकलांग बालकों के शिक्षण में सहयोग प्रदान करने वाले कार्यरत विशिष्ट शिक्षकों की अल्पकालीन सेवारत प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों द्वारा दिया जाता है।

इसी योजना से सम्बन्धित यूनिसेफ प्रोजेक्ट पी.आई.ई.डी. के अन्तर्गत वर्ष 1987 से एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा राज्य के कोटा जिले की छबड़ा पंचायत समिति क्षेत्र के समस्त प्राथमिक । उच्च प्राथमिक भा.वि. । सी.उ.मा. विद्यालयों की संख्या 134 है - में इसे लागू किया गया है ।

प्रोजेक्ट के अनुसार पं.समिति क्षैत्र के विद्यालयों में कार्यरत समस्त अध्यापकों को अब तक दो दिवसीय प्रशिक्षण 5 दिवसीय प्रशिक्षण एवं 45 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया है ।

वर्ष 1988-89 में आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में 60 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया एवं 33 अध्यापकों को क्षेत्रीय महाविद्यालय अजमेर में 6 सप्ताह का प्रशिक्षण दिया

D- 6012
15-4-91

गया ।

छबड़ा पं. समिति में प्रशिक्षण पश्चात् अध्यापकों द्वारा किये गये सर्वे के आधार पर विभिन्न विकलांगता श्रेणी के 413 बालकों की जाँच का कार्य कर लिया गया है ।

9. शिक्षाक्रम पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तक विकास एवं मूल्यांकन विभाग

शिक्षा क्रम विकास एवं मूल्यांकन विभाग के अन्तर्गत दो अनुभाग एवं पाँच प्रकोष्ठ है । कार्य योजना की दृष्टि से देखा जाय तो यह विभाग काफी महत्वपूर्ण है । इस विभाग के अन्तर्गत शिक्षा-क्रम का फ्रेम वर्क को तैयार करना, जिसमें पाठयक्रम में निर्देशित बिन्दुओं के आधार पर अध्ययन-सामग्री का निर्माण एवं नवीन पाठ्य-पुस्तकों का प्रणयन कर उनका ट्राई-आउट करना, मुख्य कार्य है । इसके साथ शिक्षकों को विषय-वस्तु से परिचित कराने हेतु अभिनवन कार्यक्रम नियोजन करना, दृश्य श्रव्य सामग्री के उपयोगी की स्थितियाँ सुझाना भी इसके कर्तव्य की सीमा में आता है ।

इस विभाग की कार्य योजना में अविभक्त इकाई शिक्षण की प्रभावी बनाने, शिशु क्रीडा केन्द्रो की गुणवत्ता वृद्धि के प्रयास करने एवं पूर्व प्राथमिक शिक्षा को बाल माध्यम प्रयोगशाला को समृद्ध बनाने हेतु संस्थानिक प्रयासो कों गति देना भी है ।इसी प्रकार भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से सी.सी.आर.टी. के कार्यों एवं कार्यक्रमों का आयोजन नियोजन । शिशु देखभाल एवं शिक्षा प्रायोजना की क्रियान्विति सामुदायिक सहयोग की विकासात्मक प्रवृत्तियाँ प्रायोजना का अनुवर्तन करना भी इस विभाग के जिम्मे है ।

इस विभाग का एक अनुभाग शिक्षा क्रम अनुभाग है - जिसके कार्य तीन प्रकोष्ठों में विभक्त है (1) शिक्षा क्रम प्रकोष्ठ जो सामान्य शिक्षा के उच्च प्रा. स्तर के शिक्षाक्रम का विकास कर उसमें क्षेत्र के सुझावों की सम्मिलित किया जाता है । (2) शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ जो शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग को शिक्षण अधिगम एवं तकनीक के रुप में सुनिश्चित दिशा देने का उपक्रम करता है । (3) पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रकोष्ठ - शिशु देखभाल और शिक्षा से जुड़े सभी अभिकरणों से समन्वय स्थापित कर शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि हेतु उनकी कार्य प्रणाली को सुनिश्चित कार्य-योजना का अंग बनाना तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रायोजना को क्रियान्विति करना ।

इस विभाग का दूसरा अनुभाग-मूल्यांकन एवं परीक्षा-सुधार, सतत व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया का निर्धारण तकनीक एवं परीक्षा-सुधार की कार्य योजना की क्रियान्विति की जाती है । इस अनुभाग के दो प्रकोष्ठ हैं

(1) मूल्यांकन एवं परीक्षा सुधार तथा परीक्षण सेवाएँ ।

शिशु देखभाल शिक्षा की यूनिसेफ प्रयोजना की क्रियान्विति इस विभाग के अन्तर्गत होती है।

इस विभाग के अन्तर्गत शिक्षाक्रम प्रकोष्ठ 1 में शिक्षा नीति 86 और नवीन शिक्षा क्रम के

आधार पर इस सत्र में कक्षा 2,4 और 7 की हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, सिन्धी, पंजाबी गुजराती संस्कृत पर्यावरण-अध्ययन, विज्ञान सामाजिक विज्ञान, सामाजोपयोगी उत्पादक कार्य, कला शिक्षा और शारीरिक शिक्षा की(पाठ्य- पुस्तकें, कार्यपुस्तिका तथा शिक्षक संदार्शिका तैयार कराई गई, इन पाठ्यपुस्तकों में कोर एलिमेन्ट्स, कुष्ठ रोग निवारण, जनसंख्या, वन्य जीव संरक्षण, राष्ट्रीय सम्पत्ति की सुरक्षा आदि को समुचित स्थान दिया गया, जिसका व्योरा निम्न प्रकार है :-

कक्षा	पाठ्यपुस्तक	कार्य पुस्तिका	शिक्षक संदार्शिका
2	5	2	-
4	7	1	-
7	10	1	1

इसके अतिरिक्त कक्षा 3 से 6 की एक शिक्षक संदार्शिका व कक्षा 6 की एक कार्य पुस्तिका व एक शिक्षक संदर्शिका का निर्माण हुआ । इस प्रकार कुल 37 पुस्तकें इस सत्र में तैयार हुई है । इन्हें राजस्थान सरकार को अनुमोदनार्थ प्रेषित भी कर दी गई है ।

इस विभाग की 89-90 की उपलब्धियाँ इस प्रकार है :

कार्यक्रम	अवधि	संभागियों की संख्या	विवरण
(1) विकास (सामग्री निर्माण)			
एस.टी.सी. के आदर्श प्रश्नपत्र निर्माण कार्य गोष्ठी (6 दिन)	11.12.89 से 16.12.89	39	
(2) एस.टी.सी.के. आदर्श प्रश्नपत्र परिमार्जन कार्यगोष्ठी	29.1.90 से 1.2.90 (3 दिन)	10	
(3) अनुसंधान - "PMOST की प्रभावशीलता का अध्ययन" हेतु उपकरण निर्माण कक्षा 4 के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों के अध्ययन सम्बन्धी प्रायोजना	15.3.90 से 17.3.90 (3 दिन)		N.C.E.R.T., नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित प्रायोजना NCERT की प्रायोजना समन्वय श्रीमती स्नेहलता कुलश्रेष्ठ द्वारा संस्थान के सहयोग की प्रशंसा की गई ।
कुल कार्यक्रम - 3		49	
(4) प्रसार एस.टी.सी. के आदर्श प्रश्न पत्र मुद्रित हो जाने पर उन्हे क्षेत्र में भेजा जायेगा ।			
(5) एस.टी.सी. के आदर्श प्रश्नपत्रों का मुद्रण कार्य चल रहा है (प्रथमवर्ष)			
(6) अन्य			

ग्रामीण प्रतिभाखोज छात्रवृत्ति

ग्रामीण प्रतिभावान छात्रवृत्ति परीक्षा में राज्य के सभी जिलों के 9990 छात्र प्रविष्ट हुए ।

अनुसूचित जाति के 476 एवं जन जाति के 69 छात्र/ छात्राएँ छात्रवृत्ति को प्राप्त कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि सामान्य वर्ग के 714 भूमिहीनो के 476 छात्रों को मिलाकर कुल 1735 छात्रवृत्तियाँ ग्रामीण प्रतिभावान छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत राज्य में दी जा रही हैं ।

ग्रामीण प्रतिभावान छात्रवृत्ति परीक्षा वर्ष 1984 से 1989 तक स्वीकृत नये बजट पेटर्न के अनुसार पारिश्रमिक मानदेय बिल की राशि का भुगतान करने के लिए जिला शिक्षा अधिकारियों (छात्र-संस्थाएँ) को बैंक ड्राफ्ट भेजे गये ।

शिक्षा क्रम एवं मूल्यांकन विभाग - 9 प्रकोष्ठ 3 के तत्वाधान में CCRT के सम्पादित कार्यक्रम - 1989-90

क्र.सं. कार्यक्रम की नाम एवं विवरण	दिनांक एवं अवधि	संभागी
1. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य पर CCRT नई दिल्ली द्वारा दिल्ली में आयोजित अभिनवन प्रशिक्षण (National Leve comp)	1 अप्रेल 89 (7 दिन)	भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों के अध्यापक / अध्यापिकाएँ

इस अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति श्रीयुत शंकर दयाल शर्मा उपस्थित हुए । श्री बशीर अहमद परवेज द्वारा संचालित प्रायोगिक कक्षा में अलपना प्रथा, मॉडने का निरीक्षण किया तथा भारत की इस सांस्कृतिक धरोहर की अध्यापकों और छात्रों तक पहुंचाने हेतु बधाई दी ।

2.	राष्ट्र स्तरीय ससमाजोपयोगी उत्पादक कार्य प्रशिक्षण शिविर	16 से 29 मई 89 14 दिन (संस्थान)	68 भारत के भिन्न प्रांतों से आये अध्यापक
	कुल कार्यक्रम	2	218

इस अवसर पर सुश्री प्रेमलता पुरी, निदेशक CCRT, नई दिल्ली ने उयपुर में संस्थान द्वारा शिविर के सफल संचालन के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की गई ।

संस्थान के सभी विभागों के प्रस्तावित एवं संपादित कार्यक्रमों का विवरण एवं लाभान्वितों की संख्या

क्र.सं.	विभाग	प्रशिक्षण प्रस्तावित	प्रशिक्षण संपादित	प्रशिक्षण लाभान्वित संभागी	सामग्री निर्माण प्रस्तावित	सामग्री निर्माण संपादित	सामग्री निर्माण लाभान्वित संभागी	प्रसार विभाग	प्रसार प्रस्तावित	प्रसार संपादित	प्रसार लाभान्वित संभागी	अनुसंधान प्रस्तावित	अनुसंधान संपादित	अनुसंधान लाभान्वित संभागी
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13		14
1.	1	10	5	82	7	7	70	11	10	100	-	-		-
2.	2	15	11	868	4	3	60	16	15	475	1	1		17
3.	3	8	3	79	-	-	-	60	57	18750	1	1		सर्वेक्षण
							2 कार्यक्रम निर्देशन वार्ताएँ				1	1		व्या. शिक्षल रहा है
4.	4	12	10	378	-	-	-	3	3	-	-	-		-
	118 शिविर		118	21549										
5.	5	4	3	97	-	-	4	-	-	-	-	-		-
6.	5	7	7	178	-	-	फिल्म प्रदर्शन 695 6, 95,100				-	-		-
7.	7	5	5	124	-	-	फिल्म वितरण 506							
8.	8	3	3	64	1	1	-	7	6	278	1	-		-
		60 शिविर	50 शिविर		52 पुस्तकें 52 लेजन		22	15	4	25	-	-		-
				3000			208							
9.	9	2	-	-	-	-	-	10	3	49	-	-		-
कुल योग :-		224	215	26419	65	64	364	1325	1299	714777	4	3		17

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
शैक्षिक आयोजना एवं प्रशासन विभाग-5
प्रस्तावित एवं संपादित कार्यक्रम का विवरण सत्र 1989-90

क्र.सं.	विभाग	प्रस्तावित	संपादित प्रकाशन	लाभान्वित संभागी	प्रस्तावित	संपादित प्रायोजना	लाभान्वित संभागी	प्रस्तावित	संपादित योग	लाभान्वित संभागी
15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25
1	1	-	-	-	-	-	-	32	22	252
2.	2	-	-	-	नीस प्रायोजना जनसंख्या शिक्षा			41	35	1870
					5	5	450	72	62	18829
3.	3	-	-	-	-	-	-	133	131	21927
4.	4	-	-	-	-	-	-	5	4	101
5.	5	-	-	-	-	-	-	1208	-	695278
6.	6	-	-	-	-	-	-	17	14	402
7.	7	2 फोल्डर्स 1 फील्ड एक्सीपीरियेन्स			-	-	-	148	127	6337
8.	8	-	-	-	केप प्रशिक्षण					
					11 विकलांग	11 विकलांग	265	39	28	1784
					3	3	138	1695	1631	746580
					ई.सी.ई. प्रसार					
					3	3	2615			
9.	9	-	-	-	केन्द्र प्रवर्तित योजना					
					27	25	1735			
कुल योग :-		3	-	-	49	47	5203			

अध्याय 3

प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन में संस्थान की भूमिका

सी. के नाग
निदेशक
राज. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
उदयपुर

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि की दृष्टि से जहां व्यापक विस्तार किया गया वहीं राज्य की शैक्षिक गतिविधियों को गति देने और राज्य की शिक्षा की रीति नीति निर्धारित एवं संचालित करने की दृष्टि से राज्य की विभिन्न शैक्षिक इकाइयों का समन्वय कर राजस्थान राज्य शैक्षक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान का गठन किया गया जो समानुपातिक रुप में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के मिनिएचर रुप में विक्सित हुआ ।

संस्थान के कार्य क्षेत्र और दायित्व निर्वहन की दृष्टि से राजस्थान की प्राथमिक शिक्षा गुणवत्ता में वृद्धि करना रहा है । वस्तुतः संस्थान ही एक मात्र ऐसा अभिकरण रहा जो राजस्थान की समग्र शिक्षा जगत् को दिशा प्रदान करने वाला संस्थान कहा जा सकता है । सतही तौर पर शिक्षा के स्तर की गुणात्मक दृष्टि से ऊचाँ उठाने के लिए अनुसंधान प्रयोग-परीक्षण एवं नवाचारों का प्रयोग, विकासात्मक कार्यक्रम, प्रसार सेवा एवं राष्ट्रीय एकता से संबद्ध कार्यक्रम आयोजित करना, तथा संबद्ध शैक्षिक साहित्य का प्रकाशन करना एवं शिक्षक प्रशिक्षण से संबंधित सभी प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन- नियोजन करना संस्थान के प्रमुख दायित्वों में से है । जिनके निर्वाह के लिए संस्थान के कार्यकर्ता विभिन्न क्षेत्रों की आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं का पता लगाकर अपनी कार्य-योजना की निर्मिति करते है और उन कार्य-योजनाओं की क्षेत्र में क्रियान्विति करवाते है ।

शिक्षा को गुणात्मक प्रकृति को मध्ये नजर रखते हुए संस्थान निरन्तर प्रयत्नशील है कि विश्व, राष्ट्र और समाज की नवीनतम आवश्यकताओं तथा परिवर्तित आह्वानों के अनुरुप शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराई जा सके । जिसके संदर्भ में कई प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन-नियोजन शिक्षाक्रम एवं पाठ्यचर्या विकास पाठ्यपुस्तकों एवं पाठ्य सामग्री का विकास, तकनीक प्रधान शिक्षण पद्धतियां एवं विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा है ताकि मनोवैज्ञानिक आधार पर नूतन आयामों का विकास किया जा सके ।

शिक्षा की संचालित करने में आने वाली बाधाओं, समस्याओं एवं कारणों का पता लगाने हेतु अनुसंधान परीक्षण व संदर्भ उपयोगी अध्ययनों द्वारा जानकारी हॉसिल कर तथ्यात्मक निष्कर्ष व ठोस आधार विकसित कर शिक्षा के अकादमिक व प्रशासनिक पहलुओं की मजबूती प्रदान करने की कोशिश करते हैं । प्रसन्नता की बात है कि विद्यालयों में विषय शिक्षण को अनुसंधान परक बनाने की दृष्टि से प्रत्येक जिले में जिला शिक्षा अनुसंधान वाक्पीठ और सभी

स्तर की प्रधानाध्यापक पाक्पीठों की स्थापना हो चुकी है । संस्थान द्वारा अनुसंधान अध्ययनों द्वारा शैक्षिक उन्नयन हेतु प्रतिवर्ष डर्फ के इन अध्ययनों हेतु आर्थिक अनुदान प्रदान कर प्रोत्साहित किया जाता रहा है ।

संस्थान द्वारा सेवापूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित दोनों तरह के शिक्षकों व कार्यकताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है । अप्रशिक्षित अध्यापकों को पत्राचार पाठ्यक्रम व प्रशिक्षको को सेवारत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा शिक्षा व शिक्षण की अधुनातन विधाओं से परिचित कराता है ।

अपनी शिक्षा सेवा प्रसार संबंधी गतिविधियों के माध्यम से संस्थान शिक्षा संबंधी उद्घटित होने वाली नवीन विचारणाओं एवं प्रवृत्तियों को क्षेत्र के कार्यकर्ताओं व शिक्षकों एवं विचारकों तक पहुँचाने का कार्य भी करता है ।

एक दृष्टि से यह संस्थान राजस्थान सरकार के प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग की अकादमिक विंग के रुप में अकादमिक गतिविधियों को नियोजित करता है ।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीनीकरण के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संस्थान सतत प्रयत्नशील रहा प्रहरशालाओं का संचालन अविभक्त इकाई प्रणाली द्वारा शिक्षण एकल अध्यापकीय विद्यालयों की रीति-नीति एवं शैक्षिक उन्नयन के अवरोधात्मक पक्षों के अध्ययनों के साथ ही राजस्थान में बालिका शिक्षा का पिछड़ापन अनुसूचित जाति व जनजाति के छात्र-छात्राओं को दिए जा रहे उत्प्रेरकों का प्रभाव, प्राथमिक विद्यालयों में छात्र-छात्राओं के नामांकन एवं विद्यालय में ठहराव पर अध्यापक निवास का प्रभाव, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों पर बालक-बालिकाओं का ठहराव, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों पर अध्ययनरत बालक-बालिकाओं की केन्द्रों से अपेक्षाएं ऐसे कुछ शोध अध्ययन हैं जिनकी क्रियान्विति में संस्थान की सहभागिता उपलब्धिपरक रही है ।

प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक उन्नयन के संकल्प को पूरा करने के उद्देश्य से राज्य शिक्षा संस्थान व राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान के सहयोग से सन् 1972 में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम का विकास कर उसके आधार पर कक्षा 1 से 5 तक की पाठ्यपुस्तकें विकसित की गई थी । सन् 1976 में प्राथमिक शिक्षा, शिक्षाक्रम नवीनीकरण यूनिसेफ सहायता प्राप्त प्रायोजना की क्रियान्विति के बाद जहाँ संस्थान में राज्य प्राथमिक शिक्षा, शिक्षाक्रम विकास की स्थापना की गई वहीं क्षेत्र विशेष की आवश्यकता के अनुरुप मैदानी, पहाड़ी और दूरस्थ स्थानों के विद्यालयों का सर्वे कर बालकों के लिए उनके पर्यावरण के अनुकूल उच्च आदर्श प्राप्ति हेतु शिक्षाक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें तैयार की गईं ।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 लागू होने के बाद राज्य में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि हेतु प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर का शिक्षाक्रम निर्मित कर राज्य सरकार से अनुमोदित भी करवा लिया गया है एवं संस्थान का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास तथा मूल्यांकन विभाग कक्षा एक से आठ तक की नवीन पाठ्यपुस्तक लेखन के कार्य को सम्पादित कर रहा है । गत वर्ष कक्षा 1,3, व 6 की पाठ्यपुस्तकें तैयार की जा चुकी है तथा इस वर्ष

कक्षा 2,4 एवं 7 की पाठ्यपुस्तकें तैयार की जा रही हैं । तीसरे चरण में अगले वर्ष कक्षा 5 व 8 की पाठ्यपुस्तकों के साथ ही शिक्षक संदर्शिकाओं का निर्माण कराया जावेगा ।

सन् 1972 में कक्षा 1 व 2 को मिलाकर अविभक्त इकाई पद्धति द्वारा शिक्षण कार्य राजस्थान में प्रारंभ किया गया था । वहीं पद्धति सर्वमान्य पद्धति के रुप में आज भी पाठ्यक्रम में स्थान बनाए हुए है ।

संस्थान द्वारा जन्म से पूर्व लेकर मृत्यु पर्यन्त तक की शिक्षा की प्राक्कल्पना को ध्यान में रखकर पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रायोजना के अन्तर्गत पूर्ण प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी क्रीडा सामग्री और शिक्षक संदर्शिकाओं के विकास के अलावा चाइल्ड मिडिया लेबोरेट्री की स्थापना भी की है । इस प्रायोजना की क्रियान्विति सन् 1982 में उदयपुर जिले के चार विकास खण्डों गिर्वा, सलूम्बर, भींडर और सराडा में 65 पूर्व प्राथमिक केन्द्रों पर चलाकर की जा रही है ।

प्रायोजना के अन्तर्गत शिशु क्रीडा केन्द्रों की अनुदेशिकाओं, आंगनवाडी की अनुदेशिकाओं एवं परिवीक्षण अधिकारियों के लिए अभिनवन कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं,साथ ही प्रायोजना हेतु साहित्य निर्माण एवं शिक्षण सामग्री का निर्माण भी किया गया है ।

उल्लेखनीय है कि प्रायोजना प्रकोष्ठ के कार्य प्रारंभ करने के दो वर्ष की ऊल्पावधि में ही जिस बाल माध्यम प्रयोगशाला को विकसित किया गया है उसमें निर्मित सामग्री का एन. सी. आर. टी, नई दिल्ली के विभागाध्यक्ष, श्री पी. एन. दवे एवं यूनिसेफ के महाप्रबधक श्री एम. एम्बो ने अवलोकन कर निर्मित सामग्री की-भूरी भूरी प्रशंसा की है ।

प्राथमिक शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर पोषण स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता की प्रायोजना संस्थान द्वारा 6 वर्षों तक चलाई गई । यह प्रायोजना उदयपुर जिले की जनजाति बाहुल्य क्षेत्र (उदयपुर जिले की गिर्वा, सलूम्बर, पंचायत समितियों) के जन साधारण के स्वास्थ्य पोषण एवं पर्यावरणीय स्वच्छता के स्तर को उन्नत करने हेतु संचालित की गई ।

उक्त प्रायोजना के अन्तर्गत विद्यालयी छात्रों एवं जनसाधारण में स्वास्थ्य पोषण व पर्यावरणीय स्वच्छता के बारे में चेतना पैदा करने के लिए फिल्म शो सामुदायिक चर्चाएं, स्वास्थ्य परीक्षण, पोस्टर्स, चार्टस तथा फोल्डर्स आदि निर्मित कर निःशुल्क वितरित किए गए।

इस प्रायोजना की उपलब्धियों का आकलन करें तो लगेगा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत इस अंश को प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में समाहित किया गया है । प्रदेश के छात्रों को स्वास्थ्य शिक्षा शिक्षण हेतु प्रदेश के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के कार्यकर्ताओं के लिए एक ट्रेनिंग मैन्यूअल तैयार किया गया है जिसे सन् 1989 में अन्तिम रुप प्रदान कर शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों एवं डाईट के शिक्षा कर्मियों का अभिनवन किया जावेगा ।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की दृष्टि से 6 से 14 आयुवर्ग के (उन बालक-बालिकाओं के लिए जो किन्ही कारणों से विद्यालय नहीं जा पाए या जाते जाते रुक गए) प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम प्रायोजना की क्रियान्विति की जा रही है । केप साहित्य द्वारा सुविधादाता के सहयोग से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया संचालित होती है । यह उल्लेखनीय है

कि केप साहित्य के अन्तर्गत अब तक 80 मोड्यूल तैयार किए गए हैं तथा उन मोड्यूलों में प्रयुक्त शब्दों का शब्द/कोश भी तैयार किया गया ।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीनीकरण के लिए शिक्षा के विकल्प के रुप में अनौपचारिक शिक्षा को प्रमुखता दी गई । संस्थान की अनौपचारिक शिक्षा एवं वंचित वर्ग शिक्षा विभाग के द्वारा

अनौपचारिक शिक्षा अधिगम केन्द्रों के लिए शिक्षण सामग्री प्राथमिक स्तर पर तैयार की गई है । तथा अनुदेशकों एवं परिवीक्षण अधिकारियों को प्रशिक्षित करने का कार्य भी संस्थान द्वारा किया गया है ।

वस्तुतः राजस्थान शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा के उन्नयन के लिए प्रतिबद्ध एवं शैक्षिक चुनौतियों के समाधान की दिशा में कार्यरत एक अग्रगामी संस्थान है :

संस्थान के उद्देश्यों की पूर्ति करने वाले कार्यक्रमों एवं प्रवृत्तियों का संक्षिप्त में उल्लेख करना समीचीन होगा । प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक सेवारत शिक्षकों के लिए सभी प्रकार के प्रशिक्षण एवं अभिनवन कार्यक्रम यह संस्थान आयोजित कर विषय शिक्षण को प्रभावी बनाकर उपलब्धियाँ प्राप्त करने में सहायक होता रहा है । राजस्थान के शिक्षा विभाग के द्वारा आदेशित ग्रीष्मकालीन हिन्दी/संस्कृत/सामाजिक ज्ञान/गणित एवं विज्ञान विषय के लगभग 16 शिविर प्रतिवर्ष आयोजित कर शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता रहा है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाने के इन शिविरों के आयोजन का क्रम अवरुद्ध सा हो गया । इस वर्ष उर्दू और सिंधी भाषा के 4 शिविर जरुर आयोजित किए गए ।

इसी प्रकार जनसंख्या शिक्षा विकलांग एकीकृत शिक्षा महिला शिक्षा एवं वंचितवर्ग की शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा वं अन्य विषयों के प्रशिक्षण/अभिनवन कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम (एकवर्ष संस्थागत एवं दूसरा वर्ष पत्राचार पाठ्यक्रम) पूरा करने में संस्थान का शिक्षक प्रशिक्षण विभाग अपने दायित्व का निर्वाह करता हुआ व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम के आयोजन एवं पत्राचार पाठों का भिजवाने का कार्य पूरा करता है ।

समग्र रुप से संस्थान ने प्राथमिक, उच्च प्राथमिक स्तर के सेवारत शिक्षकों, अनौपचारिक शिक्षा अनुदेशकों एवं पर्यवेक्षकों नव नियुक्त प्रधानाध्यापकों, परिवीक्षण अधिकारियों के प्रशिक्षण एवं अभिनवन के दायित्व का निर्वाह कर आशातीत सफलता प्राप्त कर ली है । सामग्री निर्माण के क्षेत्र में उन्नत पाठ्य सामग्री, शिक्षण अधिगम सामग्री यथा पाठ्यपुस्तक कार्य पुस्तक शिक्षक-संदर्शिका और सहायक शिक्षण-सामग्री का विकास कर क्षेत्र को लाभान्वित किया है । समाज और बालको की आवश्यकताओं पर आधारित पाठ्यक्रम का विकास एवं नवीनीकरण किया है । इस दृष्टि से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान का पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षण

विद्यालयों का पाठ्यक्रम, पूर्ण प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम और प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम मुख्य है ।

शिक्षा में नवाचारों पर प्रयोग तथा व्यापक उपयोग की दृष्टि से शिक्षा से जुड़े सभी अभिकरणों से समन्वय स्थापित कर कार्य-योजना की क्रियान्विति हेतु प्रभावी कदम उठाए गए हैं । आवश्यकता आधारित अनुसंधान अध्ययनों की क्रियान्विति की गई है । शैक्षिक मूल्यांकन की विधा और तकनीक में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का कार्य किया गया है । यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सन् 1987 में शैक्षिक नवाचार विकास समूह के अन्तर्गत पश्चिमी क्षेत्र के राज्यों की नवाचार से संबंधित संगोष्ठी संस्थान में आयोजित की गई थी जिसमें 23 पत्रों का वाचन किया गया था ।

प्रतिभा की खोज एवं उन्नयन ग्रामीण प्रतिभा खोज, बाल विज्ञान प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए जिला स्तरीय एवं राज्य स्तरीय विज्ञान मेलों का आयोजन शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन के मेले और प्रदर्शनियाँ, आयोजित करने का कार्य संस्थान द्वारा किया जाता रहा है । यहां यह उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय विज्ञान मेले का आयोजन उदयपुर में सफलता-पूर्वक आयोजित करने का श्रेय संस्थान की प्राप्त हो चुका है । संस्थान द्वारा राष्ट्रीय प्रतिभाखोज परीक्षा हेतु दो मार्गदर्शन शिविर प्रतिवर्ष आयोजित किये जाते रहे है । यही कारण कि इस वर्ष राज्य से राष्ट्रीय प्रतिभाखोज परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या में 25% की वृद्धि हुई है ।

संस्थान द्वारा जहां विभिन्न स्तर के शिक्षकों के लिए शैक्षिक पत्र-वाचन प्रतियोगिताएं आयोजित करता रहा है वहीं राष्ट्रीय पत्र-वाचन प्रतियोगिता में गतवर्ष राज्य के 5 शिक्षकों के पत्र प्रस्तुत किए गए थे और पांचों ही पत्र राष्ट्रीय स्तर पर चयनित हुए । इस वर्ष जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ द्वारा राज्य स्तर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया । नेहरु विज्ञान केन्द्र के तात्वावधान में संस्थान में प्रतिवर्ष राज्य स्तरीय विज्ञान सेमीनार का आयोजन कर स्कूली विज्ञान प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया जाता रहा है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के लागू होने के बाद संस्थान के दायित्वों में वृद्धि हुई हैं ।संस्थान के दायित्वों में माध्यमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन का दायित्व भी बढ गया है । समाजोपयोगी उत्पादक कार्य, व्यावसायिक शिक्षा एवं विज्ञान सुधार योजना एवं जनसंख्या शिक्षा के पक्ष भी जुड़ गए हैं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के फलस्वरुप संस्थान में लगभग 11 केन्द्र प्रवर्तित योजनाएँ लागू की गई हैं । व्यापक शिक्षक अभिनयन कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग 75 हजार सभी स्तर के शिक्षकों की अभिनवित किया जा चुका है । गतवर्ष आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के अन्तर्गत लगभग आठ हजार शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया है ।

उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के लिए विज्ञान सुधार योजना के अंतर्गत प्रयोगशालाओं एवं पुस्तकालयों की समृद्ध करने की योजना की क्रियान्विति की गई । पर्यावरण अनुस्थापन योजना कै तहत आर्थिक अनुदान केन्द्र सरकार द्वारा दिया जाकर शिक्षकों को

प्रशिक्षित करने का कार्य हो रहा हैं । विकलांग स्वीकृत शिक्षा योजना के अंतर्गत कोटा जिले की छबड़ा पंचायत समिति के 134 स्कूलों में विकलांग शिक्षा का कार्यक्रम चालू किया गया है । अनुसूचित जाति और जनजाति के प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्तियाँ स्वीकृत की गई हैं ।

राज्य में 18 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना के आदेश प्रसारित हो चुके हैं तथा कुछ पर कार्य प्रारंभ हो चुका है। कुछ स्थानों पर भवन निर्माण का कार्य प्रगति पर हैं। उल्लेखनीय है कि जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के प्रस्ताव संस्थान ने ही तैयार करा भिजवाये थे । जिला संदर्भ केन्द्र (अंग्रेजी) ने विधिवत् उदयपुर जिले में उच्च प्राथमिक शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का कार्य प्रारंभ किया है । अनौपचारिक शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा प्राकोष्ठ अपने-अपने दायित्वों के निर्वाह में गतिशील हैं ।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी का शिक्षा में प्रयोग राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत किया जा रहा है । नवोदय विद्यालय खोलने के प्रस्ताव शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा किया जाता है । सभी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में कम्प्यूटर दिये जा चुके हैं । 58 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा हेतु बजट आवंटित किया गया है ।

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि हेतु संस्थान द्वारा किए उपलब्धि परक क्षेत्रों का आकलन करें तो लगेगा कि शिक्षाक्रम नवीनीकरण में वैज्ञानिक पद्धति एवं आवश्यकता के अनुकूल पर्यावरण आधारित निर्माण किया और नवीनीकृत पाठ्यक्रम के आधार पर पाठ्यपुस्तकें अभ्यास पुस्तकें, संदर्शिकाओं का निर्माण भी मुख्य है ।

नामांकन और ठहराव की समस्या समाधान हेतु उत्प्रेरकों का प्रावधान,प्रतिभाखोज प्रोत्साहन, ग्रामीण प्रतिभावान् परीक्षा का आयोजन वंचित वर्ग शिक्षा (अनुसूचित जाति, जनजाति महिला शिक्षा एवं विकलांग एकीकृत योजना) का कार्य योजना की क्रियान्विति द्वारा सबको शिक्षा का संकल्प पूरा किया ।

कक्षागत शिक्षण में शिक्षण-उपयोगी सामग्री का उपयोग करने की दृष्टि से प्रशिक्षण एवं अभिनवन के सघन प्रयास किये गए ।

नई प्रयोग आधारित विधियों और तकनीकों का पता लगाकर शिक्षण द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि के प्रयास किये गये । औपचारिक शिक्षा के विकल्प के रुप में अनौपचारिक शिक्षा के द्वारा सहज सुलभ शिक्षा के संकल्प को पूरा करने का क्षेत्र भी तलाशा जाकर सघन क्रियान्विति की जा रही है । शिक्षा सबके लिए के आधार तैयार कर संस्थान ने प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए जो उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं उनकी राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना की गई है ।

समग्र रुप से संस्थान प्राथमिक शिक्षा गुणात्मक उन्नयन के कार्यों में संलग्न है । एकाधिक नए उपलब्धि परक आयामों की क्रियान्विति से राजस्थान की उज्जवल तस्वीर उभरेगी और प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्यों की प्राप्ति संभव हो सकेगी ।

अध्याय 4

(अ) केन्द्र प्रवर्तित योजनाएँ : केन्द्र प्रवर्तित योजनाएँ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत व्यापक शिक्षक अभिनवन कार्यक्रम
2. विज्ञान शिक्षण सुधार
3. पर्यावरण अनुस्थापन योजना
4. आपरेशन ब्लेक बोर्ड
5. विकलांग बालकों हेतु एकीकृत शिक्षा योजना
6. अनुसूचित जाति/जनजाति छात्र प्रतिभा विकास कार्यक्रम
7. जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान
8. अंग्रेजी शिक्षण संस्थानों के सुदृढ़ीकरण हेतु केन्द्रीय सहयोग कार्यक्रम
9. अनौपचारिक शिक्षा (विभाग को उपलब्धियों के साथ)
10. जनसंख्या शिक्षा
11. जिला संदर्भ केन्द्र (अंग्रेजी)
12. व्यावसायिक शिक्षा

(ब) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के तात्वावधान में निम्न प्रायोजनाओं का संचालन :

"पूर्ण प्राथमिक शिक्षा" प्रायोजना

"प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम" प्रायोजना

"विकलांग एकीकृत शिक्षा" यूनिसेफ प्रायोजना

राष्ट्रीय व्यापक शिक्षक अभिनवन कार्यक्रम

भारत में शिक्षा के स्वरुप निर्धारण हेतु आम लोगों के विचारों के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के दस्तावेज को संसद् के माध्यम से अनुमोदित किया गया । इससे पूर्व भी शिक्षा पर कई आयोगों ने सुझाव दिये थे और अनुशंसाएँ भी की थी, लेकिन क्रियान्वयन पक्ष को नजर अन्दाज किया गया । राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इसके क्रियान्वयन के लिए प्लान आफ एक्शन बनाया गया और इसी को आधार मानकर इसका क्रियान्वयन किया जा रहा है । इसके अन्तर्गत सेवारत शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि के लिए सेवारत व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से प्रतिवर्ष देश में 5 लाख शिक्षकों को अभिनवित किया जाता है । राजस्थान में भी प्रतिवर्ष 23500 शिक्षकों को अभिनवित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था । इसके अन्तर्गत 21594 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया था ।

गत वर्ष प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए "आपरेशन ब्लेक बोर्ड" के नाम से विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में आपरेशन ब्लेक बोर्ड योजना के अन्तर्गत चयनित विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया । राजस्थान को इसके अन्तर्गत

8050 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया । इसमें से 7643 शिक्षकों को अभिनवित किया गया ।

PMOST - 1989 की उपलब्धियाँ

क्र.सं.	लक्ष्य	उपलब्धि	प्रतिशत
1. शिक्षक (ओ.बी.)	23500	21594	91.46
	8050	(7643)	(95.1%)
2. प्राथमिक	10800	10076	93.29%
(ओ.बी.)	(8050)	(7643)	(95%)
3. उच्च प्राथमिक	6500	6102	93.87%
4. मा./उच्च माध्यमिक	6200	5416	
5. संदर्भ्य व्यक्ति			
(अ) सामान्य 492	728	515	101.2%
(ब) ओ.बी. 236		222 737	
6. मुख्य मार्गदर्शक			
(अ) सामान्य-40	50	41 63	106%
(ब) ओ.बी. 10		22	
7. प्रशिक्षण केन्द्रों की संख्या	118	118	100%
8. प्रशिक्षण शिविरों की संख्या	470	470	100%
9. संदर्भ्य व्यक्ति प्रशिक्षण शिविरों की संख्या			
(अ) सामान्य - 10	15	10 15	100%
(ब) ओ.बी. 5		5	

PMOST के अन्तर्गत 1986 से 1989 तक प्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या

सत्र	प्राथमिक			उच्च प्राथमिक		
	लक्ष्य	उपलब्धि	प्रतिशत	लक्ष्य	उपलब्धि	प्रतिशत
1986	8600	8425	98	8000	7875	98
1987	8600	8487	98	7950	7873	98
1988	8600	7369	85.68	7950	6882	86.56
1989	10800	10076	93.29	6500	6102	93.87
योग	36600	34357	93.8	30400	28713	93.3

प्रकाशन

एन.सी.इ.आर.टी., नई दिल्ली से प्राप्त मोड्यूलों का मुद्रण करवाया गया ।

अ. विज्ञान शिक्षण सुधार

विज्ञान शिक्षण सुधार योजना एक केन्द्रीय प्रवर्तित योजना है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति में

विज्ञान विषय से सम्बन्धित कार्यो को पूर्ण करने हेतु इस योजना का निर्माण किया गया है । यह महसूस किया जा रहा था कि विज्ञान शिक्षण सामग्री के अभावों के कारण प्रभावी ढ़ंग से नहीं हो पा रहा है । विद्यालयों में विज्ञान विषय की पुस्तकों का अभाव है एवं अध्यापकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता है । अतः राजस्थान के 27 जिलों में इस कार्य की पूर्ति करने के लिये इस विज्ञान शिक्षण सुधार योजना का निर्माण केन्द्रीय निर्देशों के अनुरुप किया गया ।

इस योजना को तीन वर्षों (चरणों) में बांटा गया । प्रत्येक चरण में 9 जिलों को लिया गया। इन्हें योजना वर्ष 1987-88, 1988-89 एवं 1989-90 के नाम से निर्मित किया गया और राजस्थान के 27 जिलों के उ.प्रा. विद्यालय एवं उ.मा. व मा. विद्यालयों को लिया गया है।

योजना के मुख्य घटक निम्नानुसार हैं -

1. उ.प्रा. विद्यालयों को विज्ञान किट उपलब्ध कराना ।
2. उ.मा.वि. एवं मा. विद्यालयों को विज्ञान सामग्री उपलब्ध कराना ।
3. उ.मा.वि. एवं मा. विद्यालयों को विज्ञान पुस्तकें उपलब्ध कराना ।
4. प्रत्येक जिले में जिला संदर्भ केन्द्र की स्थापना करना ।
5. विज्ञान एवं गणित के अध्यापकों को प्रशिक्षित करना ।

इस योजना में वर्ष 1987-88 प्रथम चरण की जानकारी निम्नानुसारहैहैं -

योजना में चयनित जिले -

जोधपुर, नागौर, जैसलमेर, झालावाड़, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर ।

माध्यमिक			योग		
लक्ष्य	उपलब्धि	प्रतिशत	लक्ष्य	उपलब्धि	प्रतिशत
7000	6843	97.75	23550	23124	98
7000	6761	98	23550	23121	98
7000	5736	81.94	23550	19987	84
6200	5416	87.35	23500	21594	91.4
27200	24756	91	94150	87826	93.2

योजना की कुल राशि -

3,49,51,000/- रुपये ।

1 उ.प्रा. विद्यालयों की संख्या - 2436

2. मा. विद्यालयों की संख्या + - 866

उ. मा. विद्यालयों की संख्या -

3. पुस्तकालयों की दी जाने वाली पुस्तकों की संख्या - 455 पुस्तकें ।
4. जिला संदर्भ केन्द्रों की स्थापना प्रत्येक जिले में (1)
5. कुल 34 मा. एवं 136 उ.प्रा. स्तर के अध्यापकों हेतु 15 दिवसीय एवं 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

यह योजना संस्थान द्वारा निर्मित की गई एवं राज्य सरकार के माध्यम से मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, नई दिल्ली ने स्वीकृत की एवं इसकी पूर्णता करीब-करीब हो चुकी है । एवं शेष रहे कार्य पूर्ण होने जा रहे हैं ।

द्वितीय चरण योजना वर्ष 1988-89 की योजना 4,42,02,637/- रुपयों की निर्मित करके स्वीकृति के लिये भेजी जा चुकी है । इसमें निम्न जिलों का समावेश किया गया है ।

योजना 1988-89 में चयनित जिलों के नाम -
अजमेर, बीकानेर, चूरू, श्री गंगानगर, भरतपुर, बाड़मेर, बून्दी, कोटा एवं डूँगरपुर ।
योजनार्थ कुल राशि :-
4,42,02,637/- रुपये ।
1. उ.प्रा.वि. की संख्या - 2576
2- मा. एवं उ. मा.वि. की संख्या - 991
3- पुस्तकों की संख्या - 455
4- प्रत्येक जिले में जिला सदंर्भ केन्द्र की स्थापना - 1
5- विज्ञान एवं गणित के अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम - 1।

योजना वर्ष - 1988-89 अभी तक स्वीकृत नहीं हुई है - इस प्रकार योजना वर्ष 1989-90 की तीसरी चरण की जानकारी निम्नानुसार है -,

चयनित जिलों के नाम -
अलवर, धौलपुर, जयपुर, जालोर, झुंझुनू, पाली, सीकर, सवाई माधोपुर, टोंक योजना की कुल राशि - 5,22,20, 793/-
1- उ.प्रा.वि. की संख्या - 3048
2- मा. एवं उ. मा. वि. की संख्या - 1193
3- 1193 विद्यालयों को दी जाने वाली पुस्तकों की संख्या 455 प्रति वि.
4. प्रत्येक जिले में संदर्भ केन्द्र की स्थापना ।
5- अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु कुल 13,58,000/-
मा. एवं उ.प्रा.वि. हेतु शिविर ।
यह योजना भी पूर्णरुप से निर्मित कर स्वीकृति हेतु भेजी जा चुकी है ।

पर्यावरण अनुस्थापन योजना

पर्यावरण अनुस्थापन योजना विद्यालयों में एक केन्द्रीय प्रवर्तित योजना है । इस योजनान्तर्गत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों, विद्यार्थियों में पर्यावरण जागृति के लिये विभिन्न कार्यक्रमों को लिया गया है । यह योजना द्विवर्षीय निर्मित की गई जिसमें प्रत्येक वर्ष में दो-दो जिलों के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के माध्यम से क्रियान्वयन होना प्रस्तावित था ।

यह योजना अजमेर एवं जयपुर जिलों के लिये दिनांक 4.8.89 को स्वीकृत की गई । इस स्वीकृत योजनानुसार इसमें निम्नानुसार कार्य किये जाने हैं :-

1. राज्य एवं प्रोजेक्ट सैल की स्थापना करना ।
2- 2000 विद्यालयों में नर्सरियों की स्थापना करना ।
3- पाठ्यक्रम के विकास हेतु चार कार्यशालाओं का आयोजन करना ।
4- पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा
5- अधिगम सामग्री का विकास करना ।
6- 700 अध्यापकों हेतु 14 अभिनव कार्यक्रम

इस प्रकार इसके साथ-साथ गॉवों को गोद लेना, मान्युमेन्ट्स का रख-रखाव करना एवं प्रकृति अवलोकनार्थ भ्रमण करना एवं कुछ चयनित क्षेत्रों का संरक्षण, अवलोकन आदि करना । कुल स्वीकृत योजना 58.08 लाख रुपयों की है जिसमें से प्रथम चरण के रुप में 37.52 लाख रुपये दिनांक 4.8.89 को स्वीकृत किये गये ।

उक्त स्वीकृत योजनानुसार कार्य करने में सर्वप्रथम राज्य स्तरीय एवं प्रायोजना प्रकोष्ठ की स्थापना की जाकर उन्हीं के द्वारा कार्य की क्रियान्विति की जानी है ।

इस योजनान्तर्गत प्रोजेक्ट सैल की स्थापना दिनांक 8.9.89 के पश्चात् जयपुर एवं अजमेर के जिला शिक्षा अधिकारी (छात्र संस्थाएं) के कार्यालयों में की गई । इस वर्ष राज्य स्तरीय प्रकोष्ठ की स्थापना नहीं की गई । अतः प्रोजेक्ट सैल द्वारा अजमेर जिले के 592 विद्यालयों में नर्सरियों की स्थापना की गई ।

उन्हीं के द्वारा विद्यालयों में नर्सरी की स्थापना करने से पर्वू सर्वे करके यह पता लगाया गया कि उन विद्यालयों में नर्सरी स्थापित करने हेतु भूमि एवं जल की स्थिति पर्याप्त एवं उचित है या नहीं । यह योजनान्तर्गत शेष कार्य प्रगति की स्थिति में है । आशा है यह योजना पूर्ण होने पर चयनित जिलों में पर्यावरण के प्रति लक्ष्य निर्धारित कार्यो की पूर्णता होगी ।

ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों को सामग्री उपलब्ध कराने हेतु ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है । इसके अन्तर्गत विद्यालयों की जो शिक्षण सामग्री दी जाने वाली है उसका प्रोटोटा इप तैयार करने का दायित्व निदेशालय द्वारा राराशै एवं प्रशिक्षण संस्थान को सौंपा गया था ।

संस्थान द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के विषयों के आधार पर खेल एवं शिक्षण सामग्री निर्माण की गई एवं कुछ वस्तुओं को बाजार से क्रय कर उनका स्पेशिफिकेशन तैयार किया गया । इस प्रोटोटाइप के निर्माण कार्य को संस्थान के विषय विशेषज्ञों, एवं विभिन्न अधिकारियों के मार्ग निर्देशन में निर्मित किया गया । इस कार्य को करने के लिए कार्यगोष्ठियों, बैठकों एवं सामग्री निर्माण कार्य संस्थान के विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं क्षेत्र से बुलाये गये सम्भागियों की सहायता से पूर्ण किया गया । सभी तैयार की गई सामग्री के नमूनों को राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बनीपार्क में दिनांक 18.7.87 को आयोजित बैठक के सदस्यों के सामने प्रस्तुत किया गया एवं उसके उपरान्त सदस्यों ने शैक्षिक उपयोगिता, आर्थिक गुणवत्ता की दृष्टि से अवलोकन कर वस्तुओं का चयन किया ।

चयनित वस्तुओं का प्रदर्शन कर शिक्षा सचिव द्वारा गणित उच्च स्तरीय समिति के द्वारा इस सामग्री के स्पेसिफिकेशन सहित अन्तिम रुप दिया गया । इसमें विज्ञान एवं गणित विभाग द्वारा निर्मित प्राथमिक विज्ञान किट एवं गणित किट भी रखी गया ।

ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजनान्तर्गत चयनित सामग्री मय स्पेसिफिकेशन के संस्थान के विभाग के प्रकोष्ठ-1 में प्रदर्शन हेतु रखा गया । इस सभी सामग्री का क्रय कर सम्बन्धित विद्यालयों को वितरण का कार्य आपरेशन ब्लैक बोर्ड व सीमान्त क्षेत्रीय विकास योजनान्तर्गत राज्य स्तरीय क्रय समिति के माध्यम से किया जाना है ।

इस योजनान्तर्गत प्राथमिक अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सम्पादन एवं संचालन पी-मोस्ट कार्यक्रम के तहत संस्थान के विभाग-4 द्वारा किया जा रहा है ।

विकलांग बालकों हेतु एकीकृत शिक्षा योजना

(केन्द्र प्रवर्तित योजना)

केन्द्र प्रवर्तित विकलांग बालकों हेतु एकीकृत शिक्षा योजना राज्य के 6 जिलों अजमेर, कोटा, जयपुर,जोधपुर, उदयपुर एवं बीकानेर में एक एक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में वर्ष 1988 से आरम्भ की गई । इस योजना के संचालन हेतु राज्य को केन्द्र सरकार द्वारा शत प्रतिशत अनुदान प्राप्त होता है ।

इस योजना में सामान्य बालकों के साथ ही विभिन्न विकलांगता श्रेणी के बालकों को विशिष्ट अध्यापकों एवं आवश्यक उपकरणों की सहायता से अध्ययन कराया जाता है । योजना से सम्बन्धित प्रत्येक विद्यालय में विभिन्न विकलांगता श्रेणी के कुल 90 विकंलाग बालकों के शिक्षण की व्यवस्था है । वर्ष 1988-89 में इस योजना का विस्तार किया गया जिसके परिणाम - स्वरुप इस योजनान्तर्गत पूर्व के 6 जिलों में 8 वीं कक्षा उत्तीर्ण बालक-बालिकाओं को आगे शिक्षा का अवसर देने हेतु 6 राजकीय सीनियर उ.मा.वि. का चयन किया गया एवं राज्य के दस अन्य जिलों चित्तौड़ गढ, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, भीलवाड़ा, पाली, बाड़मेर, धौलपुर, अलवर, टोंक, बून्दी में एक एक रा. उ. प्रा. विद्यालयों में योजना आरम्भ की गई । इस प्रकार

वर्तमान में राज्य में यह योजना 16 राजकीय उ.प्रा. विद्यालयों एवं 6 सीनियर उ.मा.वि./ माध्यमिक विद्यालय में चल रही है ।

वर्तमान में इन विद्यालयों में अध्ययनरत विभिन्न विकलांगता श्रेणी के आंशिक बधिर / आंशिक दृष्टिहीन / शारीरिक दोषयुक्त एवं मन्द बुद्धि बालकों की संख्या 910 है ।

इन विद्यालयों में विकलांग बालकों के शिक्षण में सहयोग प्रदान करने वाले कार्यरत विशिष्ट शिक्षकों की अल्पकालीन सेवारत प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों द्वारा दिया जाता है ।

"अनुसूचितजाति/जनजाति प्रतिभा विकास

भूमिका -

अनुसूचित जाति/जन जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृद्धि हेतु भारत सरकार द्वारा एक योजना भारत के समस्त राज्यों में सत्र 87-88 से प्रारंभ की गई थी ।

राजस्थान में इस योजना की क्रियान्विति सत्र 88-89 से प्रारंभ हुई । इस योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति के 40 विद्यार्थी व जन जाति के 27 विद्यार्थी कुल 67 छात्रों का उनकी योग्यता अभिवृद्धि हेतु सघन अध्यापन कराया जाता है जिससे उच्च शिक्षा की आकांक्षा रखने वाले इन वर्गों के विद्यार्थी समुचित शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टर, इन्जिनियर व उच्च अधिकारी के रुप में चयनित हो सकें ।

राजस्थान राज्य में इस योजना का उद्देश्य -

1. राजस्थान राज्य के अनुसूचित जाति/जनजाति के पिछड़े वर्ग के बालकों का उत्थान करना।
2. पिछड़े वर्गों के बालकों की प्रतिभाओं का विकास करना ।
3. शिक्षा के क्षेत्र में उनको आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करना ।
4. पिछड़े वर्ग के बालकों की उच्च अध्ययन हेतु साधन सुविधायें उपलबध कराना ।

सुलभ छात्रवृत्तियां

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों एवं जनजाति के विद्यार्थियों की प्रतिभा विकास छात्रवृत्ति योजना । इस योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिये 40 तथा अनुसूचित जन जाति के विद्यार्थियों के लिए 27 कुल 67 छात्रवृत्तियाँ सुलभ हैं जिनका जिले वार विभाजन निम्न प्रकार से है -

अनुसूचित जाति

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिये प्रत्येक जिले से एक एक व राज्य के 13 जिलों में जहां इस वर्ग के छात्रों की संख्या शेष 14 जिलों की अपेक्षा बहुत अधिक है, दो छात्रवृत्तियों का प्रावधान है । ये जिले निम्न प्रकार से हैं -

(1) श्री गंगानगर (2) झुंझुनूं (3) सीकर (4) अजमेर (5) भरतपुर (6) अलवर (7) जयपुर (9) पाली (10) नागौर (11) कोटा (12) सवाई माधोपुर (13) उदयपुर

इस प्रकार राज्य के समस्त 27 जिलों में अनुसूचित जाति के बालकों को 40 छात्रवृत्तियां उपलब्ध हैं ।

अनुसूचित जन जाति

अनुसूचित जन जाति के छात्रों के लिये प्रत्येक जिले में एक एक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है ।

अनुसूचित जाति/जन जाति छात्रवृत्ति के लिए पात्रता -

1. सभी विद्यार्थी अनुसूचित जाति/जन जाति के ही होंगे ।
2. अनुसूचित जाति/जन जाति के विद्यार्थी जिन्होंने गत सत्र में कक्षा आठ नियमित विद्यार्थी के रूप में अध्ययन करते हुए उत्तीर्ण की हो ।
3. ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थी आवेदन करने के पात्र हैं ।

चयन परीक्षा

प्रति वर्ष 20 जून की ग्रामीण प्रतिभावान् छात्रवृत्ति के साथ ही अनुसूचित जाति व जन जाति के विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित होंगे ।

सत्र 88-89 में इस योजना के अन्तर्गत 67 छात्रों में से अनुसूचित जाति के 34 व जनजाति के 25 कुल 59 छात्र चयनित तीन विद्यालयों -

1. रा. गुरुगोविन्द सिंह सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर
2. राजकीय सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुमानपुरा, कोटा
3. राजकीय सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय तोपदड़ा, अजमेर में अध्ययनरत हैं ।

सत्र 89-90 में 39 छात्रों का इस योजना के अन्तर्गत चयन हुआ, ये विद्यार्थी उपरोक्त तीनों विद्यालयों में अध्यनरत हैं ।

जिला संदर्भ्य केन्द्र (अंग्रेजी),

केन्द्रीय अंग्रेजी एव विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रवर्तित इस योजना के तहत जिले के माध्यमिक कक्षाओं को अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। इस केन्द्र द्वारा जनवरी 89 से मार्च 1990 तक आयोजित कार्यक्रमों का ब्यौरा निम्न प्रकार है -

(अ) प्रशिक्षण -

1. माध्यमिक कक्षाओं को अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षकों को 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर	6
उक्त शिविर से लाभान्वित होने वाले शिक्षकों की संख्या	171
2. (i) माध्यमिक कक्षाओं को अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षकों का एक वर्षीय पत्राचार पाठ्यक्रम	1

(ii) उक्त पाठ्यक्रम के सम्पर्क कार्यक्रमों की संख्या - 2

(iii) उक्त पाठ्य क्रम में भाग ले रहे शिक्षकों की संख्या 37

(ब) प्रसार -

(i) अनुगमन कार्यक्रम

एक दिवसीय अनुगमन कार्यक्रम 7

समस्या समाधान एवं प्रदर्शन पाठ

(ii) लाभान्वित होने वाले शिक्षकों की संख्या 130

(iii) उच्च प्राथमिक स्तर के प्रधानाध्यापक/अंग्रेजी शिक्षकों के परिवीक्षण एवं सम्पर्क कार्यक्रम 7

(स) सन्दर्भ्य

(i) भाषा प्रयोग शाला का निर्माण वर्तमान में उपलब्ध 9 टेप रेकार्डर 60 रेडियो पाठ एवं 200 लैंग्वाफोन रिकार्ड की सहायता से भाषा प्रयोगशाला शुरु की गई है ।

(ii) अंग्रेजी भाषा शिक्षण में Ph.D. कर रहे छात्रों को मार्गदर्शन ।

योजना शीर्षक - जिला केन्द्र अंग्रेजी

स्थल - राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

योजना आरम्भ की तिथि - 1 जन. 1989

योजना अवधि - योजना केन्द्र स्थापना दिनांक से पाँच वर्ष ।

उद्देश्य :- राज्य के किसी एक क्षेत्र (जिले) के अंग्रेजी शिक्षकों को प्रशिक्षित कर अंग्रेजी शिक्षण के स्तर में सुधार लाना इस योजना का उद्देश्य है । इस योजना से अंग्रेजी शिक्षकों को आवश्यकतानुरुप, त्वरित एवं कम लागत से प्रभावी शिक्षण दिया जाता है ।

इस योजना के विशिष्ट उद्देश्य एवं उनकी उपलब्धि के लिए आयोज्य प्रवृत्तियाँ निम्नांकित है :

उद्देश्य	प्रवृत्ति
1. लघु अवधि के अभिनवन कार्यक्रम एवं दीर्घ अवधि के पत्राचार पाठ्यक्रमों के माध्यम से सभी शिक्षकों को प्रशिक्षण	1. दस-दिवसीय अभिनवन कार्यक्रम 2. एक वर्षीय पत्राचार एवं व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम
2. थोड़े समय में एवं अल्प व्यय में शिक्षकों को उस विषय में प्रशिक्षण देना जो कि उन्होंने स्नातक स्तर पर अध्ययन करने का पर्याप्त अवसर नहीं पाया था ।	-- " --
3. विद्यालय प्रशासन को सन्दर्भ सेवा एवं शैक्षिक सहयोग प्रदान करना	अंग्रेजी शिक्षण के पर्यवेक्षकों के लिए एक सप्ताह के अभिनवन कार्यक्रम
4. अंग्रेजी भाषा शिक्षण के सन्दर्भ केन्द्र के रुप में कार्य करना	जिला केन्द्र निम्नांकित सेवाओं के लिए सन्दर्भ केन्द्र का कार्य करता है।

- अंग्रेजी भाषा शिक्षण हेतु पुस्तकालय सेवा
- रेडियो पाठ एवं केसेट्स
- माध्यमिक कक्षाओं के लिए प्रश्न बैंक
- अंग्रेजी शिक्षण मार्गदर्शन
- मासिक पत्र का प्रकाशन

5. स्वयंपाठी-विशेषत: वंचित वर्ग के स्वयंपाठी छात्रों को अंग्रेजी के अनौपचारिक शिक्षण का अवसर प्रदान करना
   - जनजाति क्षेत्र के स्वयंपाठी/नियमित छात्रों का पन्द्रह दिवसीय शिक्षण कार्यक्रम
   - भाषा प्रयोगशाला ।

वर्ष की उपलब्धियाँ :- (1.1.89 से 31.12.89 तक)

1. दस दिवसीय अभिनवन कार्यक्रम - 5
   प्रशिक्षित शिक्षक - 158
2. एक वर्षीय पत्राचार सम्पर्क कार्यक्रम
   दि. 25.9.89 से प्रारंभ
   सम्भागी - 38.
3. अनुगमन/दो दिवसीय अभिनवन कार्यक्रम :- सात अध्ययन केन्द्रों पर पूर्व प्रशिक्षित शिक्षकों का अनुगमन एवं विद्यालय संगम स्तर के शिक्षकों का एक दिवसीय अभिनवन लाभान्वित शिक्षक

   अनुगमन - 132 शिक्षक
   अभिनवन - 100 शिक्षक

   232

आय-व्यय

आय	व्यय
Rs.32,500/-	32,500/- केन्द्र स्थापना के लिए आवश्यक सामग्री एवं पुस्तकालय पर व्यय
Rs. 1,04,500/-	व्यय के मद
Rs. 2,42,150/-	वेतन, संभागियों के यात्रा व्यय, कन्टिन्जेन्सी, पुस्तकालय, यात्रा-व्यय

अधिकारी - एक मुख्य सन्दर्भ व्यक्ति एवं तीन सन्दर्भ व्यक्ति

अनुभूत कठिनाइयाँ - जिला केन्द्र हेतु अलग से भवन का प्रावधान नहीं हो पाया है । परन्तु SIERT में बैठक व्यवस्था तथा भाषा प्रयोगशाला व्यवस्था उत्तम है ।

प्रशिक्षणार्थ - दो कक्ष आवश्यक हैं ।

- राज्य सरकार द्वारा केन्द्र निमित्त लिपिक एवं च.श्रे.क. का प्रावधान नहीं हो पाया है ।

- भाषा प्रयोगशाला हेतु केन्द्रीय सरकार से कुछ राशि स्वीकृत की जा सके तो भाषा प्रयोगशाला को अगले सत्र से सुचारु रुपेण आरम्भ किया जा सकता है ।

मनावैज्ञानिक आधार, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन की उपलब्धियों एवं संपादित कार्यों का विवरण । सत्र 1989-90

1. प्रशिक्षण :-

1.01 राष्ट्रीय शिक्षा के संदर्भ में निर्देशन कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण दिनांक 21.8.89 से 23.8.89 तक संस्थान में उदयपुर एवं सवाई माधोपुर के लिये आयोजित किया गया जिसमें 56 संभागियों ने भाग लिया ।

1.02 शाला परामर्शकों एवं उनके संस्थाप्रधानों की एक प्रशिक्षण कार्य गोष्ठी संस्था में दिनांक 6.9.89 से 8.9.89 तक आयोजित की गयी जिसमें 13 संभागियों ने भाग लिया ।

1.03 जोधपुर मण्डल के सात जिलों (सिरोही, जोधपुर, पाली, नागौर, जालोर, बाड़मेर, जैसलमेर) के निर्देशन कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण शिविर दिनांक 18.9.89 से 20.9.89 तक सूचना केन्द्र जोधपुर में आयोजित किया गया जिसमें 74 अध्यापक/अध्यापिकाओं ने भाग लिया ।

1.04 शाला परामर्शकों के लिये मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्रशिक्षण दिनांक 10.1.90 से 19.1.90 तक संस्थान में आयोजित किया गया । जिसका उद्देश्य कक्षा दसवीं में अध्ययन छात्र/छात्रा को कक्षा ग्यारहवीं में विषय चयन करते समय शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन दिया जा सके ।

प्रसार -

2.01 संस्थान द्वारा प्रकाशित "छात्रवृत्ति संदर्शिका" एवं निर्देशन संदर्शिका की 4000 हजार प्रतियाँ राज्य के सभी सी.उ.मा. विद्यालयों एवं माध्यमिक विद्यालयों के उपयोगार्थ भेजी गयीं ।

2.02 संस्थान द्वारा प्रकाशित फोल्डर्स भी सभी सी.उ.मा. विद्यालयों एवं माध्यमिक विद्यालयों में प्रचार प्रसार हेतु भेजे गये ।

2.03 व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण सुविधाओं संबन्धी राज्य स्तर पर 200 चार्ट्स् बनाये गये जिनको जिलेवार प्रदर्शनी कक्षा में प्रदर्शित किया गया ।

2.04 राजस्थान के सात जिलों जयपुर प्रथम, जयपुर द्वितीय, उदयपुर, कोटा, जोधपुर, बीकानेर, अजमेर के शाला पर परामर्शकों द्वारा जिला स्तरीय समारोह के अवसर पर व्यवसायोन्मुखी प्रदर्शनी लगायी गयी जिसमें निर्देशन कक्ष के अलावा आई.टी.आई. वेटेनरी, कम्प्यूटर एवं व्यावसायिक शिक्षा सम्बन्धी कक्ष लगाये गये । इनको 120000

छात्र/छात्राओं द्वारा अवलोकन कर लाभ उठाया ।

2.05 बीसवां राज्य स्तरीय निर्देशन समारोह एवं प्रदर्शनी दिनांक 29.1.90 से 31.1.90 तक गुरुनानक भवन संस्थान आदर्शनगर, जयपुर में आयोजित किया गया । इस समारोह में 92 निर्देशन कार्यकर्ताओं एवं शाला परामर्शकों द्वारा भाग लिया गया । प्रदर्शनी का नगर के 5000 छात्र/छात्राओं द्वारा अवलोकन किया गया ।

2.06 ग्रीष्मकालीन निर्देशन कार्यक्रम राज्य के 9 जिलों के 21 केन्द्रों पर दिनांक 17.5.89 से 30.6.89 तक सूचना केन्द्र सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचनालय एवं सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आयोजित किये गये जिनका राज्य के 135000 छात्र/छउत्राओं ने अवलोकन कर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त किया ।

प्रकाशनार्थ कार्य

3.01 " राजस्थान स्तर पर पायी जाने वाली प्रशिक्षण सुविधा "नामक पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार की गयी ।

4. अनुसंधान -

आलोक माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत 4 छात्रों की केस स्टेडी पर कार्य चल रहा है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसाओं के अनुसार राज्य के सभी जिलों में जिलों शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना का संकल्प दोहराया गया है । इसी संकल्प की किन्वान्विति के लिये विगत वर्षों में राज्य में इस प्रकार जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई है ।

(अ) सत्र 87-88 में नौ जिलों में (चितौड़गढ़, जालौर, जैसलमेर, उदयपुर, सिरोही, जोधपुर, जयपुर I, अलवर, झालावाड़)

(ब) सत्र 88-89 में नौ जिलो में (सीकर, बीकानेर, डूँगरपुर, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, अजमेर, झुंझुनूं, नागौर, पाली)

(स) सत्र 89-90 में शेष 10 जिलों में (धौलपुर, श्री गंगानगर, भरतपुर, चुरु, सवाई माधोपुर, जयपुर II, बाहमेर, बूँदी, टोंक, कोटा)

राज्य के 28 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के प्रस्ताव तैयार कर केन्द्र सरकार को भिजवाने में संस्थान ने अपनी भूमिका का निर्वहन किया है ।

संस्थान ने सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम तैयार कर सम्बंधित डाइटों को भिजवा दिया गया हैं साथ ही पुस्तकों, उपकरणों आदि की सूचियाँ भी बना कर भिजवाई गई हैं ।

सेवारत शिक्षक शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को निर्मित कर सभी डाइटों की भिजवाए जा चुके हैं ।

राज्य में 28 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना के बाद शैक्षिक उन्नयन के लिए सेवापूर्व एवं सेवारत सभी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन (उस जिले के लिए) डाइट ही करेगी ।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा

क्विज प्रतियोगिता आयोजन वर्ष ,1989

विद्यालय स्तर से क्षेत्रीय स्तर तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली के द्वारा वर्ष 1989 में राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा क्विज प्रतियोगिता का राष्ट्रीय स्तर पर कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत सभी छात्र/छात्राओं के लिए आयोजन किया तथा ।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर के जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ द्वारा विद्यालय स्तर से क्षेत्रीय स्तर तक इस प्रतियोगिता का आयोजन निम्न प्रकार से किया गया :-

(1) **प्रश्न निर्माण एवं प्रश्न चयन कार्यगोष्ठी** :- जनसंख्या शिक्षा क्विज प्रतियोगिता हेतु दि. 27-3-89 से दि. 1-4-89 तक 6 दिन की कार्यगोष्ठी प्रश्न निर्माण के लिए आयोजित की गई जिसमें राजस्थान के विभिन्न जिलों से 9 संभागी उपस्थित हुए । उन्होंने सात प्रकार के प्रश्न निर्मित किये जो इस प्रकार है :- (1) बहुचयनात्मक (2) एक वाक्य में उत्तर (3) सत्य/असत्य (4) सहमत/असहमत (5) एक शब्द में उत्तर (6) संक्षिप्ताक्षर विस्तार (एब्रीविएशन्स) (7) दृश्य प्रश्न ।

(2) **"कूट प्रश्न कोष" का हिन्दी रूपान्तरण** :- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली के द्वारा अंग्रेजी में एक कूट प्रश्न कोष प्राप्त हुआ जिसका हिन्दी पान्तरण श्री लक्ष्मी लाल जैन प्र.अ. रा.मा.वि. बाठेरड़ाकलां (उदयपुर) द्वारा करवाया गया ।

(3) **क्विज मास्टर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम** :- इस प्रतियोगिता हेतु प्रत्येक जिले से 2-2 क्विज मास्टर्स को प्रशिक्षित करने के लिए दि. 5-5-89 से 6-5-89 (दो दिवसीय) प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान में आयोजित किया गया परन्तु केवल 29 संभागी ही उपस्थित हुये, अतः दिनांक 5-7-89 से 6-7-89 (दो दिवसीय) कार्यक्रम का आयोजन पुनः संस्थान में किया गया तथा इस प्रकार लगभग सभी 28 जिलों के क्विज मास्टर्स प्रशिक्षित किये गये ।

(4) **शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी प्रशिक्षण कार्यक्रम** :- जिला स्तर पर जनसंख्या शिक्षा क्विज प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए समस्त जिलों से प्रत्येक जिले से 1 शै.प्र. प्रभारी को संस्थान में दि. 10-7-89 (एक दिवसीय) को प्रशिक्षित किया गया जिसमें इस प्रतियोगिता के संचालन हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये ।

(5) **"कूट प्रश्न कोश" एवं "प्रश्न कार्डस" का मुद्रण** :- माह जून में कूट प्रश्न कोष तथा माह

जुलाई में प्रश्न कार्डस का मुद्रण, प्रकोष्ठ द्वारा करवाया गया तथा राजस्थान के सभी मा./उ.मा. विद्यालयों की संख्यानुसार "कूट प्रश्न कोष" को वितरित किया गया । प्रश्न कार्ड के सैट में 6 प्रकार के प्रश्न तथा प्रति सैट में 12 कार्डस तथा प्रत्येक जिले में ऐसे विभिन्न प्रश्नों के 16 सैट्स उपलब्ध कराए गए ।

प्रतियोगिता का आयोजन निम्न स्तरों पर प्रकोष्ठ द्वारा किया गया :-

विद्यालय स्तर :- राजस्थान राज्य के मा./उ.मा. विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 एवं 10 के सभी छात्र/छात्राओं के मध्य विद्यालय के प्र.अ. के मार्गदर्शन में यह प्रतियोगिता अगस्त के द्वितीय एवं तृतीय सप्ताह में आयोजित की गई तथा प्रत्येक विद्यालय से 3 छात्र/छात्राओं को एक टीम जिला स्तरीय प्रतियोगिता हेतु चयन की गई । इस प्रतियोगिता हेतु शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी के माध्यम से कूट प्रश्न कोष की एक मुद्रित प्रति प्रत्येक विद्यालय को प्रेषित की गई जो कि विद्यालय प्रतियोगिता का आधार थी ।

जिला स्तर :- प्रत्येक जिले पर जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन सितम्बर के द्वितीय एवं तृतीय सप्ताह में किया गया । प्रतियोगिता विद्यालयों की संख्यानुसार (जिले में) विभिन्न राउन्डस् में पूरी की गई । एक राउन्ड 30 मिनट का था । प्रतियोगिता का संचालन संस्थान से प्रशिक्षित शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी ने किया तथा प्रतियोगिता आयोजित करने का कार्य संस्थान से प्रशिक्षित क्विज मास्टर/स्कोरर/टाइम कीपर आदि ने किया । जिला स्तर पर प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाली टीम्स को क्रमशः 400, 300, एवं 200 रु. नकद पारितोषिक दिये गये । कुल 28 जिलों में से 27 जिलों में यह प्रतियोगिता सम्पन्न हुई । प्रत्येक जिले में प्रतियोगिता को आयोजित करने का आधार प्रश्न कार्डस रहे । प्रश्न कार्ड के सैट में 6 प्रकार के प्रश्न प्रति सैट में 12 कार्डस तथा प्रति जिले में ऐसे विभिन्न प्रश्नों के 16 सैटस् उपलब्ध कराए गए । प्रत्येक जिले में 18 स्लाइडस् का सैट भी भेजा गया जिस पर प्रश्न निर्मित कर भेजे गए ।

राज्य स्तर :- राज्य स्तर पर इस प्रतियोगिता का आयोजन संस्थान में दि. 18 एवं 19 अक्टूबर 89 को किया गया जिसमें 21 जिलों की टीमों ने भाग लिया जो कि जिला स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहीं थी। प्रतियोगिता पाँच राउन्ड्स में पूरी हुई । इस कार्यक्रम की विडियो फिल्म भी बनवाई गई । प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाली टीमों को क्रमशः 900, 600 व 300 रु. के नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए । श्री सनातन धर्म सी.उ.मा.वि. भरतपुर की टीम प्रथम स्थान पर रही ।

क्षेत्रीय स्तर :- संस्थान के जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ की क्षेत्रीय स्तर की प्रतियोगिता को N.C.E.R.T. नई दिल्ली के सौजन्य से आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । प्रतियोगिता दि. 2 फरवरी 90 को संस्थान में आयोजित की गई जिसमें पाँच राज्यों :- पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, चंडीगढ़, एवं राजस्थान की टीमों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर आने वाली टीम को क्रमशः 1200, 900 एवं 600 रु. का नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए । प्रथम स्थान पर चंडीगढ़, द्वितीय पर हरियाणा एंव तृतीय स्थान

पर राजस्थान की टीमें रहीं । प्रतियोगिता की विडियो फिल्म भी बनाई गई। प्रतियोगिता का

आयोजन जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ ने किया तथा संचालन रोहतक आकाशवाणी के श्री अवतार कृष्ण पाराशर द्वारा किया गया ।

जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण शिविर

माध्य एवं उ.मा. विद्यालयों के शिक्षकों हेतु जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण शिविर माह जनवरी 90 में विभिन्न जिलों के 17 केन्द्रों पर आयोजित किए गए । इन केन्द्रों में प्रत्येक केन्द्र पर 60 अध्यापक/अध्यापिकाओं को प्रशिक्षित करने को व्यवस्था की गई । प्रत्येक केन्द्र पर 3 संदर्भ व्यक्ति (विभिन्न विषयों से सम्बन्धित संभागियों को प्रशिक्षित करने हेतु जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा अपने अपने जिले में नियुक्त किया गया । शिविर निदेशक का कार्य सम्बंधित विद्यालय के (शिविर केन्द्र) प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या ने किया । प्रत्येक केन्द्र पर 7000 रु. शिविर आयोजित करने हेतु प्रकोष्ठ से भेजे गए ।

(ब) यूनिसेफ सहायता प्राप्त प्रायोजनाएँ
(1) पी. आई. ई. डी.
(2) पूर्व प्राथमिक शिक्षा
(3) केप प्रायोजना

पी. आई. ई. डी. (यूनिसेफ प्रोजेक्ट)

राज्य के कोटा जिले की छबड़ा पंचायत समिति में एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली के तत्वावधान में वर्ष 1987 से आरम्भ यूनिसेफ प्रोजेक्ट पी. आई. ई. डी. के अन्तर्गत पंचायत समिति क्षेत्र के समस्त प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया । इस पंचायत समिति क्षेत्र में विद्यमान विद्यालयों की संख्या 134 है ।

प्रोजेक्ट के अन्तर्गत अब तक छबड़ा पंचायत समिति क्षेत्र के समस्त विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को सर्वे हेतु दो दिवसीय प्रशिक्षण एवं विकलांग बालकों की आवश्यकतानुसार शिक्षण कार्य करने हेतु 5 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया है । साथ ही कुछ चयनित अध्यापकों को 6 सप्ताह का प्रशिक्षण भी दिया गया है ।

वर्ष 1989-90 में पंचायत समिति क्षेत्र के ऐसे अध्यापकों के लिये जिन्होंने किसी कारणवश पूर्व में 5 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त न किया हो या जो अध्यापक स्थानान्तरित होकर आये हों के लिये 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 60 अध्यापकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । छबड़ा पंचायत समिति में कार्यरत चयनित ३३ अध्यापकों को क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर में 6 सप्ताह का प्रशिक्षण दिया गया ।

प्रोजेक्ट की क्रियान्विति हेतु पंचायत समिति क्षेत्र में प्रोजेक्ट टीम के सदस्यों के पद स्थापन की कार्यवाही कर एक प्रोजेक्ट ऑफिसर, दो विशिष्ट शिक्षक एवं एक सांख्यिकी सहायक के पद पर व्यक्तियों को पद स्थापित करा प्रोजेक्ट को गति प्रदान की गई ।

विकलांग बालकों के अभिभावकों की एक मीटिंग आयोजित की गई जिसमें लगभग 100 अभिभावकों ने भाग लिया । इसमें एकीकृत शिक्षा योजनानुसार विकलांग बालकों को दी जाने वाली सुविधाओं के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई । साथ ही अभिभावकों की उनके विकलांग बालकों के प्रति विशेष दायित्वों का निर्वाह करने हेतु उत्प्रेरित किया गया ।

छबड़ा पंचायत समिति के निवासियों एवं जन साधारण में प्रोजेक्ट के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से चयनित 10 केन्द्र विद्यालयों में मीटिंग आयोजित कर लगभग 870 लोगों को एन.सी.इ.आर.टी, नई दिल्ली, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर के विशेषज्ञों की संक्षिप्त वार्ताओं द्वारा प्रोजेक्ट की जानकारी दी गई ।

अध्यापकों द्वारा किये गये सर्वे के आधार पर विद्यालयों में अध्ययनरत 413 बालकों की पहचान का कार्य किया गया । जिला पुनर्वास केन्द्र कोटा (समाज कल्याण विभाग) में अभीष्ट पदों पर विशेषज्ञों की नियुक्ति न होने से इन बालकों की जाँच का कार्य अब मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, कोटा के सहयोग से पूरा किया जा रहा है । अब तक 200 बालकों की जाँच का कार्य विशेषज्ञों द्वारा पूर्ण कर लिया गया है ।

पंचायत समिति छबड़ा में कार्यरत 9 चयनित अध्यापक एक वर्ष का बहुविकलांगता सम्बन्धी प्रशिक्षण क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर में प्राप्त कर रहे हैं ।

यूनिसेफ प्रायोजना (केप)

सत्र 1989-90 के सम्पादित कार्यों का विवरण

प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम प्रायोजना "केप" का तात्पर्य प्राथमिक शिक्षा की सार्वजनीन बनाने की दिशा में एक सशक्त प्रयोग है ।

प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम प्रायोजना "केप" की नींव जे. रत्नायके, यूनेस्को, बैंकाक के शिक्षा सलाहकार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली और राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर के सहयोग से सन् 1979 में रखी गई । राजस्थान में इस प्रायोजना पर सन् 1980 से कार्य प्रारम्भ हुआ । इस प्रायोजना को क्रियान्वित करने के लिये निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये :-

1. सार्वजनीन शिक्षा की धीमी गति को तेज करना ।
2. विशेषकर उन बालकों की शिक्षा व्यवस्था करना जिन्हें कभी विद्यालय जाने का अवसर नहीं मिला अथवा जो बीच में ही विद्यालय छोड़ गये ।
3. अत्यन्त विरल आबादी वाले क्षेत्रों में 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग वाले बालक को सम्भव हो

तो पूर्णकालिक और यदि आवश्यक हो तो अंशकालिक शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराना ।
4. विकेन्द्रित शिक्षाक्रम तैयार करना ।
5. विकेन्द्रित शिक्षाक्रम के अनुसार अधिगम साहित्य तैयार करना ।

अब यह प्रायोजना अपने अंतिम चरण में चल रही है । प्रथम चरण में साहित्य सृजन हुआ, दूसरे चरण में केन्द्र स्थापित हुए और तृतीय चरण में अब मूल्यांकन कार्य चल रहा है । प्रथम चरण में निम्नलिखित साहित्य सृजन हुआ :-

भाषा माड्यूल्स सूची

(1) हमारे शरीर के अंग तथा दैनिक उपयोग की कुछ वस्तुएँ
(2) हमारा घर तथा हमारे घर की कुछ वस्तुएँ ।
(3) हमारे आस-पास का वातावरण और हमारी कुछ क्रियायें ।
(4) कुछ शब्द पढ़ना - लिखना सीखें ।
(5) कुछ शब्द और वाक्य पढ़ना लिखना सीखें ।
(6) कुछ और शब्द और वाक्य पढ़ना और लिखना सीखें ।
(7) कुछ संयुक्ताक्षर पढ़ना लिखना सीखें ।
(8) कुछ और संयुक्ताक्षर पढ़ना लिखना सीखें ।
(9) कुछ और पढ़ना लिखना सीखें । कुछ में घुंडी हटाकर और अन्त में हलन्त लगाकर बनने वाले ।
(10) कुछ और संयुक्ताक्षर पढ़ना, लिखना सीखें (र मिलने पर बनने वाले)
(11) प्रकृति के वरदान
(12) भारत देश महान्

गणित :-

(1) आओ सीखें 9 तक की संस्थाएँ और इनका जोड़-घटाव
(2) आओ सीखे 20 तक की संख्याएँ और जोड़-घटाव
(3) आओ सीखें 100 तक की संख्यायें और गणितीय क्रियाएँ
(4) आओ सीखें एक लाख तक संख्याएँ गणितीय सक्रियाएँ और संख्याओं के गुणा ।
(5) भिन्नात्मक संख्याएँ और गणितीय संक्रियायें सीखें
(6) दशमलव में गणितीय संक्रियाएँ और मापन सीखें
(7) ज्यामितीय आकृतियों की पहचान और उनका मापन सीखें

पर्यावरण माड्यूल्स की सूची :-

(1) 12 चार्ट (2) 15 चार्टस (3) 27 चार्टस (4) हम और हमारा परिवार (5)

हमारे आस-पड़ौस का जन जीवन (6) पृथ्वी की कहानी अपनी जबानी (7) बच्चों के सामान्य रोग (8) घर की सफाई (9) मुर्गीपालन (10) मुर्गी को रोगों से बचाओ (11) गुलाब उगाओ आमदनी बढ़ाओ (12) हमारी पंचायत (13) हमारी रेलें अपनी रेलें (14) हमारी नगर पालिका (15) अच्छे लोग अच्छा समाज (16) हम बढ़ेंगे देश बढ़ेगा । (17) हमारा अस्पताल (18) पृथ्वी और मानव का विकास (19) राजस्थान के प्रमुख तीर्थ स्थल (20) भेड़ पालन (21) गोपाल ने गाय पाल कर अपनी आय बढ़ाई (22) भूमि को उपजाऊ कैसे बनाएँ (23) गेहूँ की पैदावार कैसे बढ़ायें । (24) टमाटर की खेती (25) बाजरे की खेती (26) मक्का की खेती (27) ज्वार की खेती क्यों करें (28) पपीता कैसे उगायें ? (29) पपीता उगाओ लाभ उठाओ (30) नीबू कैसे उगाएँ (31) अमरुद उगाइए रोजगार पाइए (32) आम का अचार कैसे डालें (33) कपड़ों पर लगे धब्बे कैसे छुड़ाऐं (34) स्वादिष्ट पापड़ बनाएँ (35) नीबू का सफर पेड़ से पेट तक (36) पतंग व्यवसाय (37) मोहन की सब्जी की दुकान (38) मिट्टी के बरतन बनाने का व्यवसाय (39) कपड़े धोने का साबुन कैसे बनायें (40) कपड़ों पर छपाई का धन्धा (41) दरी कैसे बनाएँ (42) रामू ने मोढ़ा बनाना सीखा (43) रद्दी कागज का उपयोग (44) जल ही जीवन (45) मलेरिया की रोकथाम (46) अन्धापन कैसे दूर करें (47) सावधानी हटी, दुर्घटना घटी (48) हैजे से सावधान (49)प्रदूषण से बचें (50) विकलांगता हटाइये काम पर आइये (51) नारु रोग (52) अंधविश्वासों से बचें (53) दहेज प्रथा (54) आओ पेड़ लगायें ।

दूसरे चरण में सत्र 1986 में 33 केन्द्र अनौपचारिक शिक्षा केप के अन्तर्गत एवं 1988 में 460 केन्द्र खोले गये । उक्त 33 केन्द्र शि.प्र.वि. के माध्यम से कार्यरत है एवं शेष 460 केन्द्र जिला परिषद् के माध्यम से चल रहे हैं । नये खोले गये केन्द्रों में कार्यरत अनुदेशकों / अनुदेशिकाओं एवं सुपरवाइजर को प्रशिक्षित किया जा चुका है ।

सत्र 1989-90 में प्रायोजना के अन्तर्गत सम्पन्न कार्य प्रशिक्षण, विकास अनुसंधान प्रचार का विवरण निम्नानुसार है -

क्र.सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम का नाम	स्थान	आयोजन की तिथि	प्रशिक्षण प्राप्त संभागी संख्या	संदर्भ व्यक्ति संख्या विशेषज्ञ	विशेष विवरण
1.	अनुदेशक प्रशिक्षण कार्यक्रम 460 अनौप.शि.केन्द्र (उदयपुर, सिरोही, पाली जिले)	संस्थान होस्टल देवाली उदयपुर	17.4.89 से 26.4.89	33	4	
2.	" (जोधपुर, बाड़मेर, पाली)	आर.टी.सी. गोवर्धन विलास, उदयपुर	3.5.89 से 12.5.89	17	4	
3.	" (बीकानेर, श्री गंगानगर, चुरु)	आर.टी.सी. पूंगल रोड बीकानेर	18.5.89 से 27.5.89	28	3	
4.	" (अजमेर, नागोर,चुरु)	लो.मा.ति.शि. प्र.महा डबोक (उदयपुर)	12.6.89 से 21.6.89	17	2	
5.	" (जैसललमेर, भीलवाड़ा,झुंझुनू)	आर.टी.सी. गोवर्धन विलास उदयपुर	26.6.89 से 5.7.89	30	6	
6.	" (कोटा, बून्दी, झालावाड़)	संस्थान उदयपुर	28.8.89 से 6.9.89	43	3	
7.	टोंक, जयपुर, झालावाड.	- "-	16.10.89 से 25.10.89	40	4+1	
8.	पूर्व में प्रशिक्षित अनुदेशक अभिनवन प्रशिक्षण कार्यक्रम	एस.टी.सी.(म.) बून्दी	17.7.89 से 21.7.89	16	4	
9.	केप-प्रभारी अभिनवन प्रशिक्षण कार्यक्रम	एस.टी.सी.भरतपुर	26.7.89 से 28.7.89	21	2	
10.	अधिगम केन्द्र व्यवस्था के लिये पंचायत समिति सुपरवाइजर प्रशिक्षण कार्यक्रम	एस.टी.सी अलवर	7.6.89 से 9.6.89	20	3	
11.	सहायक परियोजना अधिकारी अभिनवन प्रशिक्षण कार्यक्रम	संस्थान उदयपुर	29.5.89 से 31.5.89	16	-	

विकास (सामग्री निर्माण) -

1.	स्तर दो पाठ्यक्रम विकास कार्य गोष्ठी	संस्थान उदयपुर	18.10.89 से 25.10.89	4
2.	प्रश्न निर्माण कार्यगोष्ठी	"	11.9.89 से 18.9.89	4
3.	"	"	21.9.89 से 28.9.89	5
4.	राज्य स्तरीय सलाहकार समिति बैठक	आदर्शनगर गुरुनानक भवन संस्थान, जयपुर	27.10.89 से 29.10.89	12

अनुसधान सर्वेक्षण

(1) केप साहित्य उपयोगिता का अध्ययन

(2) कूल 493 केप के अन्तर्गत चल रहे केन्द्रों से data सकंलन कर उनका compilation कर एन.सी.इ.आर.ई.टी. नई दिल्ली को प्रस्तुत किया ।

प्रसार - इस वर्ष 10,000 माड्यूल का वितरण सभी 493 केन्द्रों को जिला परिषद् एक शि.प्र.वि. के माध्यम से किया गया ।

प्रकाशन - Nil

(शिक्षा क्रम एवं मूल्यांकन विभाग - 9)

पूर्व प्राथमिक शिक्षा (ECE)

संस्थान में यूनिसेफ प्रायोजना - 4 के अन्तर्गत पूर्व प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में 1989 में निम्नानुसार कार्य सम्पादित हुए ।

1. 3 से 6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की देखभाल एवं शिक्षा का दायित्व निभाने वाली 65 अनुदेशिकाओं के लिये 5 दिन का अभिनवन कार्यक्रम " स्वास्थ्य एवं पोषाहार " पर विशिष्ट रुप से आयोजित किया गया । एवम् सम्बन्धित विद्यालयों के 50 प्रधानाध्यापकों के लिए भी 3 दिन का कार्यक्रम आयोजित कर केन्द्रों की गतिविधियों में सहयोग एवं मार्ग दर्शन प्रदान करने हेतु मुख्य बिन्दुओं पर विचार विमर्श किया गया ।
2. गाँवों के प्रमुख कार्य कर्ताओं की 2 बैठकें संस्थान में आयेजित कर उन्हें बच्चों के लिये पर्वू प्राथ. शिक्षा की आवश्यकता अनुभव करवाई गई और इसके विस्तार हेतु उनके सहयोग की अपील की गई । दोनों बैठकों में कुल 50 सम्भागी रहे ।
3. विद्यालयों में अभिभावक सम्पर्क कार्यक्रम का आयोजन किया गया । जिसमें बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम उनके द्वारा बनाई गई कृतियों का प्रदर्शन किया गया और अभिभावकों के लिये भी कार्यक्रम आयोजित कर उनका सहभागित्व प्राप्त किया गया । सभी विद्यालयों में आने वाले कुल अभिभावकों की संख्या 2500 के लगभग रही ।
4. आई.सी.डी.एस. द्वारा संचालित आंगन वाड़ियों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के घटक की सुदृढ़ करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण केन्द्रों के अनुदेशकों, आंगन वाड़ी केन्द्रों की महिला पर्यवेक्षकों एवं बाल विकास परियोजना अधिकारियों के लिये भी अलग अलग अभिनवन कार्यक्रम आयोजित किये गये । इनकी कुल संख्या 60 रही । संस्थान में पूर्व प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित आशुरचित खेल एवं शिक्षण सामग्री की लेबोरेट्री स्थापित की हुई है। उसमें इस वर्ष कठपुतली द्वारा शिक्षण हेतु एक मिनि थियेटर और 20 नई कठपुतलियां बनाई गईं।

बाल साहित्य की निम्नलिखित चार पुस्तकों का प्रकाशन इस वर्ष हुआ

1. वीर मुन्ना
2. गुड्डा गुड़िया
3. इन्दर राजा पानी दो ।
4. चलो चलें भई मेले में

प्रत्येक की 2000 इकाई प्रकाशित करवाई गईं ।

संस्थान में अब तक प्रकाशित करवाए गये बाल-साहित्य, निर्देशन साहित्य, चार्टस, कार्डस आदि का उन सभी विद्यालयों/संस्थाओं को दिये जाने का निश्चय किया गया है । और इस दिशा में कार्यवाई की जा रही है ।

अध्याय 5

शिक्षा में गुणवत्ता वृद्धि के लिए "अध्ययन वृत्त" एक नवाचार

"अध्ययन वृत्त" अध्यापकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का एक ऐसा विचार मंच है जहां वे आपस में बातचीत एवं चर्चा परिचर्चा द्वारा एक दूसरे के अनुभूत-विचारों से लाभान्वित होने के साथ-साथ समस्याओं को हल करने में सहयोग प्राप्त होता है । वहीं व्यक्ति अपने जिम्मे के कार्य को अच्छे रूप में निष्पादित करता है तथा अपने कार्यों में निपुणता भी प्राप्त करता है ।

शिक्षा जगत् में समय-समय पर अनेकानेक नवाचारों एवं शैक्षिक विचारधाराओं का प्रादुर्भाव होता रहा है । शिक्षाकर्मी व्यक्ति विशेषकर जो अध्ययन अध्यापन एवं प्रशिक्षण में शोधरत है, उनके लिए शैक्षिक विचार विमर्श अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण एवं अपेक्षित है । इस दृष्टि से नवीन चिन्तन उभरे, यही सोचकर संस्थान में एक अध्ययन-वृत्त (विचार मंच) की स्थापना की गई । निश्चित रूप से यह एक सुविचारित एवं सुनियोजित उपक्रम है जिसका श्रेय श्री सी.के. नागर, निदेशक, संस्थान की जाता है, जिनकी सूझबूझ, तत्परता और दिशाबोध के कारण संस्थान में विचार मंच की स्थापना संभव हो सकी ।

शिक्षा की चुनौतियों का समाधान खोजने और कार्य की गुणवत्ता में वृद्धि की दृष्टि से इस नवाचार द्वारा जहां शिक्षा शास्त्रियों के अनुभवों का लाभ उठाया जाता है वहीं संस्थान के अकादमिक अधिकारियों के चिन्तन को उभारने हेतु एक शैक्षिक मंच प्रदान करने का प्रयास किया है । इस अध्ययन वृत्त के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये थे ।

- शिक्षा की चुनौतियों के समाधान ढूंढना ।
- शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि का प्रयास करना ।
- प्रबुद्ध शिक्षाशास्त्रियों के ज्ञान का एवं अनुभव का लाभ उठाना ।
- अकादमिक अधिकारियों के चिंतन की प्रेरित उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना ।
- शैक्षिक नवाचारों को व्यावहारिक दृष्टि से गति प्रदान करना ।
- स्थानीय संस्थान के शैक्षिक वातावरण को अभिप्रेरित कर समुचित दिशाबोध प्रदान करना ।
- शिक्षा के प्रति उत्तरदायिता में वृद्धि करना ।

इस अध्ययन वृत्त के अन्तर्गत प्रत्येक माह के प्रथम सप्ताह के सोमवार को मासिक बैठक आयोजित की जाती है । इसका समय प्रातः 11 से 1.30 मध्यान्ह तक सुनिश्चित रहता है । बैठक में लगभग 60 मिनट तक वार्ता तथा तदनुकूल प्रश्नोत्तर हेतु विचार-विमर्श हेतु पर्याप्त समय दिया जाता है । इसमें यथासंभव संस्थान के बाहर से आमंत्रित मुख्य अतिथि वक्ता एवं संस्थान में सेवारत अकादमिक अधिकारियों द्वारा वार्ता, पत्रवाचन एवं प्रदर्शन का प्रावधान रहता है । वार्ता अथवा पत्रवाचन का विषय सामयिक शैक्षिक चुनोतियों, समस्याओं तथा शैक्षिक नवाचारों के अभीष्ट व्यावहारिक पक्ष से अनुबंधित रहता है फिर भी वार्ताकार को अध्ययन

वृत्त की ओर से एक विषय सूची भी अपनी वार्ता को सुनिश्चित करने हेतु सुझाव स्वरूप प्रेषित की जाती है, किन्तु वार्ता के विषय का अन्तिम चयन शैक्षिक गुणात्मकता की दृष्टि से वार्ताकार द्वारा निर्धारित किया जाता है । इतना ही नहीं प्रचार एवं प्रसार वार्ता अथवा पत्रवाचन को टेप रिकार्डर पर टेप करने के पश्चात् उसकी आशयगत अभिव्यक्ति की रपट के रूप में शिविरा, नया शिक्षा तथा शिक्षा जगत् की अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाने का प्रयास किया जाता है। वार्ता के पश्चात् उसकी अपेक्षित सूचना प्रकाशित करवाने का प्रयास भी किया जाता है । इस प्रकार अध्ययन वृत्त को शैक्षिक विचार मंच का स्वरूप प्रदान किया गया है ।

अध्ययन वृत्त का शुभारंभ दिनांक 10-4-89 को हुआ। आज तक निम्नांकित विषयों पर वार्ता/परिचर्चा हो चुकी है ।

क्र.सं.	वार्ता विषय	माह	वार्ताकार
1.	शिक्षा का लोकतांत्रिक स्वरूप	अप्रेल, 89	डा. राजेन्द्रमोहन भटनागर
2.	शिक्षा में जीवन मूल्य	मई, 89	के.एस.सुरेश, विभागाध्यक्ष रसायन विज्ञान उदयपुर वि.वि.
3.	सम्यक् शिक्षा	मई, 89	श्री सुरेन्द्र शर्मा, अनु.अधिकारी
4.	समाज के वंचित वर्ग की शिक्षा व्यवस्था	जून, 89	डा.एल.के. ओड
5.	उपनिषद्कालीन शिक्षण व्यवस्था की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	जुलाई, 89	महन्त मुरली मनोहर शरण जी
6.	विज्ञान अध्यात्म	जुलाई, 89	डा. दौलत सिंह कोठारी
7.	समाज की शिक्षा एवं शिक्षक से अपेक्षाएँ	अगस्त, 89	श्री.पी.एस.मुर्डिया
8.	दूरस्थ शिक्षा और लचीलापन	सितंबर,89	डा.ओंकारसिंह देवल
9.	विदेशों में शिक्षा (अनुभव)	अक्टूबर,89	प्रो. जी.वी.दामले एवं शिव किशोर सनादृय भंवर लाल सेठ
10.	प्रभावी शिक्षण	दिसम्बर, 89	डा. आर.एस.शुक्ला
11.	वर्तमान संदर्भ में खुला विश्वविद्यालय की भूमिका	जनवरी, 90	डा. श्रीमती सुषमा सिंघवी
12.	शैक्षिक अनुसंधान क्यों और कैसे	फरवरी, 90	प्रो. बी.डी. श्रीवास्तव
13.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी में नये आयाम	मार्च, 90	डा. ओंकारसिंह राठौर
14.	शिक्षा और भारतीय संस्कृति	अप्रेल, 90	श्री नन्द चतुर्वेदी

अध्ययन वृत्त के अन्तर्गत सम्पन्न कार्यक्रम/वार्ता/परिचर्चाओं का सार रूप यहां प्रस्तुत किया जा रहा है ।

कोठारी आयोग ने अध्यक्ष एवं वर्तमान में जवाहरलाल नेहरु विश्विद्यालय के कुलपति डा. दौलत सिंह कोठारी ने "ज्ञान एवं जीवन मूल्य" विषय पर बोलते हुए बताया कि महापुरुषों

अथवा महान् देशों से सबसेबड़ी शिक्षा हमें यही मिलती हे कि हमारे कार्य का क्षेत्र चाहे जो हो, सभी महान प्रयासों का आधार नैतिक एवं आध्यात्मिक ही होता है । चरित्र का निर्माण करना ही शिक्षा की मूल भूमिका है । दुर्भाग्य है कि शिक्षा की इस अवधारणा को समुचित महत्त्व नहीं मिलता । लेकिन अब शिक्षा और विशेषतः विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को विकसित करने की चेतना निरन्तर बढ़ रही है । "शायद शिक्षा का सबसे पहला काम यह है कि हम इससे एक जीवन्त शक्ति बनाएँ तथा मनुष्य के मस्तिष्क में शान्ति की मोर्चाबन्दी कैसे की जाए ? हमारे युग में गांधी जी ने यह रास्ता बताया है । इसमें शिक्षा को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है, लेकिन अभी इस दिशा में एक गंभीर शुरुआत करनी शेष है । हमें अहिंसा और विज्ञान दोनों की आवश्यकता है । अहिंसा और विज्ञान के बिना मानव जाति का कोई भविष्य नहीं है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य ने "सफल शिक्षण" विषय पर बोलते हुए डॉ. आर.एस. शुक्ला, प्राचार्य, विद्याभवन शिक्षक महाविद्यालय, उदयपुर ने बताया कि कोई भी शिक्षण तभी प्रभावी माना जायेगा जबकि कक्षा में अधिक से अधिक अधिगम हो । इसके लिए यह जरुरी है कि शिक्षक सही शिक्षण प्रतिमान का चयन करें । शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में टीचिंग लर्निंग स्ट्रेटेजीज, शिक्षण के आयाम, शिक्षण स्तर टीचिंग मॉडल्स इत्यादि बिन्दुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला ।

वर्तामान संदर्भ में खुले विश्वविद्यालय की भूमिका विषय पर बोलते हुए डा. (श्रीमती) सुषमा सिंघवी, निदेशक, क्षेत्रीय केन्द्र कोटा खुला विश्वविद्यालय ने बताया कि सामाजिक रुपान्तरण एवं राष्ट्रीय विकास में सहयोग प्रदान करने की दृष्टि से खुले विश्वविद्यालय को अभी बहुत कुछ करना होगा । आज की परिस्थितियों में खुले विश्वविद्यालय की आवश्यकता महसूस की जा रही है । संस्थान निदेशक, श्री. सी.के.नागर ने संबोधित करते हुए बताया कि संस्थान यह सोचे कि क्या मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था संप्रत्यय 10 वर्षीय विद्यालय व्यवस्था पर भी लागू किया जावे । क्या हम इस व्यवस्था से राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकेंगे ? आपने बताया कि सामाजिक परिवर्तन के लिए युवा पीढी की तैयार करने में विश्वविद्यालय सफल हो रहे हैं ।

"शैक्षिक प्रौद्योगिकी के नये आयाम" विषय पर डा. ओंकार सिंह राठोर, निदेशक कृषि विस्तार निदेशालय, उदयपुर ने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि शिक्षा सर्व सुलभ बने एवं शिक्षण एक सुखद घटना बने इसके लिए शैक्षिक, प्रौद्योगिकी, सोफ्टवेयर, हार्डवेयर एवं टोफ्लर के विचारों को विस्तार से बताया । आपने ब्रेनमेपिंग, प्रोग्राम लर्निंग, मेथेमेटिक्स तथा ड्यूरोस्टिक मेथड पर भी प्रकाश डाला । श्री सी.के.नागर, निदेशक, संस्थान ने इवान एलिच के विचारों को बताते हुए बताया कि प्रकृति से बढ़कर कोई शिक्षक नहीं हो सकता । बच्चे को प्रकृति के नजदीक लाने के लिए विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी का उपयोग करना चाहिए । आज टेक्नोलॉजी कक्षा-कक्ष की देहरी पर दस्तक दे रही है । अतः शिक्षक अधिक से अधिक शोफ्टवेयर का निर्माण करें एवं हार्डवेयर का उपयोग करें ।

"दूरस्थ शिक्षा और लचीलापन" विषय पर बोलते हुए डॉ. ओ.एस.देवल. प्राचार्य, क्षेत्रीय महाविद्यालय, अजमेर ने कहा कि लगभग सौ वर्ष पूर्व शिक्षा प्रशासन का ढाँचा सेना के प्रशासन के ढाँचे जैसा था । इस ढाँचे ने उच्च अधिकारी आदेश देते थे और नीचे के अधिकारी उसका अक्षरशः पालन करते थे । उन्हें इन आदेशों की समीक्षा करने तथा उसमें परिवर्तन की स्वतंत्रता नहीं रहती है । यदि वातावरण में कोई परिवर्तन न हो और परिस्थितियां ज्यो की त्यों बनी रहे तो प्रशासन को यह संरचना सर्वश्रेष्ठ है । किन्तु ऐसा होता नहीं है । प्रशासन का दूसरा ढाँचा कार्य आधारित है । इसमें एक काम किसी व्यक्ति या समूह को सौंपा जाता है और कार्य की पूर्णता पर वह उपसंरचना समाप्त हो जाती है । यह ढांचा पूर्व ढांचे की अपेक्षा अधिक अच्छा है। प्रशासन के तीसरे ढांचे के अनुसार कार्यकारी इकाइयों को अधिक स्वतंत्रता दी जाती है । आपने प्रशासन में लचीलेपन को आवश्यक बताया । पत्राचार पाठ्यक्रम, शिक्षार्थी की स्वायत्तता,ओपन स्कूल, दूरस्थ शिक्षा, पर विस्तार से प्रकाश डाला । संस्थान निदेशक श्री सी.के. नागर ने कहा कि औपचारिक शिक्षा की कठोरताओं के कारण शिक्षा को हम सब तक नहीं पहुंचा सके । शिक्षा व्यवस्था में लचीलापन लाकर हम शिक्षा को प्रत्येक शिक्षार्थी तक पहुँचा सकते हैं। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षार्थी की स्वायत्तता तथा छात्र-केन्द्रित शिक्षा को महत्त्व दिया गया है ।

"शैक्षिक अनुसंधान क्यों और कैसे" विषय पर श्री बी.डी. श्रीवास्तव ने विचार प्रस्तुत करते हुए शोध समस्या चयन, प्राक्कल्पना निर्माण, न्यादर्श चयन एवं उपकरणों के चयन पर विस्तार से बताया । आपने कई शैक्षिक समस्याओं के उदाहरण देकर उनकी रुपरेखा पर चर्चा की । क्रियात्मक अनुसंधान एवं प्रयोगात्मक शोध के क्षेत्र में कार्यरत शोधकर्ताओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था का आवश्यक बताया ।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में शिक्षा का लोकतांत्रिक स्वरुप कैसा होना चाहिए ? इस पत्र वाचन द्वारा श्री राजेन्द्र मोहन भटनागर ने शिक्षा को सर्वहारा क्रांति के सूत्रपात से प्रारंभ करते हुए आज के परिप्रेक्ष्य में उन स्थितियों को उद्घाटित किया जो लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है । स्वर्गीय डा. श्री एल.के. ओड ने समाज के वंचित वर्ग शिक्षा व्यवस्था को समाज की आवश्यकताओं के अनुसार ढालने हेतु एवं कार्य योजनाएं बनाकर पिछड़े वर्ग को शिक्षा का लाभ पहुँचाने का प्रयासों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में सारगर्भित वार्ता दी । उल्लेखनीय है कि संस्थान को उनके अमूल्य विचारों से लाभ प्राप्त होने का यह अन्तिम भाषण था । इसके एक माह बाद ही यह शिक्षा शास्त्री दिवंगत हुए ।

जहां विज्ञान और अध्यात्म पर श्री डी.सी.कोठारी, ने अपनी वार्ता को गांधीजी के शिक्षा दर्शन से जोड़ते हुए अध्यात्म के जीवन मूल्यों को शिक्षा का आधार बनाने पर बल दिया वहीं शिक्षा में जीवन मूल्यों पर श्री के.एस. सुरेश विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान, सुखाड़िया युनिवर्सिटी तथा सम्यक् शिक्षा पर श्री सुरेन्द्र ने अपनी वार्ताएँ दी ।

समाज में शिक्षा एवं शिक्षक से अपेक्षाएं विषय पर श्री पी.एस. मुर्डिया ने अपनी वार्ता देकर समाज में शिक्षक का सम्मान शिक्षकीय दायित्वों के निर्वहन की कसौटी बताते हुए जवाब

देही के सिद्धान्त पर प्रकाश डाला ।

विदेश यात्रा से लौटे प्रो. जी.वी. दामले, श्री शिव किशोर सनाढ्य एवं श्री भंवरलाल सेठ ने विदेशों में शिक्षा विषय पर अपने अनुभव-जन्य विचारों से संस्थान परिवार को अवगत कराया।

महन्त मुरली मनोहर शरण ने उपनिषद्कालीन शिक्षण व्यवस्था की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता विषय पर अपने विचार व्यक्त किए ।

अध्ययन वृत्त का यह कार्यक्रम निर्बाध रुप से संचालित हो रहा है । यहाँ यह उल्लेख करना भी उचित होगा कि शिक्षा निदेशक श्री ललित के पँवार ने इस कार्यक्रम को एक नवाचार के रुप में प्रारंभ किये जाने की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है ।

निःसंदेह संस्थान के शैक्षिक अधिकारी इस प्रकार के कार्यक्रमों से लाभान्वित होते रहे हैं और उनकी कार्यक्षमता में आशातीत वृद्धि परिलक्षित हुई है ।

* राज्य परामर्शदात्री समिति के निर्णयों की पालना
* एस. डी. जी की राज्य स्तरीय बैठक के निर्णय -

अध्याय 6

राज्य स्तरीय परामर्शदात्री समिति की दशम बैठक के प्रस्तावों की पालना
(दिनांक 20 अप्रेल, 89 में लिये गये प्रस्ताव एवं उनकी क्रियान्विति)

क्र.सं.	प्रस्ताव	निर्णय	क्रियान्विति
	(सत्र 1988-89 के प्रस्ताव)		
1.	बिन्दु - 2 प्राथमिक शिक्षा की पुस्तकों को और अधिक आकर्षक बनाया जाय ।	निर्णय लिया गया कि राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल,जयपुर को पुनः पत्र द्वारा स्मरण कराया जाय कि नये पाठ्यक्रम के अंतर्गत जो पाठ्यपुस्तकें नई तैयार कराई जा रही है वे अधिक से अधिक आकर्षक बनाई जाय । यह भी सुझाव आया कि विज्ञान और गणित विषयों के जो तकनीक शब्द प्रयोग में लाये गये हैं उनका अंग्रेजी में भी उल्लेख किया जाय ताकि शिक्षित अभिभावक हिन्दी की तकनीकी शब्दावली समझ सके ।	प्राथमिक शिक्षा की पुस्तक को और अधिक आकर्षक बनाने हेतु सचिव रा.रा.पा.पु. मंडल, जयपुर को पत्र दि:15-5-89 तथा स्मरण पत्र दि. 27-11-89 एवं 14-2-90 को लिखे गये । कार्यवाही पाठ्यपुस्तक मंडल द्वारा अपेक्षित है । विज्ञान और गणित विषय की नवीन पाठ्यपुस्तकों में तकनीकी शब्द अंग्रेजी भाषा में भी दिए गए हैं ।
2.	बिन्दु - 4 अंग्रेजी भाषा का जिला संदर्भ केन्द्र एस.आइ.ई.आर.टी. में न होकर डाइट गोवर्द्धन विलास, उदयपुर में रखा जाय	जिला संदर्भ केन्द्र (अंग्रेजी भाषा) को शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय, (बालिका) उदयपुर में स्थानान्तरित कर दिया जाय ।	जिला संदर्भ केन्द्र को गोवर्द्धन विलास में जुलाई 89 में स्थानान्तरित कर दिया था परन्तु वहां पर्याप्त स्थान नहीं होने से अब पुनः यह संस्थान में ही कार्य कर रहा है जि.शि.अ.,उदयपुर इस केन्द्र को उपयुक्त भवन में स्थानान्तरित करने की व्यवस्था करेंगे ।

3.	बिन्दु - 5 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के परीक्षा प्रश्न-पत्रों को जिला स्तर पर आयोजित समान परीक्षा योजना के अंतर्गत छपवाने के लिए निदेशालय आदेश प्रसारित करें । इस आदेश में यह भी स्पष्ट कर दिया जाय कि इस परीक्षा को पास करने वाले विद्यार्थी को कक्षा 6 में प्रवेश मिल सकेगा ।	निर्णय लिया गया कि निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर को एक पत्र लिखकर पुनः स्मरण कराया जाय कि जिला शिक्षा अधिकारियों को ऐसे निर्देश जारी किये जावें कि वे अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों से परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों के प्रश्न-पत्र सामान्य विद्यालयों के प्रश्नपत्रों के समतुल्य तैयार कराकर उपलब्ध करावें ताकि कक्षा-6 में प्रवेश लेने वाले ऐसे विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर औपचारिक विद्यालय के छात्रों के समान रह सकें।	निदेशक, प्रा. एवं. मा. शि. राज. बीकानेर को पत्र दि: 15-5-89 द्वारा तथा स्मरण पत्र दि: 6-9-89, 25-10-89, 2-1-90 तथा 1452-90 द्वारा निवेदन किया गया। कार्यवाही निर्देशालय स्तर पर अभी तक अपेक्षित है।
4.	बिन्दु - 9 ग्रामीण प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति परीक्षा के लिए परीक्षा एवं वीक्षकों के मान देय में वृद्धि करना ।	ग्रामीण प्रतिभावान छात्रवृत्ति परीक्षा के लिए परीक्षकों एवं वीक्षकों के मान देय में वृद्धि हेतु पुनः स्मरण-पत्र निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर को भेजा जाय और पत्र की प्रति विशेषाधिकारी, शिक्षा को आवश्यक कार्यवाही हेतु दी जाय ।	कार्य संपादित हो चुका है । (आदेश क्र. शिविरा/मा./ई-2/22466/54/पार्ट-5 72 दि: 16-6-89 एवं शिविरा/मा./ ई-2/22421/89 दि: 29-8-89)
5.	बिन्दु - 10 माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों के प्रशिक्षण की अवधि में वृद्धि करना।	निर्णय लिया गया कि इस प्रस्ताव को जिस रुप में प्रस्तुत किया गया है उसके स्थान पर पृथक् प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाय जिसमें नव-चयनित/नव-पदोन्नत माध्यमिक विद्यालय प्रधानाध्यापक के प्रशिक्षण के लिए फाउन्डेशन एवं प्रोफेसनल दोनों प्रकार के गहन प्रशिक्षण सम्मिलित हों (पृथक् प्रस्ताव 6.10 पर है)	पृथक् प्रस्ताव 6.10 पर है ।

6.	बिन्दु - 12 इ.सी.ई. के अन्तर्गत अनुदेशिकाओं के मानदेय में वृद्धि करना	निर्णय लिया गया कि ई.सी.ई. प्रोजेक्ट के अंतर्गत अनुदेशिकाओं के मानदेय में वृद्धि करने के प्रस्ताव का अंतिम निर्णय लेने के लिए एक बैठक शिक्षा सचिव महोदय की अध्यक्षता में आमंत्रित की जाय, जिसमें अनुदेशिकाओं को मिल रहे केवल मात्र 75/- प्रतिमाह मानदेय की राशि में वृद्धि कर केन्द्रिय सहायता प्राप्त शिशुक्रीडा केन्द्र की अनुदेशिकाओं को मिल रहे 250/- प्रतिमाह मानदेय के समतुल्य लाया जा सके। इस बैठक में निम्न अधिकारियों को आंमत्रित किया जाय - 1. आयुक्त, जनजाति क्षेत्र विकास, उदयपुर 2. सचिव, समाज कल्याण विभाग, जयपुर 3. विशिष्ट सचिव, (विशिष्ट योजना संगठन) जयपुर 4. प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षक महाविद्यालय, अजमेर 5. प्रोग्राम ऑफिसर (यूनिसेफ), जयपुर । 6. निदेशक, समन्वित बाल-विकास एवं पोषाहार कार्यक्रम, जयपुर 7. निदेशक, एस.आई.ई. और. टी., उदयपुर ।	ई.सी.ई. के अंतर्गत अनुदेशिकाओं के मानदेय में वृद्धि करने हेतु शिक्षा आयुक्त एवं सचिव, राज. सरकार को पत्र दिनांक 31-5-89 तथा स्मरण पत्र दि: 20-7-89. 27-11-89 तथा 2-1-90 द्वारा लिखा जा चुका है । निदेशालय बीकानेर से भी 14-2-90 को पत्र द्वारा स्मरण कराया गया। कार्यवाही सचिवालय स्तर पर अभी तक अपेक्षित है ।
7.	अतिरिक्त निर्देश :-	अध्यक्ष महोदय ने यह भी निर्देशित किया कि राज्य शैक्षिक नवाचार विकास समूह की बैठक दिनांक 15-4-89 में लिये गये निर्णय के अनुसार स्वीकृत एक रीडर/प्रधानाचार्य, सीनीयर उ.मा.वि. (स्केल नं. 21) तथा एक पद अंग्रेजी टाईपिस्ट कम क्लर्क का अतिरिक्त आवंटन करने के लिए निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, राज.,बीकानेर को पत्र लिखा जाय ।	निदेशक प्रा. एवं मा.शि. राज., बीकानेर को पद आवंटन हेतु पत्र दि: 22-5-89 तथा बजट हेतु 2.6.89 को तथा स्मरण पत्र 17-7-89, 27-11-89 तथा 17-2-90 को दिए गए। कार्यवाही निदेशालय स्तर पर अभी तक अपेक्षित है ।

(सत्र 1989-90 के प्रस्ताव)

8. बिन्दु - 6.1

भाषाई अलपसंख्यक विद्यालय के शिक्षकों के लिए अभिनवन शिविरों का अयोजन।

निर्णय लिया गया कि वर्तमान में स्वीकृत एवं आयोजित 16 ग्रीष्मकालीन 28 दिवसीय शिविरों को वर्ष 89-90 से निम्नांकित अभिनवन शिविरों के रुप में आयोजित किया जावे। इस पर अतिरिक्त वित्तीय भार नहीं होगा ।

कार्य संपादित हो चुका है । (आदेश क्र. रा.शै.अ.प्र.सं./उदय प्र-5/पत्र-4424/89-90/ दिनांक 4-5-89)

क्र.सं.	विषय	शिविर संख्या
1.	हिन्दी भाषा	2
2.	संस्कृत भाषा	1
3.	सामाजिक ज्ञान	1
4.	भाषाई, अल्पसंख्यक विद्यालय के शिक्षकों के लिए (उर्दू सिंधी, पंजाबी, गुजराती)	4 प्रत्येक भाषा के लिए एक शिविर
5.	गणित एवं विज्ञान विषय के अध्यापकों के लिए (उ.प्रा.वि. के शिक्षकों के लिए)	4 (2 गणित एवं 2 विज्ञान)
6.	अंग्रेजी भाषा (उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए)	2
7.	अंग्रेजी भाषा (व्याख्याता शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय/डाईट)	1
8.	अंग्रेजी भाषा (व्याख्याता स्कूल शिक्षा के लिए)	1
		16

9.	बिन्दु-6.2 उद्योग शिक्षण प्रशिक्षण विद्यालय परशराम द्वारा, जयपुर को कार्यानुभव/समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा के शिक्षकों के अभिनवन केन्द्र के रुप में परिवर्तित करने पर विचार ।	निर्णय लिया गया कि वर्तमान में उद्योग शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय पृथक् से संचालित करने की आवश्यकता नहीं है,अतः सर्व-सम्मति से यह निर्णय लिया गया कि आगामी सत्र 88-89 से उद्योग शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय परशरामद्वारा, जयपुर को कार्यानुभव/एस.यू.पी.डब्लयू. विषय के शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं अभिनवन के लिए आर.टी.सी. वर्क एक्सपीरियेन्स (कार्यानुभव) के रुप में परिवर्तित कर दिया जाव। इस पर कोई अतिरिक्त वित्तीय भार नहीं होगा ।	कार्य संपादित हो चुका है । (आदेश क्रं.) प. 12 (72) शिक्षा-1/88/जयपुर दिनांक 28.11.89
10.	बिन्दु - 6.3 शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों में गुजराती एवं पंजाबी भाषा के शिक्षण प्रशिक्षण की व्यवस्था।	निर्णय लिया गया कि वर्तमान में अजमेर के अल्प संख्याई शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय, जिसमें केवल उर्दू एवं सिंधी भाषा के शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था है, में ही आगामी सत्र से गुजराती एवं पंजाबी भाषा के शिक्षकों के प्रशिक्षण के कार्यक्रम भी संचालित किये जावें । इन दो विषयों के लिए व्याख्याताओं के दो पद अतिरिक्त आवंटित कर दोनों भाषाओं के शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था की जावे । केवल दो व्याख्याताओं के वेतन का भार पड़ेगा ।	कार्य संपादित हो चुका है । (आदेश चक्र) प. 12 (72) शिक्षा-1/88 जयपुर दिनांक 28.11.89

11.	बिन्दु - 6.4 एक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय को विकलांग बालकों के प्रशिक्षण के लिए निश्चित करना	वर्तमान में विकलांग बालकों के शिक्षकों के प्रशिक्षण की राज्य में कोई व्यवस्था नहीं है जबकि इस समय 22 विद्यालयों में विकलांग बालकों की समन्वित शिक्षा योजना के अन्तर्गत कार्यक्रम संचालित है । अतः सर्व-सम्मति से यह निर्णय लिया गया कि बालिका शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय, जयपुर जो वर्तमान में एन.बी.डी बाल मन्दिर में चल रही है, को विकलांग बालकों के शिक्षक प्रशिक्षण के लिए निश्चित कर दिया जाए क्योंकि जयपुर जिले में डाईट की स्थापना की जा चुकी है। इस पर कोई वित्तीय प्रभार नहीं होगा।	विशेषाधिकारी को पत्र दि: 27-5-89 द्वारा लिखा गया । स्मरण पत्र दिनांक 20.7.89, 25-10-89, 5-1-90 द्वारा लिखा गया । कार्यवाही सचिवालय स्तर पर अपेक्षित है ।
12.	बिन्दु सं0-6.5 संस्थान एस.आई.ई.आर.टी. में पृथक् एककों की स्थापना ।	निर्णय लिया गया कि संस्थान में निम्नलिखित एकक (सेल)की स्थापना वर्ष 1989-90 से की जावे,क्योंकि ये एकक वर्तमान में स्थापित नहीं है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन हेतु इनकी स्थापना अनिवार्य है - 1- शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा एकक 2- कला शिक्षा एकक 3- अल्प भाषा एकक 4- कार्यानुभव एकक उपरोक्त एकक की स्थापना के लिए वांछित न्यूनतम स्टॉफ के प्रस्ताव निदेशालय को भेजे जाय।	संस्थान के विभागों का जुलाई 89 से पुनर्गठन करते समय वर्तमान स्वीकृत स्टॉफ में से ही प्रस्तावित एकक स्थापित किये गए है । दो पद पंजाबी व गुजराती भाषा के शिक्षकों के रिक्त हैं जिन पर पदस्थापन हेतु निदेशालय को लिखा गया है । कार्यवाही अपेक्षित है ।

13.	बिन्दु सं0- 6.6 श्रव्य दृश्य शिक्षा विभाग के फिल्म पुस्तकालय की सदस्यता राशि में वृद्धि करना -	निर्णय लिया गया कि श्रव्य दृश्य शिक्षा प्रभाग के फिल्म पुस्तकालय की सदस्यता राशि 1956-57 से विद्यालयों एवं अन्य अशैक्षिक संस्थाओं के लिए केवल मात्र 5/- रुपया निर्धारित की गई थी जो अब व्यय भार बढ़ जाने के कारण अपर्याप्त है । अतः अब यह राशि निम्नानुसार निर्धारित की जाती है - 1) प्राथमिक विद्यालय 10/- 2) उच्च प्राथमिक विद्यालय 25/- 3) माध्यमिक विद्यालय 50/- 4) सीनियर हायर सैकण्डरी विद्यालय 75/- 5) अन्य गैर शैक्षिक विभाग/संस्थाएँ 100/- यह भी निर्णय लिया गया कि सदस्यता राशि स्थानीय शुल्क हो और इसका उपयोग फिल्म, वीडियो केसेट आदि के क्रय रख-रखाव एवं विकास पर ही किया जाए । फिल्म पुस्तकालय की सेवाओं का लाभ राज्य के अधिक से अधिक विद्यालयों को दिया जाय । सदस्यता राशि का उपयोग करने के लिए निदेशक ,शैक्षिक प्रौद्योगिकी सक्षम होंगे ।	कार्य संपादित हो चुका है । आदेश सं0 क्र0 प. 7(3)शिक्षा-1/78 जयपुर दि: 5 अप्रेल,90
14.	बिन्दु सं0 - 6.7 शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग को जयपुर से अजमेर में स्थानान्तरित करना -	समिति के सदस्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग की वर्तमान व्यवस्था जिसके अन्तर्गत प्रौद्योगिकी प्रभाग, जयपुर में और श्रव्य दृश्य शिक्षा विभाग, अजमेर स्थित है, सहमत नहीं थे । समिति के सदस्यों की राय में वर्तमान व्यवस्था उपयुक्त नहीं है अतः सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग को जयपुर से श्रव्य-दृश्य इकाई अजमेर के परिसर में	कार्य सपांदित हो चुका है । (आदेश क्र. प. 5(1) शिक्षा 1/89/जयपुर दिनांक 25-9-89

		तुरन्त स्थानान्तरित कर दिया जाय । अजमेर में पर्याप्त स्थान एवं सुविधाएँ उपलब्ध है । क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर, अजमेर विश्वविद्यालय, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, आल इण्डिया रेडियो, आई.ए.एस.ई. आदि विशिष्ट शैक्षिक संस्थाएँ उपलब्ध हैं अत: इनका सहयोग प्रदेश में शैक्षिक प्रोद्यौगिकी के विकास में सहायक होगा । निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, राज0 बीकानेर जो कि आज की बैठक के अध्यक्ष थे, ने यह विश्वास दिलाया कि यथा सम्भव शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग, जयपुर में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारी को जयपुर में ही समायोजित करने का प्रयास किया जायेगा । यह भी निर्णय लिया गया कि राज्य सरकार से राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (एस.आई.ई.टी.) की स्थापना हेतु निवेदन किया जाय ताकि केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) के कार्यक्रमों का लाभ राज्य को प्राप्त हो सके ।	
15.	बिन्दु सं. 6.8 राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान की पुन: संरचना एवंसुसुदृढ़ीकरण -	प्रस्तावित प्रारुप का गहन अध्ययन एवं विचार-विमर्श के पश्चात् निम्न निर्णय लिये गये- (1) केन्द्रीय सरकार से एन.सी.ई.आर.टी./एस. सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई./एस.आई.ई. आर.टी. संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए जब भी मार्ग दर्शिका (गाईड लाईन्स) एवं केन्द्रीय	एस.आई.ई.आर.टी. के सुदृढ़ीकरण के प्रस्ताव पत्र क्रमांक रारा शैअप्रर्स/उदय/प्र-5/अ-2/प्र-6/ पत्र-4177/89-90 दि:23-2-90 के द्वारा राज्य सरकार को भेजे जा चुके है, सचिवालय स्तर पर कार्यवाही अपेक्षित है ।

		सहायता प्राप्त हो तो उसके अनुरुप सुदृढ़ीकरण के प्रस्ताव तैयार कर राज्य सरकार को भिजवाये जाय ।	
		(2) संस्थान के वर्तमान में स्वीकृत पदों की सीमा में जो संगठनात्मक संरचना प्रस्तावित की गई है उसका सर्व सम्मति से अनुमोदन किया गया तदनुसार निदेशक एस.आई.ई.आर.टी. को प्रस्तावित योजनानुसार क्रियान्विति करने हेतु अधिकृत किया गया ।	कार्य संपादित हो चुका है (आदेश क्र-रारा/शेअप्रर्स/ वि-5/अ 3/89-90/पत्र-8/ दिनांक 22-6-89)
		(3) पदनाम में परिवर्तन कर एकरुपता लाने तथा शैक्षिक स्टाफ की योग्यता आदि निर्धारित करने के लिए पृथक् से राज्य सरकार को लिखा जाय ।	शिक्षा आयुक्त सचिव को पत्र दि: 31-5-89 तक स्मरण पत्र दि: 21-7-89, 27-11-89, 5-1-90 तथा निदेशालय द्वारा भी 14-2-90 को निवेदन किया। कार्यवाही सचिवालय स्तर पर अभी तक अपेक्षित है ।
16.	बिन्दु सं. 6.9 राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल जयपुर से संस्थान को एक फोटो कॉपियर उपकरण उपलब्ध करने पर विचार -	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अन्तर्गत नवनिर्मित पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्यपुस्तकों का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है । इस वर्ष कक्षा 1-3 व 6 की 65 पुस्तकें तैयार होंगी। सत्र 1989-90 एवं 90-91 में 115 पुस्तकें तैयार होंगी। इसके अतिरिक्त शिक्षक संदर्शिकाऐं भी प्रत्येक विषय की बनेगी । इन पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ राज्य सरकार व पाठ्य पुस्तक मण्डल को अनुमोदन तथा प्रकाशन के लिए भेजी जायेगी और प्रत्येक पुस्तक की 6-6प्रतियाँ तैयार होंगी जिन्हें फोटोस्टेट कराया जायेगा। सामान्यतया एक पुस्तक में 80 से 100 पेज न्यूनतम होंगे । पुस्तकों की पाण्डुलिपियां कराने का समस्त	कार्य संपादित हो चुका है । एक फोटो कोपियर फरवरी 89 को आर.एस.टी.बी. से प्राप्त हो गया है और प्रयोग में आ रहा है ।

		व्यय पाठ्य पुस्तक मंडल वहन करेगा । जो एक बहुत बड़ी रकम होगी। अतः समिति ने सर्व सम्मति से प्रस्ताव का अनुमोदन कर यह निर्णय लिया कि राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल से एक फोटो कॉपीयर उपकरण संस्थान को उपलब्ध कराने के लिए लिखा जाय । संस्थान में ऐसे उपकरण का होना नितान्त आवश्यक है ।	
17.	बिन्दु सं. 6.10 माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों का पूर्व प्रशिक्षण-	यह निर्णय लिया गया कि नव चयनित एवं नव पदोन्नत माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक/ प्रधानाध्यापिका के लिए अन्य राज्य सेवा के प्रशिक्षण पैटर्न के अनुरूप सघन प्रशिक्षण अयोजित किये जाने चाहिये जो दो स्तर के हों -एक फाउन्डेशन कोर्स एवं दूसरा प्रोफेशनल कोर्स ।	संस्थान द्वारा फाउन्डेशनल तथा प्रोफेशलन कोर्स निर्मित कर लिया गया है ।
		फाउंडेशन कोर्स कम से कम 12 सप्ताह की अवधि का हो जिसे हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशिक्षण संस्थान आयोजित करे। इस प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम लोक प्रशासन संस्थान एवं एस.आई.आई.ई.आर.टी. मिलकर विकसित करें ।	राज्य सरकार द्वारा पाठ्यक्रम अनुमोदित
		प्रोफेशनल कोर्स का पाठ्यक्रम एस.आई.ई. आर.टी. उदयपुर अपने स्तर पर विकसित करें । यह पाठ्यक्रम 8 सप्ताह की अवधि का हो जिसमें 2 सप्ताह की अवधि का एक ऑन द जोब अटेचमेन्ट प्रोग्राम सम्मिलित हो ताकि प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न स्तर के कार्यालयों, शिक्षण संस्थानों में कार्य करने की कार्य प्रणाली का सम्पूर्ण अनुभव हो सकें । अटेचमेन्ट कोर्स के लिए निम्न संस्थाएं उदाहरण के	आदेश क्र.प. 16 (17) शिक्षा - 1/89 जयपुर दि: 4-1-90 द्वारा किया जा चुका है । वर्ष 90-91 में नवनियुक्त व भव क्रमोन्नत प्रधानाध्यापकों एवं समकक्ष पदों पर कार्यरत शिक्षा सेवा के अधिकारियों का प्रशिक्षण नवीन पाठ्यक्रमानुसार ही आयोजित होगा। एच.सी.एम. जयपुर तथा उदयपुर ने अपने पत्र क्र. 5693 दि: 28-9-69 द्वारा पाठ्यक्रम को उपयोगी बताया है और सराहना की है ।

रूप में हो सकती है-
(1) पंचायत समिति (2) उप जिला शिक्षा अधिकारी (स्वतन्त्र कार्यालय) कार्यालय (3) जिला परिषद् कार्यालय (4) वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय (छात्र/छात्रा) (5) अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय (6) जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय (7) शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय (8) डाईट (9) बी.एड. कॉलेज/सी.टी.ई. (10) आई.एस.एस.ई. (11) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (12) राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल (13) एस.आई.ई.आर.टी. (14) ओडियो विज्यूल एण्ड एज्यूकेशनल टेक्नोलोजी (15) माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय (सीनियर उ.मा.वि.) (16) वोकेशलन कोर्सेज आदि - आदि ।

इन संस्थाओं/कार्यालयों के साथ समयबद्ध प्रशिक्षण की अवधि में प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन हो और वे अपने अनुभवों की रिपोर्ट तैयार करे । उसके पश्चात् उन्हें क्षेत्र में पदस्थापित किया जाए ।

उपरोक्त प्रशिक्षण के उपरान्त गत वर्ष तक क्षेत्र में कार्यकर लेने के बाद द्वितीय चरण में अभिनवन प्रशिक्षण कार्यक्रम लगभग 2 सप्ताह की अविध का आयोजित किया जाय । ताकि शिक्षा विभाग की निरन्तर पूर्णरूपेण प्रशिक्षित अधिकारी मिल सके । इस प्रशिक्षण के प्रमाण-पत्र भी दिये जाय और उन्हें स्थायीकरण (कन्फरमेशन) के समय महत्त्व (तरजीह) दिया जाना चाहिए ।

पाठ्यक्रम 12 सप्ताह का फाउंडेशन है जो अन्य राज्य सेवा के केन्डीडेट्स के साथ ही चल सकेगा और 8 सप्ताह का प्रोफेशनल है जिसका प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान ने तैयार कर लिया है । यह पाठ्यक्रम आई.ए.एस.ई./एस.आई.ई. आर.टी. में आयोजित किया जा सकेगा ।

राज्य नवाचार विकास समूह (एस. डी. जी)

एस. डी. जी. की राज्य सलाहकार समिति की प्रथम बैठक 15 अप्रेल 1989 को शिक्षा सचिव श्री पी. बी. माथुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । एस. डी. जी. के पदेन सदस्य श्री सी. के. नागर, निदेशक, एस. आई. ई. आर. टी. उदयपुर होंगे । संस्थान स्तर पर कोर्डिनेटर श्री ए. एन. दवे होंगे । इस बैठक में 7 निम्नांकित निर्णय लिए गए :-

- सलाहकार समिति को अधिक व्यापक बनाया जाए । अतः उसमें निम्नांकित सदस्यों को मनोनीत किया गया ।

(1) विशिष्ट सचिव - एस. एस. ओ एवं आई. आर. डी राजस्थान, जयपुर

(2) निदेशक जन सम्पर्क विभाग, जयपुर

(3) निदेशक महिला एवं बाल विकास राजस्थान, जयपुर

(4) प्रधानाचार्य क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर

(5) प्रधानाचार्य गृह विज्ञान महाविद्यालय, उदयपुर.

एक कार्यकारिणी कमेटी का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष विशिष्ट शिक्षा सचिव, राजस्थान सरकार होंगे । यह समिति एस. डी. जी के राज्य सलाहकार समिति के द्वारा लिए गए निर्णयों की क्रियान्विति करेगी ।

- सलाहकार समिति में निर्णय लिया कि इस संस्थान में एक विशेष प्रकोष्ठ की स्थापना की जाए । जो एस. डी. जी. के कार्यक्रमों और गतिविधियों का समन्वयन करेगा । इस प्रकोष्ठ में प्रारंभिक स्तर पर केवल 2 पद (रीडर एवं टाइपिस्ट कम क्लर्क) सृजित करने हेतु अनुशंसा की गई ।

यह भी निर्णय लिया गया कि एस. डी. जी. की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को संचालित करने हेतु एक लाख रुपयों का प्रावधान शिक्षा निदेशालाय, बीकानेर करेगा । इस राशि में से 2 पदों का वेतन एवं शेष राशि का उपयोग बैठक वर्कशाप, प्रकाशन एवं नवचार कर्ता को प्रोत्साहन हेतु किया जाएगा ।

राज्य में एपिड (APEID) के सहयोगी केन्द्रों की संस्थापना एवं मान्यता हेतु 2 संस्थाओं का चयन किया जाए ।

(1) एस. आई. ई. आर. टी. उदयपुर

(11) उच्च शिक्षण संस्थान बीकानेर

- सलाहकार समिति ने सत्र 89-90 की प्रस्तावित कार्य योजना को स्वीकृति प्रदान की ।

संस्थान स्तर पर 11 नवाचारों के प्रारुप बना कर एन. सी. ई. आर. टी को प्रकाशन हेतु (इनवेंटरी में) भेजे गए ।

- परीक्षा सुधार
- व्यापक आन्तरिक मूल्यांकन योजना
- विद्यालय में द्विभाषा शिक्षण पद्धति जन जाति क्षेत्रों (बागड़ी हिन्दी)
- प्रधानाध्यापक वाक्पीठ

- जिला अनुसंधान वाक्पीठ
- शिक्षा कर्मी योजना
- प्राथमिक विद्यालयों में अविभक्त इकाई
- मॉडल राकेटरी प्रशिक्षण
- विज्ञान में अल्प व्ययी सामग्री निर्माण
- विज्ञान कूट प्रश्न प्रतियोगिता
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा योजना में अल्प व्ययी शिक्षण अधिगम सामग्री

आगामी वर्ष के कार्यक्रमों में प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित हैं ।

- सर्वे - नवाचार कार्यक्रम

(अन्त : क्षेत्रीय नवाचारों का सर्वे)

- डर्फ के कार्यकर्ताओं की संलग्नता
- व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अन्तः क्षेत्रीय नवाचारों का प्रयोग -

परिशिष्ट क

संस्थान के कुछ आकर्षण

1- संस्थान कार्यालय भवन

संस्थान का मुख्य कार्यालय भवन सहेलियों की बाड़ी के पास स्थित है । आरंभ में जिस भवन में राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थान चलता था उस भवन की ए ब्लाक के रुप में जाना जाता हैं । राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान बनाए जाने के साथ ही ब्लाक का निर्माण कराया गया ।

ब्लाक ए

ब्लाक में कुल 19 कमरे एवं दो हॉल रमण हाल एवं गांधी हाल हैं । इस ब्लाक में -

1 - मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

2 - विज्ञान एवं गणित विभाग

3 - मनोवैज्ञानिक आधार एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग चलते हैं ।

4 - पाठ्यपुस्तक विकास एवं मूल्यांकन विभाग ।

चाइल्ड मिडिया लेब, विकलांग एकीकृत शिक्षा की प्रयोगशाला, एवं विज्ञान विषय से संबंधित प्रयोगशालाएँ चलती हैं ।

वर्कशॉप - संस्थान का एक वर्कशॉप भी है जहाँ इलेक्ट्रिक सुधार लकड़ी के फर्निचर एवं अन्य टूट-फूट का सुधारा जाता है । यह वर्कशॉप आधुनिक मशीनों से साधन सम्पन्न है ।

ब्लाक (बी) ब्लाक बी में शिक्षक शिक्षा विभाग, शैक्षिक प्रशासन एवं आयोजना विभाग, अनुसंधान प्रसार एवं प्रकाशन विभाग तथा अनौपचारिक शिक्षा एवं वंचित वर्ग शिक्षा विभाग के कार्यालय स्थित हैं । इसी ब्लाक में संस्थापन अनुभाग लेखा शाखा स्टोर आदि चलते हैं । संस्थान निदेशक का कक्ष भी इसी ब्लाक में स्थित हैं ।

इसी ब्लाक के पार्श्व में पुस्तकालय का नव निर्मित भवन एवं टेगोर हाल स्थित हैं ।

2. कैंटीन - संस्थान का एक कैंटीन भी है जिसका संचालन निविदाएँ मांग कर अनुबंध कर्ता द्वारा करवाया जाता है । प्रतिवर्ष न्यूनतम दर वाले अनुबंध कर्ता की रेटस् स्वीकृत की जाती है । केन्टीन व्यवस्थापक द्वारा चाय काफी नाश्ता आदि सप्लाई किया जाता है ।

3- कर्मचारी सहकारी समिति -

संस्थान के कर्मचारियों की सुविधा के लिए कर्मचारी कल्याण सेवाएँ संचालित की जाती हैं । केन्टीन व्यवस्था खेल कूद की सुविधा के साथ कर्मचारी सहकारी समिति का संचालन मुख्य है ।

संस्थान परिसर में सन् 1967 से राज्य शिक्षा संस्थान सहकारी समिति (लिमिटेड) रजिस्टर्ड चल रही है । निदेशक संस्थान इस समिति के पदेन संरक्षक हैं ।

वर्ष 1989-90 में 139 राजपत्रित और अराजपत्रित कर्मचारी सदस्य हैं । सदस्यों की शेयर राशि 26200 रुपये है । अमानत राशि 93357/- रुपये हैं । समिति अपने सदस्यों को अधिकतम 2000/- का ऋण स्वीकृत करती है ।

समिति द्वारा प्रतिवेदित वर्ष में ऋण के रुप में 1,85,000 रुपये दिए हैं ।

समिति ने वर्ष 1988-89 में लाभांश पेटे प्रत्येक सदस्य की 2 डोंगे उपहार स्वरुप दिये है।

स्टॉफ बैंक (विज्ञान एवं गणित विभाग)

स्टॉफ बैंक के नाम से निर्मित यह समिति सन् 1974 में संस्थान में कार्यरत है । यद्यपि यह विज्ञान एवं गणित विभाग के नाम से पहचाने जाने वाला बैंक है तथापि इसके 81 सदस्य पूरे स्टॉफ के हैं । इसके सुरक्षित कोष-गत वर्ष 52000 रुपये एकत्रित होकर ऋण के रुप में वितरित किए जाते रहे ।

मार्च 90 में प्रत्येक सदस्य की जमा राशि मय ब्याज के उसको लौटा दी जाती है । अप्रेल 90 से 20/- बीस रुपये के शेयर के हिसाब से सदस्य चाहे जितने शेयर जमा करा सकता है। प्रत्येक माह में औसतन 9 व्यक्तियों को 500/- 500/- ऋण (प्रारंभ के 3 माह तक) ब्याज पर दिए जाते है । इस समिति द्वारा 20 रुपया प्रतिमाह जमा कराने वाले व्यक्ति को 16/- रुपये ब्याज के चुकाए गए ।

कार्यशाला स्टाफ बैंक

संस्थान में तीसरा सहकारी स्टाफ बैंक कार्यशाला स्टॉफ बैंक कार्यरत है । वर्तमान में इस बैंक के 65 सदस्य हैं । 10 रुपया प्रति शेयर के हिसाब से प्रतिमाह चाहे जितने शेयर जमा करा सकता है । लेकिन शर्त यह हैं कि प्रारंभ में निर्धारित अशदान वर्ष पर्यन्त जमा कराना होगा । 10 रुपया प्रतिमाह शेयर जमा कराने वाले व्यक्ति को 12 महीने बाद जमा राशि का ब्याज 17 रुपया चुकाया गया है । उल्लेखनीय है कि शेयर से जमा राशि द्वारा प्रतिमाह 5 जरुरतमंद सदस्यों की 1000-1000 रुपये ऋण स्वीकृत किया जाता है ।

4 - मनोरंजन सुविधाएँ

संस्थान द्वारा अपने कर्मचारियों को खेल कूद केरम एवं टी.वी. कार्यक्रम देखने की सुविधा उपलब्ध है । संस्थान परिसर में प्रतिदिन सायं वालीबाल, केरम खेलने का कार्यक्रम आयोजित होता है । शैक्षिक प्रौद्योगिकी कक्ष में रंगीन टी.वी. है जो मूलतः शैक्षिक कार्यक्रमों को देखने के लिए है तथापि महत्त्वपूर्ण मनोरंजक कार्य क्रम देखने की सुविधा भी उपलब्ध है ।

इस वर्ष मंत्रालायिक कर्मचारियों की राज्य स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता राजगढ (चुरु) में आयोजित हुई थी । संस्थान के 9 मंत्रालयिक कर्मचारियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया जिसमें श्री फौजसिंह कनिष्ठ लिपिक में 100 मीटर दौड़ 400 मीटर दौड़ में कीर्तिमान स्थापित किया ।

श्री लादूलाल सोनी ने केरम में तृतीय स्थान प्राप्त किया । शेष प्रतियोगियों का प्रदर्शन भी अच्छा रहा ।

5- शैक्षिक प्रोद्यौगिकी विभाग

शैक्षिक प्रोद्यौगिकी विभाग जो पूर्व में, जयपुर में स्थित था अब यह कार्यालय राज्य परामर्शदात्री समिति के निर्णय की पालना में फरवरी 90 में अजमेर के श्रव्य - दृश्य शिक्षा कार्यालय में हस्तान्तरित हो गया है । उल्लेखनीय है यह विभाग संस्थान का विभाग सं. 6 है ।

6- हॉस्टल

संस्थान का एक हॉस्टल भी है जिसमें 100 व्यक्तियों के आवास की व्यवस्था है । संस्थानिक कार्यों में भाग लेने आने वाले अधिकारीगण, शिक्षकगण इसी हॉस्टल में ठहरते हैं ।

वर्तमान में संस्थान के हॉस्टल में 3 कमरे विशिष्ट व्यक्तियों के ठहरने हेतु बने हुए हैं । प्रतिवेदित अवधि में संस्थान के हॉस्टल में विशिष्ट व्यक्तियों के ठहरने के 3 अन्य कमरों को सुविधा सम्पन्न बनाने के लिए एक लाख पैंसठ हजार रुपए स्वीकृत किए गए हैं ।

7- विकलांगों के लिए प्रयोगशाला

इस संस्थान में विकलांगों के लिए प्रयोगशाला बनाई गई है । जिसमें आर्थोपिडिक हन्डीकेप, मूक बधिरों एवं मानसिक दृष्टि से पिछड़े छात्रों के उपयोग हेतु वैशाखी केलिपर्स, कृत्रिम पाँव जयपुर फुट (सेठी पॉव) मिनी ओडिटेस्ट के अलावा हियरिंग एड , अंधों के लिए टाइप मशीन, मूक बधिरों की इंगित भाषा चार्टस् , गेम्स टॉयज संयोजित हैं । उक्त उपकरण मात्र शिक्षण की दृष्टि से जानने पहचानने के लिए अवलोकनार्थ सजाये गए ।

8- विज्ञान प्रयोग शालाएँ

संस्थान में तीन विज्ञान प्रयोग शालाएँ पूर्व में कार्यरत थीं जिनको विषयवार संयोजित कर रखी थी। उदाहरण के लिए रसायन विज्ञान प्रयोगशाला, जीव विज्ञान प्रयोगशाला, भौतिक शास्त्र प्रयोगशाला । गत वर्ष से इन प्रयोग शालाओं को इस दृष्टि से संयोजित किया गया कि सम्बंधित स्तर के बालक इस प्रयोगशाला में अपने प्रयोग कर निष्कर्ष निकाल सकें ।

इन प्रयोगशालाओं को स्तरानुसार इस प्रकार परिवर्तित किया गया है ।

(1) प्राथमिक स्तर विज्ञान प्रयोगशाला

(2) उच्च प्राथमिक स्तर विज्ञान प्रयोगशाला

(3) माध्यमिक स्तर विज्ञान प्रयोगशाला

उल्लेखनीय है कि संस्थान द्वारा गत वर्षों में विज्ञान शिक्षण हेतु अल्प व्ययी सामग्री से एक किट और किट संदर्शिका का निर्माण कर विद्यालयों को उपलब्ध कराए हैं । यूनेस्को के तत्कालीन महाप्रबंधक श्री ए एम. ऐम्बो ने किट को देखकर भूरि - भूरि प्रशंसा की थी ।

9- पुरस्कार प्रशास्तियाँ सम्मान एवं शैक्षिक उन्नयन

(क) संस्थान के शैक्षिक अधिकारी शिक्षा जगत् में शैक्षिक उपलब्धियाँ तो प्राप्त की ही हैं साथ ही अपनी शैक्षिक प्रतिभा का उन्नयन भी किया है ।

संस्थान के निम्नलिखित अधिकारियों को इस वर्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा पी. एच. डी. की उपाधि अवार्ड की गई है ।

श्रीमती शकुंतला पंड्या (शिक्षा में)	माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों में नैतिक मूल्यों के विकास हेतु प्रयुक्त विभिन्न संव्यूहनों की प्रभावोत्पादकता का तुलनात्मक अध्ययन
सुश्री पूर्णिमा शर्मा (शिक्षा में)	माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों में जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के प्रति जागरुकता का उन्नयन

ख माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा आयोजित पन्द्रहवीं राज्य स्तरीय पत्र - वाचन प्रतियोगिता में संस्थान के निम्नलिखित अधिकारियों ने विभिन्न वर्ग समूहों में अपने पत्र पढ़े और पुरस्कृत हुए ।

श्रीमती ओमवती सक्सेना	हिन्दी	प्रथम रही
श्री अशोक माथुर	अंग्रेजी	प्रथम
श्री वासुदेव चतुर्वेदी	व्यावसायिक शिक्षा	प्रथम
श्री श्यामसिंह मंडलिया	शिक्षा	द्वितीय
श्रीमती कमला जैन	शिक्षा	तृतीय
सुश्री पूर्णिमा शर्मा	अंग्रेजी	तृतीय

ग क्षेत्रीय महाविद्यालय भोपाल के रजत जयंती समारोह के अवसर पर शैक्षिक विषयों पर पत्र आमंत्रित किए गए हैं । निम्नलिखित अधिकारियों के पत्र चयनित हुए :-

(1) श्री दिलीपसिंह चौहान	अनुसंधान अधिकारी
(2) श्रीमती ओमवती सक्सेना	" "
(3) श्री श्यामसिंह मंडलिया	" "
(4) श्री वासुदेव चतुर्वेदी	अनुसंधान सहायक

भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में श्री दिलीपसिंह चौहान और श्रीमती ओमवती सक्सेना ने भाग लिया और अपने पत्र पढ़े, जिन्हें शिक्षाविदों ने सराहा ।

10 सेवानिवृत्ति विदाई कार्यक्रम

संस्थान परिवार के सदस्य जो सेवानिवृत्ति ग्रहण करते हैं । उनकी संस्थान परिवार द्वारा विदाई देने की एक स्वच्छ परम्परा का निर्वहन किया जाता रहा है । प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी की सेवानिवृत्ति के अवसर विदाई समारोह आयोजित करने हेतु श्री कृष्ण स्वरुप शर्मा, उपनिदेशक (प्रशासन) की अध्यक्षता में छः सदस्यीय एक कमेटी बनी हुई है । जिसमें श्री इन्द्रलाल बावेल (सेवानिवृत्त हो चुके) श्री सुभाष त्रिवेदी, श्री प्रकाशचन्द्र जैन, श्री लालसिंह झाला, श्री जुगलकिशोर शर्मा , श्री गणेशलाल कुम्हार (च.श्रे.) व्यवस्थापक सदस्य है ।

विदाई समारोह संस्थान परिवार द्वारा आयोजित किया जाता हैं । इसमें सेवानिवृत्ति ग्रहण करने वाले अधिकारी/कर्मचारी को अभिनंदन पत्र लगभग 150/ मूल्य की कोई वस्तु, श्रीफल, रुपया, आदि भेंट कर भावभीनी विदाई दी जाती है ।

प्रतिवेदित अवधि में निम्नलिखित अधिकारी/कर्मचारी सेवानिवृत्त हुए -

1	श्री इन्द्रलाल बावेल	सहायक निदेशक
2	श्री नर्वदाशंकर भट्ट	अनुसंधान अधिकारी
3	श्री जीवतराम	कार्यालय अधीक्षक
4	श्री नवनीतलाल पारख	सहायक एकाउन्टेंट
5	श्री प्रेमसुख बीजावत	उपनिदेशक
6	श्रीमती जानकी देवी खंडेलवाल	अनुसंधान सहायक
7	श्री शिवकिशोर सनाढ्य	अनुसंधान सहायक
8	श्री त्रिभुवनलाल पालीवाल	लेखाधिकारी
9	श्री राधेश्याम सिंघल	उपनिदेशक
10	श्रीमती सरोज शर्मा	अनुसंधान सहायक
11	श्री इन्द्रदेव सक्सेना	उपनिदेशक

11 पुस्तकालय

संस्थान के पुस्तकालय का जब से नव निर्मित भवन में हस्तान्तरण हुआ है । तब से संस्थान और संस्थान के बाहर के अध्येताओं शोधकर्ताओं और रुचिशील पाठको द्वारा पुस्तकालय की पुस्तकों संदर्भ्य ग्रंथों को पठन द्वारा लाभ प्राप्त किया है ।

विज्ञान सुधार योजना - के अन्तर्गत संदर्भ ग्रंथों का क्रय कर पुस्तकालय को समृद्ध बनाया गया है । गत वर्ष तक इस पुस्तकालय में सभी विषयों को लगभग 34980 पुस्तकें थीं। इस वित्तीय वर्ष में यह संख्या 35362 हैं ।

पुस्तकालय की कार्य प्रणाली संस्थान के नवनिर्मित भवन मे सम्पादित होती है । संस्थान में 3 पुस्तकालय अध्यक्ष ,1सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष एवं 2 बुक लिफ्टर कार्यरत हैं। इस वित्तीय वर्ष में 50,000/- का बजट आवंटित था जिसमें से 49,926/- खर्च हुए । इस वर्ष पुस्तकालय में 382 पुस्तकें क्रय की गई हैं ।

पुस्तकालय मे वाचनालय का प्रावधान भी है । बैठक व्यवस्था को इस रुप में ढाला गया है कि पुस्तकालय की ऑपन सेल्फ पद्धति के द्वारा अध्येता शोधकर्ता एवं पठनशील व्यक्ति पुस्तकों एवं संदर्भ ग्रंथो की बैठ कर पढ़ सकता है एवं चाहे तो नोट्स भी ले सकता है । वाचनालय में आने वाली देश - विदेश की शैक्षिक - साहित्यिक पत्र - पत्रिकाओं को पढ़ सकता है ।

पुस्तकालय में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक एवं पत्रिकाएँ मंगवाई जाती हैं जो इस प्रकार हैं ।

दैनिक पत्र (हिन्दी) - पत्रिका, जय राजस्थान ,प्रातःकाल, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, दैनिक नवज्योति, राष्ट्रदूत और जनसत्ता आते हैं । अंग्रेजी के दैनिक पत्रों में हिन्दुस्तान टाइम्स ऑफ इण्डिया (दिल्ली और जयपुर संस्करण), इन्डियन एक्सप्रेस आते हैं ।

साहित्य की पाक्षिक पत्र - पत्रिकाएँ, मुक्ता, साहित्य, मनोरमा, दिनमान, इंडिया टूडे, (हिन्दी,अंग्रेजी) यामा, योजना एवं मासिक पत्र-पत्रिकाएँa , गृहशोभा, सर्वोत्तम नवनीत कादम्बिनी, प्रतियोगिता दर्पण, साइंस टूडे, प्रोज, रीडर्स डाईजेस्ट, कम्पीटिशन सक्सेज रिव्यू, क्रिकेट सम्राट् मधुमती वामा, स्वास्थ्य जीवन संडेमेल (हिन्दी) आती हैं ।

नौ साप्ताहिक पत्रिकाएँ - धर्मयुग , साप्ताहिक हिन्दुस्तान रविवार , इतवारी पत्रिका , ब्लिट्ज , रोजगार समाचार , राष्ट्रदूत और इलेस्ट्रेड वीकली, संडेमेल आती हैं ।

शैक्षिक मासिक पत्र पत्रिकाओं में शिविरा , शिक्षा सेवा संदेश , भारतीय आधुनिक शिक्षा, नया शिक्षक, प्राइमरी शिक्षक, (हिन्दी अंग्रेजी) के अलावा द एजुकेशन रिव्यु द प्रोग्रेस ऑफ एजूकेशन , इन्डियन जर्नल ऑफ एडल्ट एज द एशियन जर्नल ऑफ साइक्लॉजी एण्ड एजुकेशनल टेक्नोलोजी, जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एवं मैनेजमेंट आती है ।

त्रैमासिक एजुकेशनिस्ट थोट्स ।

12 " सामुदायिक विज्ञान केन्द्र "

सहेलियों की बाड़ी में स्थित भवन में संस्थान के अन्तर्गत चलने वाला सामुदायिक विज्ञान केन्द्र सन् 1971 से कार्यरत है । गत तीन वर्षों से राज्य के विकास एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तात्वावधान में इसके साथ विज्ञान केन्द्र का भी समावेश किया गया है ।

विज्ञान की समाज में अधिकाधिक जानकारी एवं प्रसार (विज्ञान के नये आयामों से परिचय) की दृष्टि से यह सामुदायिक विज्ञान केन्द्र खोला गया है ।

औसतन 1000 से 1500 व्यक्ति प्रति दिन इसे देखने आते हैं । इसमें आम जनता , किसान ,मजदूर , महिलाएँ एवं गृहणियाँ काफी संख्या में होते है । अनौपचारिक रुप से आम जनता के समक्ष विज्ञान के दैनिक जीवन में उपयोग सम्बन्धी कार्यरत मोडल, चार्ट , जैविक

नमूने ,छोटे-छोटे खेल एवं पहेली (मानसिक योग्यता बढाने हेतु), राजस्थान के खनिज एवं राष्ट्रीय एकता के मोडल प्रदर्शित किये जाते हैं । विज्ञान शिक्षा सम्बन्धित रुचिपूर्ण फिल्में एवं टेप स्लाईड कार्यक्रम के साथ साथ टेलीवीजन कार्यक्रम भी इस केन्द्र में वैज्ञानिक साक्षरता के प्रसार हेतु दिखाये जाते हैं ।

राज्य सरकार के विज्ञान एवं तकनीकी विभाग जयपुर के सहयोग से वर्तमान में सामुदायिक विज्ञान केन्द्र के साथ विज्ञान केन्द्र (डी.एस.टी.) का संचालन भी होता है । केन्द्र के पिछले भाग में विज्ञान वाटिका (SCIENCE GARDEN) एवं विज्ञान पुस्तकालय है ।

विज्ञान केन्द्र द्वारा छात्रों के लिए कार्यक्रम , ग्रामीण क्षेत्रीय कार्यक्रम ,राकेट मॉडल निर्माण कार्यक्रम एवं अन्य वैज्ञानिक प्रतिभा से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं ।

भारतवर्ष में इस प्रकार के सामुदायिक विज्ञान केन्द्र गिने चुने हैं । गुजरात के अहमदाबाद में साराभाई विज्ञान केन्द्र और राजस्थान के उदयपुर में संस्थान का सामुदायिक विज्ञान केन्द्र राष्ट्रीय महत्त्व के केन्द्र है ।

विद्यालयों के सैकड़ों छात्र एवं आम जनता तो इस सामुदायिक विज्ञान केन्द्र में दैनिक जीवन से जुड़े विज्ञान का लाभ लेने हेतु आती है । लेकिन इसके साथ-साथ इस केन्द्र के कार्यों की अति विशिष्ठ व्यक्तियों ने भी सराहना की है ।

सामुदायिक विज्ञान केन्द्र से प्रति वर्ष लाभान्वित होने वाले दर्शकों की संख्या निम्नलिखित है :-

सामुदायिक विज्ञान केन्द्र वर्षवार दर्शकों की संख्या :-

क्र.सं.	वर्ष	दर्शकों की संख्या
1.	1977	1,04,067
	78	1,44,003
	79	1,40,493
	80	1,56,262
	81	1,54,115
	82	1,28,051
	83	1,22,980
	84	1,25,700
	85	1,22,940
	86	1,37,201
	87	1,12,450
	88	1,20,038
	89	1,65,505

ग्रामीण क्षेत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत 9 गाँवों के लगभग 15,000 " ग्रामीण गाँव की दहलीज पर विज्ञान की दस्तक " से लाभान्वित हुए ।

छात्रों के लिए कार्यक्रम के अन्तर्गत 20 विद्यालयों के 200 छात्रों ने मोडल निर्माण किये ।

Views of dignities

- I would suggest to the State Govt. to make every possible efforts for the development of such place which is most useful for the public as well as students.

- Prof. Rikhab Birani Kanpur.

- Very interesting and educative . A place worth visiting particularly for children who try to learn many fundamentals .

-Sh. S.R.Bahi
UNICEF, New Delhi

- I wish my people could see this .

- Mr. R. Taiagaraja

- Very interesting and most knowledgeable guide .

- Mr. B.Collists
Ministry of Overseas Development,LONDON

- Institution like this should be established in as many places as possible to educate the younger generation.

- Neela Kantari
- Member Central Board of Cap senior's Advisory Board, MADRAS.

संस्थान में स्वीकृत पद एवं बजट

1989-90 के लिए स्वीकृत पद

पद	वेतन श्रृं.	स..	पद	वेतन श्रृं.	सं.
निदेशक	28	1	प्रभारी अधि.	28	1
संयुक्त निदेशक	25	2	शैक्षिक प्रौद्योगिकी उप निदेशक	23	6
मूल्यांकन अधिकारी	21	8	प्रोफेसर उपनिदेशक (क)	22	1

वरिष्ठ व्याख्याता आदि अनुसंधान अधिकारी परामर्शदाता आदि	19	25	सहायक निदेशक मनोवैज्ञानिक आदि	18	14
सहायक लेखाधिकारी अनु. सहायक आदि	17	23	पुस्तकालयाध्यक्ष	16	3
पर्यवेक्षक, समन्वयक आदि	15	20	लेखाकार	14	2
कार्यालय सहायक	13	6	लेथमेन	12	1
व. अध्यापक ,शीघ्र लिपिक आदि	11	22	व. लिपिक आदि	10	14
अन्य	1 से 9	111	योग :-	-	260

अ. छबडा प्रोजेक्ट (विकलांग एकीकृत शिक्षा)

परियोजना अधि.	1
विशिष्ट शिक्षक	2
सांख्यिकी सहा.	1
वाहन चालक	1
कुल	5

ब. शिक्षा कर्मी योजना

प्रभारी अधि.	1
सहायक निदेशक	2
व्याख्याता -	4
कनिष्ठ लिपिक	2
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	2
चौकीदार	1
कुल	12

स. उप प्रायोजना टीम, जयपुर.

उप प्रायोजना अधि.	1
अनुसंधान अधि.	1
कनिष्ठ लिपिक	1
चतुर्थ श्रेणी कर्म.	1
वाहन चालक	1
कुल	5

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

स्वीकृत बजट 1989-90

(1-4-89 से 31-3-90)

स्कीम का नाम	बजट हेड	स्वीकृत राशि	आइटम वार	स्वीकृत पद	स्वीकृत पदों के विरुद्ध कार्यरत	व्यय
1. राज्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (आयोजना-भिन्न)	2202 सामान्य शिक्षा 80 सामान्य 004 अनुसंधान राज्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (आयोजना-भिन्न व्यय)	संवेतन	67,73000	1. निदेशक 1 पद (स्केल नं. 28)		
		यात्रा व्यय	2,00000			
		चिकित्सा व्यय	1,50000	2. संचालक 1 पद (स्केल 25)		
		कार्यालय व्यय	2,30000			
		वृतिका	50000	3. संयुक्त संचालक 1 (स्केल 25)		
		प्रकाशन	60000			
		विज्ञापन	4000	4. शैक्षिक प्रौद्योगिकी (अधि. 1 (28)		
		अनुरक्षण	12000			
		सामग्री प्रदाय	10000	5. उप संचालक (क) 1 (23)		
		अन्य प्रभार	100000			
		खेलकूद	1000	6. उप संचालक 4 (22)		
		प्रयोगशाला	15000	7. मूल्यांकन अधि. 1 (21)		
		पुस्तकालय	50000			
		कार्यालय वाहन	130000	8. सहायक निदेशक 1 (21)		
		साधारण				
				9. उप परियोजना अधि. (21)		
		किराया	7000	10. वरिष्ठ व्याख्याता 2 (21)		
		मशीनरी	5000			

एवं साजसामान		
योग	77,97,000	

11. अनुसंधान अधि. 9
(19)
12. अनुसंधान अधि. 9
(19)
13. प्राविधिक व्याख्याता 2
(19)

14. व्याख्याता 6
(19)
15. श्रव्य-दृश्य अधि. 1
(18)
16. मनोविज्ञान विशेषज्ञ 1
(18)
17. अनुसंधान अधि. 1
(18)
18. सहा. संचालक 9
(18)
19. सांख्यिकी अधि. 1
(18)
20. सहा. लेखाधिकारी 1
(17)
21. विद्यालय कौसलर 7
(1+6)(17)
22. समन्वयक 3
(15)
23. पर्यवेक्षक 1
(17)

24. अन्वेषण सहायक 8
(15)
25. प्राविधि विज्ञ 1
(15)
26. अनुसंधान सहा. 6
(15)
27. प्रोग्राम पदेन स्क्रीप्ट राइटर 1
(15)
28. पुस्तकालय अध्यक्ष 3
(16)
29. अध्यापक श्रेणी II
(17)
30. लेखाकार - 2
(15)
31. शीघ्र लिपिक 1
(15)
32. कार्यालय अधीक्षक 1
(15)
33. लेयमेन 1
(12)
34. कार्यालय सहा. 6
(13)
35. कनिष्ठ लेखाकार 2
(12)
36. अन्वेषण सहा. 4
(11)

37. अध्यापक श्रेणी II
(12)
38. चलचित्र पुस्तकालय
अध्यक्ष 1 (11)
39. कालकार 1
(11)
40. शीघ्र लिपिक 8
(11)
41. लिपिक 5
(10)
42. व. लिपिक पदेन आ.लि. (2)
(10)
43. सांख्यिकी निरीक्षक 3
(11)
44. स्टोर कीपर 1
(10)
45. चालक एवं यांत्रिक 1
(8)
46. मिस्त्री 1
(8)
47. कनि. लिपिक 30
(7)
48. चलचित्र जांचने वाला 1
(7)
49. चालक 6
(7)
50. पुस्तकालय अध्यक्ष 1
(7)

51. अध्यापक श्रेणी III 1
(7)
52. प्रयोग शाला सहा.
पदेन प्रोजेक्ट चालक 1 (7)
53. प्रयोगशाला सहा. 3
(7)
54. चालक 2
(6)
55. ओडियो विजुअल चालक 1
(6)
56. रेडियो मेकेनिक 1
(6)
57. लुहार 1
(6)
58. मिस्त्री 1
(6)
59. यांत्रिकी 3
(6)
60. ओपरेटर 1
(6)
61. बढ़ई 2
(4)
62. मशीनमेन 2
(4)
63. बुकलिफ्टर 2
(2)

				64. प्रयोगशाला बॉय 3 (2)	
				65. दफ्तरी 3 (2)	
				66 जमादार 4 (2)	
				67. यांत्रिक हेल्पर 1 (1)	
				68. हेल्पर्स 2 (1)	
				69. चतुर्थ श्रेणी कर्म. 29 (1)	
					कुल पद 230
2. नवचरित शिक्षा (आयोजना-भिन्न)	2202 सामान्य शिक्षा	संवेतन	1,57,000/-	अनुसंधान सहायक 3	(15)
	80 सामान्य शिक्षा	यात्रा व्यय	5,000/-	उच्च लिपिक 1	(10)
	004 अनुसंधान				
	(1) राज्य शिक्षा अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान।	चिकित्सा व्यय	2000/-	कनिष्ठ लिपिक 2 (7)	
	(आयोजना व्यय)	मजदूरी	9000/-	दैनिक वेतन भोगी 2	
	नवचारित शिक्षा		1,73,000/-		कुल पद 6
3. व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम (केन्द्र प्रवर्तित)	2202 सामान्य शिक्षा	संवेतन	3,26,000	फोफेसर 1 पद स्केल 23	श्री शदरचन्द्र पुरो. श्री हजारी लाल
	80 सामान्य शिक्षा	यात्रा व्यय	22.000		
	004 अनुसंधान	चिकित्सा व्यय	10,000	रीडर 1 पद (21)	
				व्याख्याता 2 पद	

	(1) राज्य शिक्षा अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान केन्द्र प्रवर्तित योजना व्यावसायिक शिक्षा	कार्यालय व्यय	50,000	(प्र.अ.उ.मा.वि.)	
			408000/-	स्टेनो 1 पद (11)	
				कनि. लेखाकार 1 (12)	
				व. लिपिक 1 (10)	
				क. लिपिक 1 (7)	
				चतुर्थ श्रेणी 2 (1)	कुल 10 पद
4. जनसंख्या शिक्षा योजना	2202 सामान्य शिक्षा	संवेतन	1,81,000	जनसंख्या शिक्षा अधि. 1 (21)	
	80 सामान्य	यात्राव्यय	5,000	अनुसंधान अधि. 2 (19)	
	004 अनुसंधान	चिकित्सा व्यय	5,000	अनुसंधान सहा. 1 (17)	
	(1) जनसंख्या शिक्षा योजना	कार्यालय व्यय -			
	(केन्द्र प्रवर्तित योजना)		1,91,000		4 पद
5. (ख) राज्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (आयोजना व्यय)	2202 सामान्य शिक्षा	संवेतन	16,000	वाहन चालक 1 (17)	
	80 सामान्य शिक्षा	यात्रा व्यय	1000	दैनिक वेतन भोगी	
	004 अनुसंधान	चिकित्सा व्यय	1000	कर्म. 1	
	राज्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	प्रकाशन	20,000		
	(आयोजना व्यय)	(सेवारत प्रशिक्षण कोर्स)			
		अन्य प्रभार	50,000		
		मजदूरी	4,000		
			92,000		
6. (ग) 7 - टीचर एजुकेशन	2202 सामान्य शिक्षा	संवेतन	13,000		
	80 सामान्य शिक्षा	यात्रा व्यय	54,000		
	004 अनुसंधान	कार्यालय व्यय	72,000		
	राज्य शिक्षा एवं	वृतिका एवं			

	प्रशिक्षण	विशेष सेवा	1,000	
		प्रकाशन	20,000	
		सामग्री प्रदाय	40,000	
		योग	2,00,000/-	
(घ) सामुदायिक शिक्षा केन्द्र	2202 सामान्य शिक्षा 004 अनुसंधान 1-राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान (आयोजना व्यय) ग - सामुदायिक शिक्षा केन्द्र	संवेतन कार्यालय व्यय योग	24,000 4,000 28,000	6 सामुदायिक केन्द्र पण्डेर (शाहपुरा) रोहानियां (बाँसवाड़ा) अहमदपुर (अलवर) विश्नावास (लाहावट) जोधपुर खोखर (नागौर) प्रत्येक केन्द्र पर 4 कार्यकर्ता प्रति कार्यकर्ता 125/- प्रतिमाह =
8. अंग्रेजी शिक्षा का सुदृढ़ीकरण	8000 आकस्मिक निधि 2202 सामान्य शिक्षा 80 सामान्य 004 अनुसंधान (III) नवाचारित शैक्षिक परियोजनाएँ (केन्द्र प्रवर्तित योजनाएं) 1- संवेतन	राशि - चालान से जमा कराई जाकर इस हेड से उठाई जाती है	2 पद स्वीकृत	प्रधानाचार्य (स्वी.) श्री अशोक माथुर श्री हरिश्चन्द्र शर्मा
9. विकलांग एकीकृत शिक्षा योजना 6 पुराने	2202 सामान्य शिक्षा 01 प्राथमिक शिक्षा 800 अन्य व्यय चिकित्सा	संवेतन यात्रा व्यय चिकित्सा व्यय	15,44,000 15,000 15,000	सहायक निदेशक 1 (18) मनोवैज्ञानिक 1 (11) अध्यापक श्रेणी-III 54 (7)

उ.प्रा.वि.	(1) विकलांगों हेतु एकीकृत शिक्षा केन्द्र प्रवर्तित योजना	कार्यालय प्रभार अन्य प्रभार	1,08,000 518000 22,00000	चतुर्थ श्रेणी कर्म. 18 (1) 74 पद
(ब) विकलांगो हेतु एकीकृत शिक्षा नया 10 उ.प्रा.वि.	(--,,--)	संवेतन यात्रा व्यय - चिकित्सा व्यवय कार्यालय व्यय कुल	9,70,000 19,35,000 29,05,000	अध्यापक तृतीय श्रेणी 40 (7) चतुर्थ श्रेणी कर्म. 10 (1) 50 पद
(स) विकलांगों हेतु एकीकृत शिक्षा मा.वि./सी.उमा.वि.	(वही)	संवेतन यात्रा व्यय चिकित्सा व्यय कार्यालय व्यय योग	3,87,000 6,000 4,000 11,61,000 15,58000	अध्यापक द्वितीय श्रेणी 12 (11) चतुर्थ श्रेणी कर्म. 6 (1) 18 पद
अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम	2202 सामान्य शिक्षा 01 - प्राथमिक शिक्षा 800 - अन्य व्यय III 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए कार्यक्रम अनौपचारिक शिक्षा । प्रशिक्षण (केन्द्र प्रवर्तित योजना)	संवेतन यात्रा व्यय चिकित्सा व्यय कार्यालय व्यय अन्य प्रभार	2,80,000 12,000 10,000 10,000 14,54,000 17,68,000	उपनिदेशक 1 (23) कन्सलटेंट 4 (19) आशुलिपिक 1 (19) कनिष्ट लिपिक 1 (7) चतुर्थ श्रेणी कर्म. 1 (1)
अंग्रेजी जिला केन्द्र के अधिकारियों आदि के वेतन	2202 सामान्य शिक्षा 80 सामान्य 004 अनुसंधान (4) अंग्रेजी जिला	रकम चालान से जमा कराई जाती है। उसी के आधार पर उक्त हैड से वेतन डा की		चीफ ट्यूटर 1 ट्यूटर 3 श्री शांतिलाल आमेटा श्री मोहन लाल भटनागर

की राशि	केन्द्र	जाती है ।			श्री अशोक कुमार भटनागर	
केन्द्र प्रवर्तित	केन्द्र प्रवर्तित योजना				डॉ. पूर्णिमा शर्मा	
ग्रामीण क्षेत्रों के	277 = शिक्षा	58000/-				
माध्यमिक स्तर	(ब) माध्यमिक शिक्षा					
के प्रतिभावान	(ग) छात्रवृत्तिया					
बच्चों हेतु	2 - अन्य संस्थान					
	(आयोजना भिन्न व्यय)					
	1- ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के प्रतिभावान बच्चों हेतु राष्ट्रीय छात्रवृत्ति					
1 1 राज्य स्तरीय विज्ञान सेमीनार	-	3500.00	खर्च 4120.00			
विज्ञान एवं	सहायता	- 39450.00	-	-		
प्रौधोगिकी विभाग	अनुदान राशि	(विज्ञान केन्द्र के लिए				
सचिवालय, जयपुर		सहायतार्थ अनुदान राशि)				
		206000.00				
		पर्यावरण योजना हेतु				
विज्ञान शिक्षण	पी.डी.एकाउन्ट	8,18000.00	व्यय 4756.50			
सुधार योजना	में		शेष 813243.50			
ग्रामीण प्रतिभावान	ड्राफ्ट से (संयुक्त	1,37275.00	(अ) 104602.10	खर्च	3 केम्प	
छात्रवृत्ति	निदेशक जयपुर से	सन् 84 से 89	(ब)		2 केम्प 21 दिन	
	प्राप्त	तक के पेंडिंग बिलों			गुरु गोविन्द सिंह उ.मा.वि. उदयपुर	
		का भुगतान			गुरु नानक संस्थान जयपुर	
					5 दिवसीय साक्षात्कार शिविर रा.उ.मा.वि. आदर्श नगर	

जयपुर ।

आवास योजना	बजट से	भवन (हॉस्टल निर्माण)		50,000
(हॉस्टल)	2202 सामान्य शिक्षा	हेतु 50,000		पी डब्ल्यू डी में जमा कराए गए
	02 माध्यमिक शिक्षा	फर्निचर इत्यादि हेतु		57,000 खर्च
	104 रा मा वि.	65000,00		1,15,000.00
	(11) लड़कों के विद्यालय	कमरों वी.आई.पी. रुम		पी.डब्ल्यू.डी. में जमा
	आयोजना व्यय	निर्माण 115000		कराने हेतु बिल भेजा है ।
एस.टी.सी.	2202 सामान्य शिक्षा	संवेतन	67,000	3 केम्प
कोर्स	02 माध्यमिक शिक्षा	यात्रा	18,000	2 केम्प 21 दिन
	105 शिक्षक प्रशिक्षण	व्यय		गुरु गोविन्द सिंह उ.मा.वि. उदयपुर
	(1) प्रशिक्षण प्राप्त कर	कार्यालय व्यय	10,000	गुरु नानक संस्थान, जयपुर
	रहे अध्यापकों पर	विज्ञापन	4000	5 दिवसीय साक्षात्कार शिविर रा.उ.मा.वि. आदर्श नगर, जयपुर
	व्यय	विक्रय प्रचार व्यय		
	(आयोजना भिन्न व्यय)	प्रयोगशाला	7,000	
			106000/-	

राज्य स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय
कार्यक्रमों में
शैक्षिक अधिकारियों की सहभागिता

श्री सी. के. नागर, निदेशक रा. रा., शै. अ. प्र. संस्थान, उदयपुर द्वारा राज्य स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय कार्यक्रमों में सहभागिता (1989-90)

कार्यक्रम	स्थान	तिथियाँ
1. पी. मोस्ट की बैठक	सचिवालय, जयपुर	अप्रैल 89
2. पी. मोस्ट के की-पर्सन कार्यक्रम का अवलोकन	रिजनल कालेज, अजमेर	"
3. पी. मोस्ट की बैठक में भाग लिया	एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली	"
4. डाईट की बैठक में भाग लिया,	विशेषाधिकारी शिक्षा जयपुर	"
5. की-पर्सन एवं रिसोर्स पर्सन गोष्ठी का अवलोकन		"
6. व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण केम्प का निरीक्षण		"
7. पी. मोस्ट की बैठक में भाग लिया	शिक्षा-सचिव, जयपुर	"
8. रिसोर्स पर्सन्स के सम्बन्ध में स्कूल का निरीक्षण किया		
9. पी. मोस्ट की बैठक में भाग लिया	एन. सी. आर. टी., नई दिल्ली	"
10. विशेषाधिकारी शिक्षा एवं निदेशक, विकास विभाग, जयपुर द्वारा आयोज्य बैठक में भाग लिया ।	सचिवालय, जयपुर	"
11. पी. ए. सी. की बैठक	जयपुर	"
12. P. Most की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के शिविरों का निरीक्षण	पोद्दार स्कूल, जयपुर	मई 89
13. सेन्ट्रल स्पोन्सर्ड सम्बन्धी बैठक में भाग लिया	शिक्षा सचिव, जयपुर	"
14. श्रव्य-दृश्य शिक्षाधिकारी से कार्यक्रम के सम्बन्ध में विचार-विमर्श		"

15. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के शिविरों का अवलोकन	ब्यावर	"
16. 3 विद्यालयों में रा. शि. नी. के शिविरों का अवलोकन	अजमेर	"
17. रा. शि. नि. के शिविरों के अवलोकन	दूदू	"
18. रा. शि. नी. के शिविरों का अवलोकन	पोद्दार व आदर्शनगर, जयपुर	"
19. समंकों के संकलन, सरलीकरण, मूल्यांकन व विश्लेषण की बैठक में भाग लिया	शिक्षा सचिवालय, जयपुर	"
20. रा. शि. नी. के शिविरों का अवलोकन	खण्डेलवाल और गांधीनगर, जयपुर	"
21. रा. शि. नी. के. शिविरों का अवलोकन	चौमु	"
22. अधिशासी परिषद् की बैठक में भाग लिया ।	राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तक मण्डल सचिवालय, जयपुर	"
23. पी. मोस्ट के शिविरों का निरीक्षण केथून उर्दू शिविरों का निरीक्षण	अजमेर, पुष्कर, गोनेर, परशुराम द्वारा दरबार से जयपुर, पावटा (जयपुर) आमेर (जयपुर), हीरापुर, टांक, आदर्श उ. मा. वि. जयपुर, बुन्दी, श्रीपुरा, गुमानपुरा, सूरजपोल, भवानीमण्डी (कांटा) उ. मा. वि. चित्तोड़गढ । केथून ।	जून 89
24. डाईट की बैठक में भाग लिया	उपसचिव, शिक्षा, जयपुर के कक्ष में	
25. विनियोग वित्त लेखा 84-85 सिविल रिपोर्ट व व्यावसायिक शिक्षा सम्बन्धी गोष्ठी का उद्घाटन किया	विशिष्ट शासन सचिव, सचिवालय जयपुर के कक्ष में	
26. जन लेखा सम्बन्धी बैठक में भाग लिया		
27 व्यावसायिक शिक्षा प्रशिक्षण के समापन में भाग लिया ।		जून 89

28.	सुलेख विशेष योजना के सम्बन्ध में "प्यास जगाओ" शि.प्र. पाठ्यक्रम सम्बन्धी बैठक में भाग लिया	महावीर (उ.मा.वि. जयपुर)	जुलाई/अगस्त 89
29.	ध्यानाकर्षण प्रस्ताव में शारीरिक शिक्षा की मांगों के सम्बन्ध में गठित समिति की बैठक में भाग लिया	सचिवालय, जयपुर	
30.	अंग्रेजी विषय की कार्य गोष्ठी में	रा.गो. उ.मा.वि., नाथद्वारा	
31.	रा.पा.पु.मण्डल एवं. शिक्षाकर्मी, बोर्ड के सहायक निदेशक के साक्षत्कार हेतु		
32.	डाइट एवं शिक्षाकर्मी की टास्क फोर्स की बैठक में भाग लिया ।		
33.	युनेस्को द्वारा छात्राओं के प्राथमिक शिक्षण पर कार्यशाला	नइ दिल्ली	"
34.	जनशिक्षण निलियम के लिए जवाहर योजना के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया ।	जयपुर	"
35.	शिक्षक दिवस समारोह में भाग लिया	जयपुर	सित./अक्टूबर 89
36.	टास्कफोर्स तथा पुस्तक मेला समिति की बैठक में भाग लिया ।	जयपुर	
37.	जिला एवं मण्डल अधिकारियों की बैठक में भाग लिया	(संस्थान गुरुनानक)	"
38.	पी.आई.ई.डी. व डी.आर.सी. प्रोजेक्ट पर चर्चा	शिक्षा सचिव, जयपुर	"
39.	लोक सेवाआयोग के साक्षात्कार में विशेषज्ञ के रुप में भाग लिया ।	अजमेर	"
40.	पी.आइ.ई.डी. व डी.आर.सी.के स्टाफ के वेतन के सम्बन्ध में वार्ता	विशेषाधिकारी शिक्षा	"
41.	टास्क फोर्स की बैठक में भाग लिया।	मानव संसाधन मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली	"
42.	शिक्षा सचिव/विशेषाधिकारी से सम्मेलन तथा एम्वावर्ड समिति की बैठक में भाग लिया	जयपुर	"

43. टास्क फोर्स की बैठक में भाग लिया	जयपुर	"
44. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बैठक में भाग लिया	अजमेर	"
45. श्रव्य-दृश्य शिक्षा के रिक्त पदों को-भरने हेतु साक्षात्कार ।	जयपुर	"
46. केप सलाहकार की बैठक तथा विशेषाधिकारी शिक्षा से संस्थान के कार्यक्रम के सम्बन्ध में चर्चा	गुरु नानक संस्थान, जयपुर	"
47. जिला सन्दर्भ केन्द्रों के सम्बन्ध में वार्ता	शिक्षा सचिव व विशेषाधिकारी, जयपुर	नव/दिस. 89 एवं जन. 90
48. शिक्षा कर्मी बोर्ड व प्रौद्योगिकी शिक्षा केन्द्र का निरीक्षण	जयपुर	"
49. एस. डी. जी. की बैठक में भाग लिया	सचिवालय जयपुर	"
50. श्रव्य-दृश्य शिक्षा कार्यालय अजमेर का निरीक्षण	अजमेर	नव. दिस. 89 एवं जन. 90
51. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बैठक में भाग लिया		
52. पी. मोस्ट की बैठक में भाग लिया	नई दिल्ली	"
53. शिक्षा आयुक्त महोदय द्वारा आयोज्य बैठक में भाग लिया	सचिवालय जयपुर	"
54. मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा आयोजित इंडिया इन्टरनेशनल सेन्टर कान्फ्रेंस में भाग लिया	नई दिल्ली	"
55. ई. टी. सेल का निरीक्षण किया	जयपुर	"
56. राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, अजमेर की बैठक में भाग लिया।		
57. विज्ञान मेले का उद्घाटन	नागोर	"
58. शिक्षाकर्मी बोर्ड का अवलोकन व प्रौढ़ शिक्षा कार्यालय का निरीक्षण किया।	जयपुर	"
59. रा. पा. पु. मण्डल तथा विशेषाधिकारी शिक्षा से विचार विमर्श	विशेषाधिकारी कक्ष, जयपुर	"
60. मा. शि. बोर्ड की बैठक में भाग लिया	अजमेर	"

61.	एज्युकेशनल व वोकेशनल के जयपुर में आयोज्य वार्षिक कार्यक्रम में भाग लिया	जयपुर	"
62.	एस.टी.सी. प्रवेश, फॉर्म,प्रवेश नियमों की सरलीकरण हेतु बैठक में भाग लिया ।	राज्य उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, अजमेर	फरवरी-मार्च 90
63.	पी-मोस्ट की युनिसेफ ऑफिस जयपुर में आयोज्य बैठक में भाग लिया	जयपुर	"
64.	डाइट्स के आचार्यों की बैठक व जिला संदर्भ केन्द्रों के लिए विचार विमर्श	जयपुर ओ.एस.डी. जयपुर	"
65.	श्रव्य - दृश्य शिक्षा का अवलोकन		"
66.	क्रम समिति की बैठक में भाग लिया	बीकानेर	"
67.	ई.सी.ई. से सम्बन्धित बैठक में भाग लिया ।	शिक्षा सचिव,जयपुर	"
68.	श्रव्य - दृश्य शिक्षा कार्यालय का अवलोकन कार्यक्रम		"
69.	प्रशिक्षण सम्बन्धी बैठक	राजकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय जोधपुर	फरवरी-मार्च 90
70.	जिला स्तरीय वित्तीय प्रणाली का उद्घाटन किया	सलूम्बर(उदयपुर)	"
71.	ओ.एस.डी. से कार्यक्रम सम्बन्धी विचार विनर्श	जयपुर	"
72.	कक्षा 6हिन्दी की पुस्तक के सम्बन्ध में चर्चा ।	विशिष्ट शिक्षा सचिव, जयपुर	"
73.	एस.टी.सी.पी-मोस्ट सम्बंधित बैठक में भाग लिया	श्रव्य-दृश्य शिक्षा कार्यालय	"
74.	एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा मद्रास में आयोजित एस.आई.ई.आर.टी./ एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. के निदेशकों की बैठक में भाग लिया	नई दिल्ली	"

संस्थान से राज्य से बाहर यात्रा करने वाले अधि0/कर्म0 का विवरण

संस्थान से राज्य से बाहर यात्रा करने वाले अधि0/कर्म0 का विवरण

क्र0 सं0	राज्य से बाहर यात्रा करने वाले अधिकारी कर्मचारी का नाम व पद	यात्रा स्थल एवं दिनांक तथा अवधि	यात्रा का प्रयोजन
1.	2.	3.	4.
1-	श्रीमती जकिया जिश्ती सहायक निदेशक	दिल्ली,30नवम्बर 1 दिसम्बर,1989	यूनिसेफ प्रायोजना के 1989में प्लान आफ एक्शन की समीक्षा एवं 1990 के लिये प्लान तैयार करने हेतु
2-	श्री बशीर अहमद परवेज अनुसंधान सहायक	नई दिल्ली 27मार्च,से 4अप्रेल,1989	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य प्रशिक्षण शिविर में संदर्भ व्यक्ति का कार्य सम्पादन
3-	श्री चेतन स्वरूप मेनारिया, अनुसंधान सहायक	नई दिल्ली 3 मई से 6 मई ,1989	आपरेशन ब्लेक बोर्ड के किट्स एवं पी-मोस्ट का बजट लेने हेतु ।
4-	श्री जगदीश दत्त शर्मा, अनुसंधान सहायक	नई दिल्ली 7 से 9 जून,89	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मोड्यूल्स मुद्रण एवं अभिनवन प्रशिक्षण की राशि लेने हेतु ।
		नई दिल्ली 1 से 5 जन.89	आपरेशन ब्लेक बोर्ड के मोड्यूल्स की समीक्षा करने हेतु ।
5-	श्री नरेन्द्र शर्मा,अनुसंधान सहायक	नई दिल्ली,3 से 6 जुलाई ,89	यूनिसेफ प्रायोजना-4 की अर्द्धवार्षिक समीक्षा में भाग लेने हेतु ।
		नई दिल्ली,6 से 9 नव. 89	बाल साहित्य की तीन पुस्तकें विशेष परिस्थितियों में आफ् सेट के लिये दी गयी, अत: उनकी स्वीकृति प्राप्त करने हेतु और साथ ही एक और तैयार पुस्तक के इलेस्ट्रेशन को अनुमोदित कराने हेतु ।
		नई दिल्ली,15 से 18 नव.89	यूनिसेफ प्रायोजना के मुद्रण एवं वार्षिक हिसाब के पुनर्भरण हेतु ।
6-	डॉ.(श्रीमती)रेणु चौधरी, सहायक निदेशक	एन.सी.ई.आर.टी. नईदिल्ली 4-9-89 से 20-10-89 तक	महिला शिक्षा सर्टिफिकेट कोर्स
7-	श्रीमती रंजना श्रीमाली , सहायक निदेशक	एन.सी.ई.आर.टी.नई दिल्ली 7 से 8 अगस्त,89	आई.ई.डी.स्कीम के बजट के क्रम में
		12से18दिस.1989	प्रोजेक्ट पी.आई.ई.डी. की बैठक एवं कम्प्यूटर सम्बन्धी प्रशिक्षण के क्रम में ।

8-	श्री होमी जे0 कावसजी, समन्वयक(आई.ई.डी.)	एन.सी.ई.आर. नई दिल्ली 17 से 18 अग.89	नेशनल कान्फेन्स ऑफ एन.जी .ओ. "स एण्ड स्टेट आफिशनल्स ऑन आई.इ.डी.
		एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 15 से 17 नव0 89	संस्थान के विभिन्न यूनिसेफ प्रोजेक्ट्स का हिसाब पहुंचाने एवं पुनर्भरण की कार्यवाही करने हेतु ।
9-	डॉ.(श्रीमती) ओमवती सक्सेना अनु0अधि0	आर.सी.ई.भोपाल 27 से 29 नव.89	द्वितीय एशियन काफेन्स में पत्रवाचन हेतु ।
10-	श्री वासुदेव चतुर्वेदी, अनुसंधान सहायक	एन.सी.ई.आर.टी.नई दिल्ली 27 फरवरी 89 से 2 मार्च,89 तक	मातृभाषा हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम निर्माण सम्बन्धी मार्गदर्शक निर्देश बनाने हेतु ।
		एन.सी.ई.आर. 2 से 4 जन.90	ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड की हिन्दी सामग्री को रिव्यू करना ।
11-	श्री शिलप्रिय गुप्त अनुसंधान अधिकारी	राधानाथ आई.ए.एस. ई.कटक,5 से 14 फरवरी,1990 तक	कार्यशाला :-Development of SAMPLE SURVEY DESIGN "
12-	श्रीमती प्रकाश कौर, वरिष्ठ व्याख्याता	एन.आई.पी.सी.सी.डी नई दिल्ली,11से12 अक्टू.89	पूर्व प्राथमिक शिक्षा
		15 से 16नव.89	एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली के शिक्षक
		एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	शिक्षा विभाग में पी-मोस्ट के सम्बन्ध में ।
		11से15 दिस.89तक दिल्ली	---- "" --------
		23 दिस.1989	---- "" --------
		26 दिस.1989	---- "" --------
13-	श्री दिलीप सिंह चौहान अनुसंधान अधिकारी	आर.सी.ई.भोपाल,27 से 29 नवम्बर 89	द्वितीय एशियन कान्फेन्स में पत्रवाचन
		एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली 12से14 दिस.89	पी-मोस्ट 89 की राष्ट्रीय रिव्यु मीटिंग ।
		एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 2 से 4 जन.90	पी-मोस्ट ओपी-90 की सामग्री को रिव्यू करने की कार्यगोष्ठी
14-	श्री अशोक कुमार माथुर वरिष्ठ व्याख्याता	आर.सी.ई.भोपाल, 27-29 नव.89	दूसरी एशियाई शिक्षक प्रशिक्षण कान्फेन्स,शिक्षक प्रशिक्षण को नई दिशा देना।
		एन.सी.ई.आर.टी.नई दिल्ली 14से 20 सित.1989 तक	कक्षा 12 वीं के लिए अंग्रेजी के इकाई प्रश्न निर्माण कार्यगोष्ठी,कक्षा 12वीं के लिए परीक्षण सामग्री तैयार करना ।
15-	श्री वासुदेव शास्त्री	एनसीईआरटी,नई	कक्षा 12वीं की संस्कृत पाठ्यपुस्तक निर्माण,

	अनुसंधान सहायक	दिल्ली 16से21 अगस्त 1989 नई दिल्ली 27से28 सित. 89 16से20नव0,1989 क्षेत्रीय कार्यालय एन.सी. ई.आर.टी. पटना। (बिहार)	संस्कृत कविता कादम्बिनी पाठ्यपुस्तक लेखन ---- "" ---- ---- "" ----
16-	श्रीमती भुवनेश्वरी भटनागर अनुसंधान सहायक	केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान,मैसूर,26दिस. से 2 जन.90	बागडी-हिन्दी भाषा परियोजना सामग्री निर्माण, बागडी छात्रों के लिए भाषा प्रवेशिका तैयार करना, बागडी-हिन्दी शब्द कोष तैयार करना।
17-	श्रीमती शकुन्तला पंड्या सहायक निदेशक	इलाहाबाद,वि.वि. 6 दिन	मानवीय नृत्य संदर्शिका निर्माण कार्यगोष्ठी शिक्षकों के उपयोगार्थ माड्यूल कक्षा 1 से 10 तक ।

1- शैक्षिक एवं मंत्रालयिक कर्मचारियों की सूची (31 मार्च 90 की स्थिति)

श्री चन्द्र कान्त नागर , निदेशक

1- मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग -

1-	श्रीमती स्वदेश कुमारी गुप्ता	विभागाध्यक्ष एवं संयुक्त निदेशक
2-	श्री हरिश्चन्द्र शर्मा	(वरिष्ठ व्याख्याता) अंग्रेजी भाषा - अंग्रेजी सुदृढ़ीकरण
3-	श्री लक्ष्मीनारायण दवे	(" ") अंग्रेजी भाषा (संस्थान)
4-	श्री अशोक कुमार माथुर	(" ") अंग्रेजी भाषा सुदृढ़ीकरण
5-	श्रीमती कमला जैन	(सहायक निदेशक) हिन्दी
6-	श्री वासुदेव शास्त्री	(अनुसंधान सहायक) संस्कृत
7-	श्री युगल किशोर शर्मा	(" ") कला शिक्षा
8-	श्री मोहन करनानी	(" ") सिंधी भाषा
9-	श्री अब्दुल हमीद मेवा फरोश	(" ") उर्दू भाषा
10-	श्रीमती भुवनेश्वरी भटनागर	(" ") समाज विज्ञान
11-	रिक्त	(" ") गुजराती भाषा
12-	रिक्त	(" ") पंजाबी
13-	श्री ओम प्रकाश जैन	(कनिष्ठ लिपिक)
14-	श्री नरेन्द्र कुमार मुर्डिया	" "
15-	श्री छोटूलाल वैष्णव	" "
16-	श्री फतहलाल	(चतुर्थ श्रेणी कर्म.)
17-	श्री घासीलाल शर्मा	" "
18-	श्री मोतीलाल शर्मा	" "

जिला संदर्भ्य केन्द्र (अंग्रेजी)

19-	श्री शांतिलाल आमेटा	(चीफ ट्यूटर)
20-	श्री अशोक कुमार भटनागर	(ट्यूटर)
21-	श्री मोहनलाल भटनागर	(")
22-	डॉ0 पूर्णिमा शर्मा	(")

विज्ञान एवं गणित विभाग

23- .....रिक्त	विभागाध्यक्ष एवं उपनिदेशक
24- श्री सुरेश चन्द्र शर्मा	वरिष्ठ व्याख्याता
25- श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी	" "
	प्रोजेक्ट ऑफिसर - जनसंख्या शिक्षा
26- श्री .....(रिक्त)	अनुसंधान अधिकारी जनसंख्या शिक्षा
27- श्रीमती राजकुमारी भटनागर	" " " "
28- श्री.....(रिक्त)	" " " "
29- श्री हरवंश कौर	अनुसंधान सहायक " "
30- श्रीमती प्रेम प्यारी भटनागर	सहायक निदेशक
31- श्री.....(रिक्त)	अनुसंधान अधिकारी गणित
32- श्री गणपत लाल बुरड़	अनुसंधान सहायक गणित
33- श्री अहमद जफर	अनुसंधान सहायक
34- श्रीमती निर्मला जैन	" "
35- श्री चन्दनसिंह आवरा	" "
36- श्री हर्ष लाल नंदवाना	अनुसंधान सहायक प्रभारी न्हीस प्रोजेक्ट
37- श्री ईश्वरी प्रसाद शर्मा	" " स्वास्थ्य एवं शा. शिक्षा
38- श्री संतकुमार अस्थाना	" " सामुदायिक केन्द्र विज्ञान प्रभारी
39- श्री बलवंत कुमार जैन	" " " " "
40- श्री देवीसिंह राणावत,	आशुलिपिक
41- सुश्री इन्दुमती सोनी ,	कनिष्ठ लिपिक
42- श्री शम्भूदयाल पानेरी ,	कनिष्ठ लिपिक जनसंख्या शिक्षा प्रायोजना
43- श्री मोहन लाल शर्मा ,	वाहन चालक
44- श्री भंवरलाल डांगी ,	प्रयोगशाला सहायक उ. प्रा. विज्ञान
45- श्री राजकुमार आंचलिया ,	प्रयोगशाला सहायक उ. मा. विज्ञान
46- श्री सत्येन्द्रसिंह लोढ़ा,	रेडियो मैकेनिक प्राथमिक
47- श्री अमृतलाल शर्मा ,	प्रयोगशाला सहायक गणित
48- श्री मनोहरलाल नाई ,	प्रयोगशाला सेवक उ. प्रा.
49- श्री फतहसिंह ,	प्रयोगशाला सेवक माध्यमिक
50- श्री दामोदर	" " प्राथमिक
51- श्री बद्रीलाल	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी जनसंख्या शिक्षा प्रायोजना
52- श्री शिवसिंह	" "
53- श्री रामलाल	" "

कार्यशाला

54- श्री इन्द्रलाल पालीवाल
55- श्री पूनमचन्द गायरी
56- श्री राजेन्द्र कुमार सालवी
57- श्री माणकलाल मिस्त्री
58- श्री भगवतीलाल सैन , मिस्त्री
59- श्री भगवतसिंह देवड़ा
60- श्री भगवतीलाल सेन - (सामुदायिक केन्द्र) मैकेनिक

3- मनोवैज्ञानिक आधार एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग

61- श्री शरद चन्द्र पुरोहित — प्रोफेसर व्यावसायिक शिक्षा
62- श्री हजारी लाल सुखवाल — रीडर व्यावसायिक शिक्षा
63- श्री गणेश लाल शर्मा — अनुसंधान अधिकारी व्यावसायिक शिक्षा
64- श्रीमती राजकुमारी भार्गव — सहायक निदेशक व्यावसायिक शिक्षा
65- श्री रणजीत सिंह भंडारी — परामर्शद एवं अनुसंधान सहायक व्यावसायिक निर्देशन

(उप प्रायोजना टीम)

66- श्री रामनारायण अटोलिया — उप प्रायोजना अधि. (जयपुर)
67- श्रीमती मीना झा — अनुसंधान अधि. उपप्रायोजना कार्या. (जयपुर)
68- श्री मशीद अली — कनिष्ठ लिपिक
69- श्री ओम प्रकाश — चतुर्थ श्रेणी कर्म.
70- श्री जगतसिंह — ड्राइवर R.R.G. 883
71- श्री नरेन्द्र भार्गव — (कौंसिलर) रा. पोद्दार उ. मा. वि. जयपुर
72- श्री घनश्याम चाँदवानी — " रा. सार्दूल सी. उ. मा. वि. बीकानेर
73- श्री गोपालदास के कल्ला — " रा. महिला सी. उ. मा. वि. जोधपुर
74- श्री डी. डी. माथुर — " रा. तोपदड़ा सी. उ. मा. वि. अजमेर
75- श्री राजेन्द्र गुप्ता — " रा. गुमानपुरा सी. उ. मा. वि. कोटा
76- श्री बजरंग प्रसाद सक्सेना — " रा. दरबार सी. उ. मा. वि. जयपुर
77- श्री उदयलाल मेनारिया — आशुलिपिक
78- श्री श्रीचंद भटनागर — वरिष्ठ लिपिक
79- श्री मानसिंह चौहान — कनिष्ठ लिपिक
80- श्रीमती शान्ता देवी जैन — " "
81- श्री मोतीलाल शर्मा — चतुर्थ श्रेणी कर्म.
82- श्रीमती कंकूबाई — " "

4- शिक्षक शिक्षा विभाग

83- श्री सुरेन्द्र कुमार त्रिपाठी	उपनिदेशक एवं विभागाध्यक्ष
84- श्रीमती प्रकाश कौर	वरिष्ठ व्याख्याता एवं मूल्यांकन अधि.
85- श्री कृष्ण कुमार दशोरा	अनुसंधान अधि., सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण
86- श्री दिलीपसिंह चौहान	" पी मोस्ट
87- श्री गोवर्धन किशोर यादव	" सेवा पूर्व प्रशिक्षण
88- श्रीमती चन्द्रा शर्मा	सहायक निदेशक, सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण
89- श्री चेतन स्वरूप मेनारिया	अनु. सहा. पी मोस्ट
90- श्री भगवती लाल शर्मा	" सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण
91- श्रीमती सरोज भटनागर	अनु. सहा. पी मोस्ट
92- श्री जयंतराय नागर	कार्यालय सहायक
93- श्री नगेन्द्रसिंह चौहान	स्टेनो
94- श्री महावीर प्रसाद तपोदी	कनिष्ठ लिपिक
95- श्री भंवरसिंह चौहान	"
96- श्री खेमराज चौबीसा	चतुर्थ श्रेणी कर्म.
97- श्री गोविंद राम श्रीमाली	"
98- श्री कृष्ण स्वरूप शर्मा	उपनिदेशक एवं विभागाध्यक्ष
99- श्री कुंज बिहारी शर्मा	उपनिदेशक (क)
100-श्री परमानंद आचार्य	वरिष्ठ व्याख्याता
101-श्री हरिश्चन्द्र ढक	अनुसंधान अधि.
102-सुश्री गोदावरी मीरचंदानी	"
103-श्री सत्यदेव श्रीमाली	"
104-श्री ऋषिराज तिवारी	सहायक निदेशक
105-श्री शांतिलाल मेहता	अनुसंधान सहायक
106-श्रीमती रेणुका मल्होत्रा	" "
107-श्री मंजू व्यास	" "
108-श्री दिलीप टाँक	" "
109-श्रीमती पुष्पलता जैन	" "
110-श्री दिनेशचन्द्र श्रोत्रिय	सांख्यिकी अधि.
111-श्री कन्हैयालाल पाटीदार	सांख्यिकी सहायक
112-श्री लादू लाल सोनी	आशुलिपिक
113-श्री सुरेश कुमार सुखवाल ,	कनिष्ठ लिपक
114-श्री भागीरथ लौहार ,	कनिष्ठ लिपिक
115-श्री गणेशलाल कुम्हार,	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

116-श्री दौलत राम गमेती,	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

लेखा शाखा

117-श्री सुरेशचन्द्र पाटनी	सहायक लेखाधिकारी
118-श्री भगवतीलाल शर्मा	लेखाकार
119-श्री शंकर लाल ज्ञानी	" "
120-श्री लक्ष्मीलाल कुमावत	कनिष्ठ लेखाकार
121-श्री काशीराम दवे	कार्यालय सहायक
122-श्री सुरेशचन्द्र शर्मा ,	वरिष्ठ लिपिक (स्थाई स्टोर)
123-श्री बसन्त तिवारी	" " (अस्थाई स्टोर)
124-श्री विनोद कुमार पारीख ,	" "
125-श्री भविष्य कुमार पांडे	कनिष्ठ लिपिक
126-श्री महेन्द्रसिंह त्यागी	" "
127-श्री कमल प्रकाश जैन	" "
128-श्री शिवनारायण हैगात	" "
129-श्री किशोर सिंह राजपूत	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

पुस्तकालय

130-श्री मुकुन्द राय नागर	पुस्तकालय अध्यक्ष (प्रभारी)
131-श्रीमती इन्दिरा मेहता	" " ग्रेड प्रथम
132-श्री शान्तिलाल लढ़ढा	" " " "
133-श्री शौकत अली	सहा. पुस्तकालय अध्यक्ष ग्रेड III
134-श्री अम्बालाल मेनारिया	बुकलिफ्टर
135-श्री राधेश्याम पालीवाल	चतुर्थ श्रेणी.

संस्थापन शाखा

136-श्री शांतिलाल जैन	कार्यालय सहायक
137-श्री लक्ष्मीलाल श्रीमाल	वरिष्ठ लिपिक
138-श्री गजेन्द्र कुमार जैन	कनिष्ठ लिपिक
139-श्री सत्यप्रकाश कुरावत	वरिष्ठ लिपिक
140-श्री इन्द्रलाल बाधवानी	कनिष्ठ लिपिक
141-श्री भगवान खारीवाल	- " -
142-श्री खेमराज मीणा	बढ़ई (लुहारी कार्य)डिस्पेचर
143-श्रीमती सूरज बाई	चतुर्थ श्रेणी कर्म.

144-श्री नारायण सिंह	---" ----" --

6- शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग.

(1) राजपत्रित

145-...(रिक्त)	रीडर, शैक्षिक प्रौद्योगिकी
146-सुश्री कुसुम जोशी	अनुसंधान अधिकारी
147-श्री मुहम्मद अलीम	सहायक निदेशक
148-श्री सुखदेव प्रकाश माथुर	श्रव्य दृश्य शिक्षा अधिकारी
149-श्रीमती कौशल्या पारवानी	प्रोग्रामर पदेन स्क्रिप्ट राइटर
150-श्री रमेश चन्द्र शर्मा	व्याख्याता
151-श्री बी.एल. वर्मा	व्याख्याता
152-श्री उम्मेद राम काबरा	"
153-श्री वी.के. माथुर	"
154-श्री अब्दुल अहद	सुपरवाईज़र
159-श्री प्रभूनारायण शर्मा	कार्यालय अधीक्षक
160-श्री आनन्द सेवाराम	कार्यालय सहायक
161-श्री भंवरसिंह तंवर	फिल्म लाइब्रेरियन
162-श्री एम.एन. रायचंदानी	वरिष्ठ लिपिक पदेन स्टोरकीपर
163-श्री जगदीश प्रसाद	वरिष्ठ लिपिक
164-श्री भगवान दास मोजवानी	वरिष्ठ लिपिक
165-श्री वी.जी. आसवानी	वरिष्ठ लिपिक
166-रिक्त	कलाकार
167-रिक्त	कनिष्ठ लिपिक
168-रिक्त	कनिष्ठ लिपिक
169-श्री निगम चन्द	मैकेनिक
170-श्री भंवरलाल शर्मा	फिल्म चैकर
171-श्री शंकरसिंह	वाहन चालक
172-श्री जगतसिंह	वाहन चलक
173-श्री ओम प्रकाश	प्रचालक
174-रिक्त	प्रचालक
175-श्री सूरजमल	कारपेन्टर
176-श्री गोमसिंह	जमादार
177-श्री हजारी	च.श्रे.कर्म.
178-श्री पांचूलाल	" "

179-तारासिंह	" "
180-श्री ब्रजमोहनसिंह	" "
181-श्री .....रिक्त	" "
182-श्री ...रिक्त	" "

7. शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रसार सेवा विभाग

183-श्री दुलीचंद जैन	उपनिदेशक एवं विभागाध्यक्ष
184-डॉ0 श्यामसिंह मंडालिया	अनुसंधान अधिकारी
185-डॉ0 ओमवती सक्सेना	" "
186-श्री शीलप्रिय गुप्ता	" "
187-श्री चाँदसिंह मुर्डिया	सहायक निदेशक
188-श्री आशा माथुर	" "
189-श्री वासुदेव चतुर्वेदी	अनुसंधान सहायक
190-श्री नारायण लाल श्रीमाली	" "
191-श्री रिक्त पद	" "
192-श्री हुक्मीचंद नागदा	आशुलिपिक
193-श्री फौजासिंह चौहान	कनिष्ठ लिपिक
194-श्री संजीव भटनागर	" "
195-श्री भेरुलाल डाँगी	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
196-श्री जगदीश चन्द्र शर्मा	" "

8. अनौपचारिक शिक्षा एवं विशिष्ट शिक्षा विभाग

197-श्री इन्द्र देव सक्सेना	उपनिदेशक एवं विभागाध्यक्ष
198-श्री देवकी नंदन पालीवाल	अनुसंधान अधिकारी
199-श्रीमती सुशीला सालगिया	" "
200-श्री हरि नारायण डाबी	" "
201-सुश्री जोगेन्द्र आरोड़ा	" "
202-श्रीमती रंजना श्रीमाली	सहायक निदेशक
203-श्रीमती रेणु चौधरी	" "
204-सुश्री	...
205-श्री होमी जे. कावसजी	अनुसंधान सहायक
206-श्री सैयद शाह नवाज	" "
207-श्रीमती पंकज शर्मा	" "
208-श्री रमेश शर्मा	आशुलिपिक

209-श्री अजय कोठारी	कनिष्ठ लिपिक
210-श्री रूपलाल मीणा	चतुर्थ श्रेणी कर्म.
211-श्री पन्नालाल कुमावत	" "

शिक्षा कर्मी योजना (सीकर हाउस जयपुर)

212-...रिक्त	प्रभारी अधि.
213-श्रीमती उषा बापना	सहायक निदेशक
214-श्री मालचन्द शर्मा	" "
215-श्री डॉ. सन्त कुमार शर्मा	अनु. सहा.
216-श्री मोहम्मद सलीम भाटी	" "
217-श्री श्याम मनोहर जावाली	" "
218-श्री .....(रिक्त)	" "
219-श्री अम्बिका प्रसाद विजय	कनिष्ठ लिपिक
220-श्री बजरंग सिंह शेखावत	" "
221-श्री गिरधारी लाल सैनी	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
222-श्री घनश्याम रेगर	" "
223-श्री सावंतराम मीणा	चौकीदार

पी.आई.इ.डी. प्रोजेक्ट छबड़ा - प्रोजेक्ट टीम

224-श्री जुगल किशोर दाधीच,	परियोजना अधिकारी
225-श्री हेम किशोर शर्मा,	विशिष्ट अध्यापक
226-श्री महेश कुमार पारीक,	विशिष्ट अध्यापक
227-श्री लाल चन्द गुप्ता ,	सांख्यिकी सहायक
228-श्री शंकर सिंह,	वाहन चालक

हॉस्टल

- श्री लक्ष्मीनारायण दवे	(वार्डन)
229-श्री अशोक कुमार लोढ़ा	कनिष्ठ लिपिक
230-श्री हेमसिंह राजपूत	चतुर्थ श्रेणी कर्म.
231-श्री महेन्द्र वशिष्ठ	" " "
232-श्री शांतिलाल हिंगड़	स्टेनो - (विभाग 9)
233-श्री श्यामसुन्दर शर्मा	स्टेनो (निदेशक)
234-श्री कन्हैयालाल पारख	स्टेनो (निदेशक)
235-श्री कुंज बिहारी पुरोहित	(कनिष्ठ लिपिक) फोटो स्टेट

236-श्री मोहनलाल शर्मा	(वाहन चालक)
237-श्री भेरुलाल शर्मा	" "
238-श्री ख्याली लाल	" "
239-श्री सोमनाथ	" "
240-श्री हिम्मतसिंह	" "
241-श्री खुमाराम डाँगी	जमादार
242-श्री नंदलाल डाँगी	चतुर्थ श्रेणी कर्म.
243-श्री गोपाल माली	" "
244-श्री धन्नालाल	" "
245-श्री मांगीलाल हरिजन	" "
246-श्री सुखलाल हरिजन	" "
247-श्री रोड़ासिंह	चौकीदार
248-श्री देवीसिंह	" "

9- पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास तथा मूल्यांकन विभाग

249-श्रीमती मुन्नादेवी शर्मा	संयुक्त निदेशक एवं विभागाध्यक्ष	
250-डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर	अनुसंधान अधिकारी	
251-डॉ. जगदीश चन्द्र व्यास	" "	
252-श्रीमती जकिया चिश्ती	सहायक निदेशक	प्रोजेक्ट पूर्व प्राथमिक शिक्षा
253-श्रीमती लक्ष्मी ननमा	" "	"
254-श्री जगदीश दत्त शर्मा	अनुसंधान सहायक	
255-श्री बशीर अहमद परवेज	" "	पूर्व प्राथमिक शिक्षा
256-श्री प्रतापमल देपुरा	" "	
257-श्रीमती सुरेखा हींगड़	" "	
258-श्री मोतीलाल नंदवाणा	" "	
259-श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा	" "	पूर्व प्राथमिक शिक्षा
260-श्री .....रिक्त	" "	
261-श्री सच्चानन्द नेमनानी,	कनिष्ठ लिपिक	
262-श्री राजनारायण पालीवाल,	कनिष्ठ लिपिक	
263-श्री मांगीलाल आमेटा,	कनिष्ठ लिपिक	
264-श्री भगवतसिंह देवड़ा	आपरेटर	
265-श्री गोकुल चन्द्र सोलंकी ,	च. श्रे. कर्म.	
266-श्री गणेशलाल सुथार ,	च. श्रे. कर्म.	
267-श्री भंवरगिरि गोस्वामी,	च. श्रे. कर्म.	

शीर्षक :-

संस्थान के सत्र 1990-91 के प्रस्तावित एवं संभावित वार्षिक कार्यक्रम सत्र 1990-91

प्रशिक्षण

क्र.सं.	योजना का नाम एवं विभाग	कुल स्वीकृत राशि एवं मद	कार्यक्रम का नाम	प्रस्तावित व्यय	अवधि	संभागी संख्या	संदर्भ व्यक्ति संख्या	विशेष विवरण
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1-	1	आयोजना	उ.प्रा.वि. के अंग्रेजी शिक्षकों हेतु अभिनवन कार्यक्रमों के लिए सन्दर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम	1000/-	सित.90 8 दिन	50	5	
2-	"	आयोजना भिन्न	उ.प्रा.वि. के लिए ग्रीष्मकालीन 28 दिवसीय सेवारत प्रशिक्षण शिविर (हिन्दी, सामा. अध्ययन, उर्दू, सिन्धी, अंग्रेजी) हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण	8000/-	अप्रैल,90	70	2	बजट निदेशालय द्वारा सीधे शिविर निदेशक को आवंटित
3-	"	"	उप्रावि0 के लिए 28 दिवसीय प्रशिक्षण (ग्रीष्मकालीन) हिन्दी, संस्कृत, सामा0अध्ययन, अंग्रेजी, उर्दू, सिन्धी	20,000/-	मई-जून	50 प्रत्येक में	5	-,,-
4-	2	"	नवनियुक्त प्रयोगशाला सहायक प्रशिक्षण	600/-	अग.90 दिस0,90 फरवरी,91	50	2	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
					(6दिन प्रत्येक)			
5-	वि-2	"	प्रतिभाखोज प्रशिक्षण कार्यक्रम शिविर कार्यक्रम 2 शिविर	30,000/-	9-4-90 से 9-5-90 21दिन	75	10	निदेशालय से अतिरिक्त बजट आने पर आयोजनीय
6-	विभाग 2	आयोजना भिन्न	प्रतिभाखोज साक्षात्कार प्रशिक्षण शिविर	5000/-	5दिन	150	22	
7-	"		उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विज्ञान गणित पढ़ाने वाले अध्यापकों की ग्रीष्मकालीन शिविर	25,920/- प्रति शिविर चार शिविर	मई-जून,90 28 दिन	50 प्रति शिविर	20	बजट निदेशालय द्वारा आवंटित होने पर ही आयोजनीय
8-	"		प्रतिभाखोज प्रशिक्षण शिविर संदर्भ व्यक्तियों का अभिस्यापन कार्यक्रम	-	1 से 2 अप्रेल 90 (2दिन) 25	-		
9-	विभाग 3	आयोजना	संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम कार्यगोष्ठी (कार्यानुभव) कक्षा 6 से 8 तक के लिए कार्यानुभव शिक्षकों हेतु	3000/-	27 अग. से 1सित0, 90	25	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा सुझाए गए व्यक्ति एनसीईआरटी के विशेषज्ञ/ संस्थान के शिक्षा विभागीय प्रतिनिधि	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
10-	वि-3	आयोजना	1. उ.प्रा.वि.के शिक्षकों की कार्यानुभव प्रशिक्षण कार्यगोष्ठी 2. मा0वि0शिक्षकों की कार्यानुभव प्रशिक्षण कार्यगोष्ठी	2000/-	10-9-90 से 15-9-90 तक 6 दिन	40	संस्थान द्वारा प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारीगण	
11-	विभाग-3	आयोजना	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में शाला परामर्शकों एवं उनके संस्थाप्रधानों की कार्य गोष्ठी	4000/-	11.7.90 से 13.7.90 (3 दिन)	15	संस्थान के शाला परामर्शक तथा अन्य अधिकारी	
12-	-"-	आयोजना भिन्न	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में निर्देशन कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण	500/-	19 से 21 3 दिन	40x10 = 400	3x10=30	इसमें ट्राइबल एरिया भी सम्मिलित हैं ।
13-	विभाग-4	आयोजना	प्रधानाचार्यों की वार्षिक बैठक	500/-	अगस्त,90 3 दिन	40 प्रधानाचार्य	संस्थान के अधिकारी एवं प्रधानाचार्य शि0प्र0वि0	
14-	-"-	आयोजना भिन्न	कला शिक्षा शिक्षक प्रशिक्षण	500/-	सित0 90 10 दिन	40 व्या0 कला शिक्षा	कला शिक्षा के अनुभवी विद्वान	
15-	-"-	-"-	शारीरिक शिक्षा शिक्षक प्रशिक्षण	500/-	अक्टू0 90 6 दिन	40 शा. शि.	शा.शि. के अधि. विद्वान	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
16-	-"-	आयोजना	शि0प्रशिक्षण विद्यालयों का वार्षिक कार्यक्रम निर्धारण	1000/-	मई,90 (4दिन)	4 व्या0 शि0प्र0 वि. से	प्रधानाचार्य शि0प्र0वि0	
17-	-"-	आयोजना भिन्न	अल्पभाषाई (उर्दू,सिन्धी,एवं गुजरात) 28 दिवसीय प्रशिक्षण हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण शिविर	500/-	4 से 6 अप्रेल 90 (3 दिन)	13 व्या. एवं प्र0अ0 - मा0वि0	3	
18-	-"-	बजट निदेशालय से मिलना है ।	ग्रीष्मकालीन28 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर	4700/-	25 मई 90 से 21 जून, 90 (28दिन)	108 उप्रावि के अध्यापक	12	
19-	विभाग-5 भिन्न	आयोजना	शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी कार्यगोष्ठी	600/-	10 से 15 सित0 90 6 दिन	50	-	
20-	-"-	-"-	विद्यालय संगम मुख्य संदर्भ व्यक्ति (की पर्सन्स/रिसोर्स पर्सन्स) प्रशिक्षण	600/-	22 से 26 अक्टू. 90	56	निदेशालय नीपा एवं संस्थान के अधिकारी	
21-	विभाग-6	-"-	प्रवालक प्रशिक्षण शिविर समस्त शिक्षण संस्थाएँ एवं अन्य राजकीय संस्थाओं हेतु ।	500/-	वर्ष भर	आवेदन पर निर्भर	-	
22-	विभाग-6	-"-	शैक्षिक तकनीकी में श्रव्य-दृश्य उपकरण को कार्य में लेने का प्रशिक्षण	400/-	6-6 दिन चार शिविर	20 प्रत्येक में	3 प्रत्येक में	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
23-	विभाग-6	आयोजना	विडियो अभिलेख प्रशिक्षण शिविर	600/-	14 दिन मार्च, 91	राज. के चुने हुए हिन्दी व अंग्रेजी के संभागी	4	
24-	विभाग-7	आयोजना	जिला शिक्षाअनुसंधान वाक्पीठ के सचिवों का अनुसंधान	5000/-	अक्टू.90 5 दिन	30 राज्य स्तर	5	
25-	-"-	-"-	अनुसंधाताओं का प्रशिक्षण (विधि शास्त्र)	5000/-	अक्टू. 90	30 राज्य स्तर	5	
26-	विभाग-8	आयोजना	महिला शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम (दो गोष्ठियाँ)	20,000/-	सित0,अक्टू0 90	30 राज्य स्तर	एनसीई-आरटी के महिला शिक्षा विशेषज्ञ	
27-	-"-	केन्द्र प्रवर्तित योजना	अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के लिए महिला शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम (दो गोष्ठियाँ)	20,000/-	जन0,फर091	30	-"-	-"-
28-	विभाग-8	केन्द्र प्रवर्तित योजना	विकलांग एकीकृत शिक्षा योजना अन्तर्गत विद्यालयों के प्रधान अध्यापकों की प्रशिक्षण गोष्ठी	15000/-	24 से 26 जुलाई, 90 तीन दिन	22 प्रधाना-ध्यापक/ प्रधानाचार्य	5	राशि आवंटित होने पर आयोजनीय,

1	2	3	4	5	6	7	8	9
29-	-"-	-"-	विकलांग एकीकृत शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों का अभिनवन प्रशिक्षण	15,000/-	10 से 14 सित0, 90 5 दिन	32 संभागी द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी अध्यापक	5	-"-
30-	विभाग 9	आयोजना भिन्न	शिशु क्रीड़ा केन्द्र परीविक्षक अभिनवन प्रशिक्षण शिविर	500/-	अप्रेल, 90 3 दिन	30	6	
31-	-"-	-"-	आंगनवाड़ी पर्यवेक्षक अभिस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम	500/-	अक्टू, 90 5 दिन	30 आंगनवाड़ी महिला पर्यवेक्षक	6	
32-	-"-	-"-	शिशु देखभाल एवं अभिनवन प्रशिक्षण शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय अनुदेशक	500/-	नव, 90 6 दिन	40 शिक्षक प्र0वि0 के अनुदेशक	6	
33-	-"-	आयोजना	अविभक्त इकाई शिक्षक प्रशिक्षण हेतु संदर्भ व्यक्ति अभिनवन प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 प्रथम प्रशिक्षण	5000/-	मई,90 6 दिन	15 संभागी	3	
34-	-"-	आयोजना भिन्न	विशिष्ट पूर्व प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण	500/-	जून, 90 6 दिन	35 विशिष्ट पू.प्रा0वि0 अध्या/प्रअ0 प्र0अध्यापिका	6	

संस्थान व्यय मद - अनुसंधान

1	2	3	44	5	6	7	8	9
1-	विभाग-2	आयोजना	विज्ञान शिक्षण हेतु सुधार योजना (1987-88) का 9 जिलों में प्रभाव ज्ञात करना ।	500/-	जुलाई,90 से अप्रेल,91	-	-	
2-	विभाग-5	-""-	उदयपुर जिले के विद्यालयों का लागत विश्लेषण	500/-	मार्च, 91 एक वर्ष	-	-	
3-	विभाग-5	-	विद्यालयी शिक्षा के चयनित सूचनांक एक अध्ययन (1984-85 व 89-90)	-	मार्च, 91 एक वर्ष	-	-	
4-	विभाग-7	-	जिले के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक छात्रा विद्यालयों में नामांकन की स्थिति एवं विद्यालय परित्याग का अध्ययन । (जालौर/बाड़मेर)	500/-	जनवरी,91	-	-	
3) संस्थान व्यय मद - प्रचार सेवा								
1-	विभाग-1	आयोजना भिन्न	राज्य स्तरीय संस्कृत श्लोक पाठ प्रतियोगिता	600/-	अक्टू. 90 1 दिन	27	3	
2-	विभाग-1	आयोजना भिन्न	तकरीरी मुकाबला (उर्दू अध्यापकों का पत्र वाचन)	600/-	1 दिन	28	2	
3-	-"-	आयोजना	सामुदायिक समूहगान शिविर	10,000/-	10 दिन	50	6	
4-	-"-	आयोजना भिन्न	सिंधी भाषा अध्यापन प्रतियोगिता	600/-	जून 1 दिन	20	3	
5-	विभाग-2	-"-	उ.प्रा.वि. के विज्ञान अध्यापकों की राज्य स्तरीय शिक्षण प्रतियोगिता	500/-	फरवरी, 91	28	3	
6-	विभाग-2	आयोजना भिन्न	राज्य स्तरीय विज्ञान मेला 90-91	20,000/-	नव0,90	-	-	नोट-शेष व्यय लगभग

1	2	3	44	5	6	7	8	9
								30,000/- एनसीईआरटी. द्वारा व्यय किया जावेगा।
7-	-"-	आयोजना	राष्ट्रीय विज्ञान मेला हेतु चयनित छात्र/छात्राओं को मार्ग दर्शन	5000/-	जन0,91			
8-	-"-	-"-	राज्य स्तरीय विज्ञान सेमीनार	3500/-	अगस्त, 90 एक दिन	27 छात्र	3	बजट आने पर
9-	विभाग-3	योजना	इक्कीसवीं राज्य स्तरीय निर्देशन समारोह एवं प्रदर्शनी	8000/-	27-12-90 से 29-12-90 तीन दिन	110		
10-	विभाग-3	आयोजना भिन्न	ग्रीष्मकालीन निर्देशन शिविर	-	ग्रीष्मावकाश में छात्र/छात्राओं को 25केन्द्रों पर मार्ग दर्शन शि0,17 से 30 मई, 91 तक 15 दिन	-		यह केन्द्र जयपुर, जोधपुर, बीकानेर,कोटा, उदयपुर,अजमेर जहाँ आवश्यक होगा वहाँ चलेंगे।
11-	विभाग-5	आयोजना भिन्न	जिला परिषदों से संबंधित जिला शिक्षा अधिकारियों की गोष्ठी (नामांकन उपलब्धि एवं ठहराव विचार- विमर्श)	250/-	21 एवं 22 अग. 90 2 दिन	28 जि.शि. अ0	संस्थान के अधि कारी	
12-	-"-	-"-	जिला शिक्षा योजना समीक्षा	200/-	29 दिस0, 90 से 2 जन., 91 5 दिन	10	10	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
13-	-"-	-"-	एक विकास खण्ड के लिये सूक्ष्म योजना निर्माण	300/-	27 से 31 अग0 90 तक 5 दिन	10	-	
14-	विभाग-5	आयोजना भिन्न	इन्स्टीट्यूशनल प्लानिंग के लिये कार्यगोष्ठी (नई शिक्षा नीति,85 के परिप्रेक्ष्य में आवश्यक संशोधन परिवर्तन-परिवर्धन हेतु कार्यगोष्ठी	300/-	23 से 26 अप्रेल, 90 4 दिन	15	-	
15-	-"-	-"-	राजस्थान शिक्षा सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम	200/-	5 नव0,90 से 22 दिस, 90 तक 8 सप्ताह	50 मा.वि. के चयनित पदोन्नत प्र0अ0	संस्थान के विषय विशेषज्ञ	
16-	-"-	-"-	दल परिवीक्षण प्रतिवेदन समीक्षा गोष्ठी	200/-	17 से 18 जुलाई 90 2 दिन	20 प्र0अ0 उप जि.शि.अ. व उप जिशिअ0	संस्थान के अधिकारी	
17-	-"-	-"-	विद्यालय संगम संदर्शिका निर्माण कार्यगोष्ठी	300/-	20 से 25 अगस्त, 90 6 दिन	संगम प्रधान सचिव शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी जिशिअ0	-	
18-	-"-	-"-	प्रधानाध्यापक प्राथमिक,उ0प्रा0वि0 वाक्पीठ कार्यक्रम समन्वयन हेतु गोष्ठी	600/-	11 से 13 सित0, 90 3 दिन	56 सभी जिलों के वाकपीठ अध्यक्ष एवं सचिव	निदेशालय एवं संस्थान	
19-	विभाग-6	-"- (कार्यालय व्यय)	उ0प्रा0वि0 के सेवारत अध्यापकों हेतु निर्देशन शिविर (दृश्य-श्रव्य शिक्षा)	2500/-	जुलाई 90 4 दिन	30 संभागी	6	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
20-	विभाग6	आयोजना भिन्न	न्यूनतम मूल्य सहायक शिक्षण सामग्री निर्माण निर्देशन शिविर	2500/-	6 दिन अग0, 90	30	6	
21-	-"-	आयोजना	फिल्म स्लाईड्स एवं स्क्रीप्ट निर्माण कार्य गोष्ठी (अजमेर)	5000/-	2 सप्ताह सित0, 90	व0अ0 एवं विषय के व्या0 उमावि0 स्तर	6	
22-	विभाग-6	आयोजना	त्रिभाषीय शिक्षण सामग्री निर्माण कार्यगोष्ठी (अजमेर)	5000/-	2 सप्ताह अक्टू, 90	अध्या0 एवं व0अ0 एवं व्या0 विषय से संबंधित	6	
23-	-"-	-"-	वृहद् उत्पादन कार्य गोष्ठी (रेशम पट्ट मुद्रण,सिल्क स्क्रीन प्रिन्टिंग,(अजमेर)	5000/-	2 सप्ताह फर0, 91	20	6	
24-	-"-	आयोजना भिन्न	श्रव्य-दृश्य एवं शैक्षिक प्रौद्यौगिकी निर्देशन शिविर	2500/-	4 दिन नव0, 90	25	6	
25-	-"-	आयोजना	श्रव्य-दृश्य शिक्षण सामग्री की उपादेयता पत्रवाचन (प्र0अ0 हेतु)	2500/-	4 दिन फर0, 91	25	6	
26-	-"-	आयोजना	रेडियो अभिलेख लेखन शिविर (सामान्य विज्ञान एवं पर्यावरण अध्ययन (अजमेर)	6000/-	2सप्ताह 3 से 15 सित0	20	2	
27-	-"-	-"-	रेडियो अभिलेख लेखन शिविर (हिन्दी एवं सामान्य ज्ञान) अजमेर	6000/-	2 सप्ताह अक्टू, 90	20	2	
28-	-"-	आयोजना भिन्न	विभाग में विडियो केसेट लाइब्रेरी का निर्माण	5000/- -	6 दिन फर0, 91	-	4	
29-	विभाग-7	आयोजना भिन्न	जिला एवं मण्डल कार्यालय में कार्यरत शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारियों की बैठक	500/-	जून, 90 3 दिन	50 शि.प्र.अ.	संस्थान के अधिकारी	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
30-	-"-	-"-	शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय के समन्वयकों की बैठक	500/-.	अग0, 90 3 दिन	30 शिप्रवि0 के समन्वयक	3	
31-	-"-	आयोजना	केन्द्र प्रवर्तित योजना केन्द्र समन्वयकों की बैठक (केन्द्र तथा संबंधित शि0प्र0वि0 के समन्वयक)	500/-	दिस0 3 दिन	14 समन्वयक केन्द्र प्रायो-3 के	संस्थान के अधिकारी	
32-	विभाग-7	एनसीईआरटी द्वारा	एनसीईआरटी0 द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार रीडिंग प्राथमिक उ0प्राय0,माध्यमिक/उ0मा0वि0 एवं प्रधानाचार्य के लिये पत्रवाचन प्रतियोगिता	-	अक्टू0 90 दिस0 90 2 दिन			
33-	-"-	आयोजना	प्राय0 एवं उ0प्रा0वि0 के शिक्षकों के लिये जिला व राज्य स्तरीय पत्रवाचन प्रतियोगिता	3000/-	जन0,91 2 दिन			
34-	-"-	-"-	जिला शिक्षा अनुसंधाता वाक्पीठ के अध्यक्ष एवं सचिव संगोष्ठी	500/-	2 दिन जुलाई, 90	5	2	
	4) संस्थान व्यय मद - केन्द्र प्रवर्तित योजना							
1-	विभाग-2 जनसंख्या शिक्षा	जनसंख्या शिक्षा	जनसंख्या शिक्षा सामग्री एवं प्रशिक्षण एवं सहशैक्षिक गतिविधियों का मूल्यांकन अध्ययन ।	17,500/-	नव., 90	-	-	
2-	विभाग-8 (अनौ. शिक्षा)	-	औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा में शिक्षार्थियों के ठहराव एवं शैक्षिक	6,000/-				

1	2	3	4	5	6	7	8	9
			उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन । जिला- जयपुर,बाडमेर,भीलवाड़ा,कोटा, जैसलमेर,जोधपुर ।					
3-	-"-	-	अनुसूचित जाति ,जनजाति क्षेत्र में बालिका शिक्षा की शैक्षिक पिछड़ेपन के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन । (क्षेत्र-डूंगरपुर,बाँसवाडा,उदयपुर,प्रतापगढ़)	10,000/-				
4-	विभाग-8 (अनौ. शिक्षा)	-	विद्यार्थियों के ठहराव एवं शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन ।	10,000/-	जून, 90 6 दिन	30 राज्य स्तर	2	
5-	-"-	-	अनौपचारिक केन्द्रों का मूल्यांकन,जिला- भीलवाडा,अजमेर,पाली,जोधपुर,सिरोही	1,000/-	अक्टू.,90 5 दिन	40	2	
6-	-"-	-	3 जिलों के ठहराव का अध्ययन	6000/-	सित0,90 3 दिन	30 जिला स्तर के	2	
	केन्द्र प्रवर्तित योजना -		प्रशिक्षण					
7-	विभाग-1 (जिला संदर्भ केन्द्र अंग्रेजी)	-	अंग्रेजी शिक्षक प्रशिक्षण माध्यमिक स्तर के 8 प्रशिक्षण	7,500/- प्रति प्रशिक्षण	मई से जून 90 तक	50*7 = 350	4	
8-	-"-	-	पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा अंग्रेजी शिक्षक प्रशिक्षण (तीन संपर्क कार्यक्रम)	17,500/- प्रति संपर्क कार्यक्रम	मई,90 5दिन सित0, 90 10 दिन नव0,90 10 दिन	50 30 50	4	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
9-	-"-	-	अनुवर्तन कार्यक्रम अंग्रेजी शिक्षक प्रशिक्षण दो कार्यक्रम	2000/-	अग,90 फर0, 91	350 138	4	
10-	-"- बागडी-हिन्दी भाषा प्रायोजना	-	बागड़ी-हिन्दी भाषा प्रायोजना प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन	-	फर0, मार्च, जुलाई,अग0 में मूल्यांकन एवं सित.,अक्टू. में प्रशिक्षण	30	3	
11-	विभाग-2	-	विज्ञान शिक्षण सुधार योजना के अनुसार उ0प्रा0वि0 स्तर के अध्यापक प्रशिक्षण हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण	480/-		45	4	राशि उपलब्ध होने पर आयोजनीय
12-	-"-	-	विज्ञान शिक्षण सुधार योजना के अनुसार माध्यमिक स्तर के अध्यापक प्रशिक्षण हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण	4830/-		45	4	-"-
13-	-"-	-	विज्ञान शिक्षण सुधार योजना के अनुसार कुछ प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का प्रशिक्षण शिविर (68 शिविर)	4600/-प्रति शिविर	10 दिन प्रत्येक	40	4	-"-
14-	-"-	-	विज्ञान शिक्षण सुधार योजना के अनुसार मा0वि0 के अध्यापकों हेतु प्रशिक्षण (23 शिविर)	7550/-प्रति शिविर	15 दिन प्रत्येक	40	4	-"-
15-	-"-	-	विज्ञान शिक्षण सुधार योजना के अनुसार उ0प्रा0वि0 स्तर के गणित अध्यापक प्रशिक्षण -कार्यक्रम हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण ।	4830/-	3 दिन	45	4	-"-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
16-	-"-	-	उ0प्रा0वि0 स्तर के गणित अध्यापक हेतु प्रशिक्षण (68 शिविर)	4600/-प्रति शिविर	10दिन प्रति शिविर	40	4	-"--
17-	-"- जनसंख्या शिक्षा	-	जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत अनुदेशकों के प्रशिक्षण हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण	8000/-	जन0, 90	30	3	-"--
18-	-"-	-	अनौपचारिक शिक्षा में कार्यरत अनुदेशकों को जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान एवं क्षेत्र से ।	6000/- 6000/-	जून-जुलाई 90	10 चार जिलों से	3	-"--
19-	विभाग-2	-	डाईट के संबंधित व्याख्याताओं को स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा विषय संबंधित प्रशिक्षण	10,000/-	अक्टू,90 से दिस0 90 तक			इन कार्यक्रमों हेतु अतिरिक्त बजट राशि उपलब्ध होने पर ही आयोजनीय
20-	विभाग-3 (व्यावसायिक शिक्षा)	-	कार्यालय प्रबंध विषय शिक्षक अभिनवन प्रशिक्षण	9000/-	30 दिवसीय	30	-	रा0 गुरु गो0 सी0 उमावि0 में आयोज्य
21-	-"-	-	अतिरिक्त जिला अधिकारी व्यावसायिक शिक्षा एवं उनके साथ कार्यरत अधिकारियों का व्यावसायिक शिक्षा सर्वे कार्य हेतु प्रशिक्षण	20,000/-	11जून से 15 जून 5 दिन	26	सर्वे कार्य प्रशिक्षित अति जिशिअ0व्यावसायिक शिक्षा, एनसीईआरटी0 नई दिल्ली के प्रतिनिधि संस्थान के अधिकारी	राशि उपलब्ध होने पर आयोज्य

1	2	3	4	5	6	7	8	9
22-	-"-	-	उपप्रधानाचार्य व्यावसायिक शिक्षा सीउमावि0 की व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यगोष्ठी	25000/-	23 से 27 जुलाई, 90 5 दिन	35	" --	
23-	-"-	-	व्यावसायिक शिक्षा में फसल उत्पादन के शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम	24000/-	5 दिन	6 राज्य स्तर के	एग्रोनोमी विभाग कृषि महा वि0 उदयपुर	-"-
24-	-"-	-	बागवानी विषय शिक्षक कार्यक्रम हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण	-	-	-		राज्य सरकार द्वारा बजट प्राप्त होने के आधार पर
25-	-"-	-	आशुलिपि हिन्दी-अंग्रेजी शिक्षक प्रशिक्षण हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण		-	-	-	-"-
26-	विभाग-3 (व्या0शिक्षा)	-	कार्यालय प्रबंध विषय शिक्षक शिक्षण हेतु संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण	-	-	-		-"-
27-	-"-	-	व्यावसायिक शिक्षा में फसल उत्पादन एवं बागवानी विषय शिक्षक अभिनवन प्रशिक्षण	9000/- 9000/-	30 दिवसीय	20	प्रशिक्षित संदर्भ व्यक्ति	राज0सी0उमा वि0 बाड़नेदिया (2) बांसवाड़ा उमावि0
28-	विभाग-6	-	प्रायोजना अधिकारी प्रशिक्षण	10,000/-	अप्रेल,90 6 दिन	30 राज्य स्तर	4	
29-	-"-	-	परिवीक्षण अधिकारियों की प्रशिक्षण संदर्शिका	10,000/-	जुलाई, 90 6 दिन	30 राज्य स्तर	4	
30-	-"-	-	अनुदेशकों का सघन प्रशिक्षण	15,000/- प्रति शिविर	नवंबर, 90 15 दिन	50 27 जिले	4	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
31-	-"-	-	अनुदेशकों का अभिनवन प्रशिक्षण	15,000/-	जनवरी,91 15 दिन	50 जिले	4 प्रत्येक जिला	
32-	विभाग-4	-	पी.मोस्ट-ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड कार्यक्रम - 1990	एनसीईआरटी लगभग पांच लाख रुपये	अप्रेल, 90 5 दिन		40	
33-	-"-	-	ब- सन्दर्भ्य व्यक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम	-"-	अप्रेल, 90 10-10दिन के प्रशिक्षण		800	
			स- व्यापक शिक्षक अभिनवन कार्यक्रम ओ0बी0 1990					
34-	विभाग-। जिला संदर्भ्य केन्द्र	-	छात्रों के भाषा कौशल के विकास हेतु जन जाति के छात्रों को मार्ग -दर्शन (चार केम्प)	-	दिसम्बर, 90 7 दिन प्रति शिविर	100	चार 4	जनजाति आयुक्त से राशि प्राप्त होने पर ही। आयोजनीय ।
35-	विभाग-2 जनसंख्या शिक्षा	-	जनसंख्या शिक्षा सामुदायिक विकास कार्यक्रम पांच ग्रामों में	5000/-	जुलाई,से दिस. 1990	-	-	अतिरिक्त राशि उपलब्ध होने पर ही आयोजनीय ।
36-	विभाग-3 व्यावसायिक शिक्षा	-	अनुसंधान सहायक व्यावसायिक शिक्षा संबंधी कार्यगोष्ठी (उपप्रधानाचार्य-व्या0शिक्षा) व्यावसायिक शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु चार्ट निर्माण ।	20000/-	-	-	-	- " -

1	2	3	4	5	6	7	8	9
केन्द्र प्रवर्तित योजना - मूल्यांकन								
37-	विभाग-2 जनसंख्या शिक्षा	-	जनसंख्या शिक्षा सामग्री प्रशिक्षण एवं सहशैक्षिक प्रवृत्तियों का इकाई मूल्यांकन कार्यक्रम ।	3500/-	नवम्बर,90	-	-	- " -
केन्द्र प्रवर्तित योजना - प्रकाशन								
38-	विभाग-1 अंग्रेजी जिला संदर्भ्य केन्द्र	-	अंग्रेजी जिला संदर्भ्य केन्द्र की त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशन ।	4000/-	-	-	-	- " -
39-	विभाग-2 जनसंख्या शिक्षा	-	जनसंख्या शिक्षा प्रतियोगिता हेतु निर्मित नाटक या एकांकी का प्रकाशन ।	6000/-	दिसम्बर,90 तक	-	-	अतिरिक्त राशि उपलब्ध होने पर ही आयोजनीय
40-	विभाग-2 जनसंख्या शिक्षा	-	जनसंख्या शिक्षा संदेश ।	8000/-	-	-	-	- " -
केन्द्र प्रवर्तित योजना - अन्य								
41-	विभाग-2	-	विज्ञान शिक्षण सुधार योजना 1987-88 के अनुसार अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम 1- अधिगम सामग्री निर्माण (उ.प्रा.वि.)	5000/-	-	-	-	- " -

1	2	3	4	5	6	7	8	9
42-	विभाग-2	-	विज्ञान शिक्षण सुधार योजना 1987-88 के अनुसार माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु अधिगम सामग्री निर्माण ।	8770/-	7 दिन	20	-	- " -
			विज्ञान शिक्षण सुधार योजना के अनुसार गणित विषय के अध्यापक प्रशिक्षण हेतु अधिगम सामग्री निर्माण । (उ.प्रा.वि.)	5000/-	-	-	-	- " -
43-	विभाग-2 जनसंख्या शिक्षा	-	जनसंख्या शिक्षा बालिकाओं हेतु जनसंख्या शिक्षा सामग्री निर्माण (दो कार्यगोष्ठी)	15000/-	4चार फरवरी से अप्रेल	15	3	अतिरिक्त् राशि उपलब्ध होने पर आयोजनीय ।
44-	विभाग-2 जनसंख्या शिक्षा	-	अनौपचारिक शिक्षा सामग्री निर्माण (जनसंख्या शिक्षा)	1,57,000/-	-	20	4	- " --
45-	विभाग-2 जनसंख्या शिक्षा	-	जनसंख्या शिक्षा लेबोरेटरी का निर्माण ।	2000/-	जुलाई से दिस. 1990	-	-	-"-
46-	विभाग-2 केन्द्र प्रवर्तित योजना	-	स्वास्थ्य शिक्षा - सहायक शिक्षण साहित्य निर्माण	60000/-	-"- फरवरी, 1991	-	-	
47-	विभाग-3 व्यावसायिक शिक्षा	-	पाठ्यक्रम समीक्षा कार्यगोष्ठी (राज्य सरकार द्वारा प्रस्तावित दो विषय हेतु) 1-आशुलिपि, 2- कार्यालय प्रबन्ध	6000/- प्रति गोष्ठी	12 से 17 नव. 1990 (6 दिवसीय)	-	14	- " -

1	2	3	4	5	6	7	8	9
48-	विभाग-9 रा.रा.पा.पु.म. जयपुर ।	-	कक्षा 5 व 8 की पाठ्यपुस्तक के निर्माण हेतु कार्यदलों की बैठक ।	60000/-	सत्रभर 90-91	60	20	- " -
49.	Deptt.-8 CAPE Project	- 1 lakh	Working group meeting for Repairing and finalising question Bank	7000/-	2 to 9 March, 90 8 days	-	5	
50.	Deptt.-8 CAPE Project	-	Working group meeting for preparing and finalising facilitators hand book .	7000/-	2-9 March, 1990 8 days	-	5	
51.	Deptt.8 CAPE Project	-	Conducting test on SAMPLE basis for avaluating 1 earner attainment	20000/-	April to June 1990	-	-	
52.	Deptt.-8 CAPE Project	- -	Collecting datas from learning Centres and preparing final report on the implementation of the Project in the state.	29000/-	July-Sept,90	-	-	
53.	Project CAPE Deptt-8	-	High level advocasy meeting for project CAPE	10000/-	One day April,90	-	-	
54.	Deptt-8 Project	-	Meeting of experts to review CAPE material for them use in NFE Centres One meeting	10000/-	Four days April	-	10 Experts	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
नामांकन शीर्षक								
55.	विभाग -9	आयोजना भिन्न	विद्यालय मूल्यांकन उपकरण निर्माण कार्यगोष्ठी ।	2000/-	5 दिन सित.,90	15	3	
56.	विभाग-9	आयोजना	कक्षा 1 से 5 तथा 6 से 8 के छात्रों के लिये मूल्यांकन संदर्शिका निर्माण ।	10000/-	जुलाई, 90 6 दिन	20	5	
57.	विभाग-9	आयोजना भिन्न	शिक्षकों के मूल्यांकन हेतु उपकरण निर्माण कार्यगोष्ठी ।	500/-	नवम्बर, 90 5दिन	15	3	
शीर्षक - अन्य कार्यक्रम								
58.	विभाग-1	आयोजना	उ.प्रा.वि. के अंग्रेजी शिक्षकों के 28 दिवसीय अभिस्थापन कार्यक्रम हेतु पाठ्यक्रम एवं उपयोगी शिक्षण सामग्री का विकास । (कार्यगोष्ठी)	5000/-	नवम्बर, 90 10 दिन	20	5	
59.	विभाग-1	आयोजना	सामाजिक अध्ययन विषय के अल्पावधि कार्यक्रमों के लिये 10 दिवसीय पाठ्यक्रम एवं सामग्री विकास (कार्यगोष्ठी)	4000/-	नवम्बर, 90 6 दिन दिसम्बर,90 6 दिन	150	4	
60.	विभाग-1	आयोजना	बालकों में संस्कृत भाषा की मौलिक अभिव्यक्ति के विकासार्थ सामग्री निर्माण ।	3000/-	जुलाई, 90 5 दिन	25	2	
61.	विभाग-2	आयोजना	कक्षा 3 पर्यावरण अध्ययन के लिये लर्निंग पैकेज निर्माण कार्यगोष्ठी	3000/-	20-24 अगस्त	10	2	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
62.	विभाग-4	आयोजना	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम का नवीनीकरण ।	5000/-	19-23 जून, 90 5दिन	डाईट के प्राचार्य बी.एड.कालेज के 18 व्या.	6	-
63.	विभाग-4	आयोजना	डाईट के सेवारत शिक्षा प्रसार सेवा के पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग के ट्रेनिंग पैकेज निर्माण कार्यगोष्ठी ।	6000/-	24-28जुलाई 1990,5दिन	9	3	डाईट के विभाग अधिकारी
64.	विभाग-4	आयोजना	डाईट के समाजोपयोगीतपादक कार्य एवं कार्यानुभव विभाग तथा अनौपचारिक एवं पौढ़ शिक्षा विभाग के लिये ट्रेनिंग पैकेज निर्माण कार्य गोष्ठी ।	5000/-	21-25 अगस्त 1990 5 दिन	9 डाईट के विभाग अधिकारी	3	-
65.	विभाग-4	आयोजना	डाईट शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग तथा आयोजना एवं प्रबन्ध विभाग के लिये ट्रेनिंग पैकेज निर्माण कार्यगोष्ठी ।	5000/-	3-7सित.90 5 दिन	9	3	
66.	विभाग-4	आयोजना	डाईट के प्रधानाचार्यों की वार्षिक कार्यक्रम कार्यगोष्ठी ।	4000/-	10-12 जुलाई, 1990,3दिन	28 -"-	5	
67.	विभाग-4	आयोजना	डाईट के प्रधानाचार्यों की वार्षिक कार्यक्रम सत्रांत प्रबोधन कार्यगोष्ठी	4000/-	6-7फरवरी,91	28 -"-	5	
68.	विभाग-7	आयोजना	जिला शिक्षानुसंधाता वाक्पीठों द्वारा सम्पन्न शोध कार्यों के समीक्षा एवं सार संक्षेप लेखन गोष्ठी ।	200/-	नवम्बर,90 5 दिन	-	4	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
69.	विभाग-7	आयोजना	संस्थान स्तर पर संपादित शोधकार्यों के सार संक्षेप लेखन गोष्ठी ।	200/-	दिसम्बर,90 5 दिन	-	4	
70.	विभाग-8	आयोजना	पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा कार्यगोष्ठी।	5000/-	अगस्त,90 5 दिन	30 राज्य स्तर	एन.सी.ई.आर.टी. के महिला शिक्षा विशेषज्ञ	
71.	विभाग-9	आयोजना	संग्रहालय निर्माण कार्यगोष्ठी (पूर्व प्राथमिक स्तर)	5000/-	अगस्त,90 6 दिन	30	6	
शीर्षक - प्रकाशन								
72.	विभाग-1	आयोजना	मूल्य परक शिक्षा छात्र डायरी	5000/-	सित.90	-	-	
73.	विभाग-2	आयोजना	कक्षा-3 पर्यावरण अध्ययन के लर्निंग पैकेज का मुद्रण कार्य ।	10000/-	दिस.90	-	-	
74.	विभाग-2	आयोजना	राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में पुरस्कृत मॉडल पर पुस्तिका का प्रकाशन, (1000 प्रतियाँ)	5000/-	मार्च,91 तक	-	-	
75.	विभाग-3	आयोजना	मुद्रण एवं प्रकाशन व्यावसायिक शिक्षा सर्वेक्षण संदर्शिका ।	10000/-	-	-	-	
76.	विभाग-4	आयोजना	(अ) शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों में छात्रा अध्यापकों हेतु निम्नांकित विषयों में पाठ्य सामग्री विकसित कर प्रकाशित एवं प्रसारित करना ।		प्रत्येक 10 दिवसीय			
			1- कला शिक्षा	3000/-	जुलाई,90	20	रुचिशील अनुभवी	
			2- पर्यावरण अध्ययन	3000/-	अक्टू.90	20	शिक्षक प्रशिक्षक	

1	2	3	4	5	6	7	8	9
			3- तृतीय भाषा संस्कृत	3000/-	नव0,90	20	-- " --	
			4- पूर्व प्राथमिक शिक्षक शिक्षण	3000/-	दिस.,90	20	-- " --	
			5- शारीरिक शिक्षा	3000/-	जन.,91	20	-- " --	
			6- स0उ0का0/कार्यानुभव प्रवृत्तियों का संपादित करने ।	3000/-	फर.,91	20	-- " --	
77.	विभाग-4	आयोजना	(ब) राज्य सरकार के अनुमोदित शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षाक्रम का मुद्रण सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण द्विवर्षीय सेवा(पूर्व) पूर्व प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षाक्रम का मुद्रण ।	10000/-	अगस्त-सितम्बर, 1990	-	-	
78.	विभाग-5	आयोजना भिन्न	विद्यालयी शिक्षा के चयनित सूचकांक :- एक अध्ययन (84-85 वर्ष 89-90)	2000/-	मार्च,91 तक एक वर्ष	-	-	
79.	विभाग-5	आयोजना भिन्न	राजस्थान शिक्षा सेवा अधिकारी प्रदर्शिका ।	5000/-	-	-	विषय विशेषज्ञ संस्थान के अधिकारी	
80.	विभाग-7	आयोजना	अनुसंधान द्वितीय अंक का प्रकाशन	5000/-	अगस्त,90	-	-	-
81.	विभाग-7	-"-	जिला शिक्षानुसंधाता वाक्पीठों के लिये मार्गदर्शन	2000/-	सितंबर,90	-	-	-
82.	विभाग-7	-"-	संस्थान वार्षिकी 1990-91 का प्रकाशन	2000/-	अप्रैल,91	-	-	-
83.	विभाग-7	-"-	संस्थान की वार्षिक उपलब्धियों का फोल्डर प्रकाशन 89-90	1000/-	नवम्बर,90 जून 90	-	-	-
84.	विभाग-7	-"-	यूनिसेफ प्रायोजनाएँ केन्द्र प्रवर्तित योजनाएँ एवं रा.शि.नी.की उपलब्धियाँ	1000/-	नवम्बर,90 योजना	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
85.	विभाग-7	-"-	राजस्थान में व्यावसायिक शिक्षा फोल्डर	1000/-	दिसंबर,90	-	-	-
86.	विभाग-8	आर.एस.टी.बी. जयपुर ।	ज्ञान दीपिका,हिन्दी पहली पुस्तक, हिन्दी दूसरी पुस्तक,गणित पहली पुस्तक गणित दूसरी पुस्तक, अनौपचारिक शिक्षा द्वितीय चरण पाठ्यक्रम, पोस्टर फोल्डर ।	-	-	-	-	रा0रा0पा0पु0 मण्डल जयपुर
87.	विभाग-9	आयोजना	विद्यालय संग्रहालय संदर्शिका प्रकाशन ।	3000/-	सत्रभर	-	-	-

नोट -

1. प्रस्तावित एवं संभाव्य कार्यक्रमों को प्रतिमाह निदेशक महोदय से अनुमोदित कराना आवश्यक होगा ।
2. प्रत्येक कार्यक्रम में अनुमानित राशि ही दर्शाई गई है , परन्तु यह आवश्यक नहीं कि उतनी ही राशि उपलब्ध करवा दी जाय । इस राशि में उपलब्ध फण्ड के आधार पर कमी भी की जा सकती है ।
6. यह राशि का आवंटन नहीं है ।
4. प्रत्येक प्रोजेक्ट अपने अनुमोदित कार्यक्रमों व उस हेतु उपलब्ध धनराशि के आधार पर कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे ।

शिक्षा कर्मी योजना - एस.आइ.ई.आर.टी. शाखा :-

वार्षिक - कार्यक्रम 1990-91

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	कार्यक्रम का नाम	कार्यक्रम का दिनांक एवं अवधि	सम्भागी संख्या	आयोजन स्थल
1	2	3	4	5	6
1.	दक्ष प्रशिक्षण चयन कार्यक्रम	चयन शिविर	10-11 जुलाई 1990	60	बोर्ड कार्यालय-
			12-13 जुलाई 1990	70	,, ,, ,,
			16-17 जुलाई 1990	65	,, ,, ,,
			6-7 सितम्बर 1990	70	,, ,, ,,
2.	दक्ष प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन	दक्ष प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर	17अगस्त से 26 अगस्त 1990 - 10 दिन	65	जनता कोलेज डबोक
			6 नवम्बर से 15 नवम्बर 10 दिन	70	डाईट गोनेर जयपुर
			3 जनवरी से 12 जनवरी 1991 10 दिन		
			30 अप्रेल से 4 मई 1990 5 दिन	40	कोटपुतली
3.	दक्ष प्रशिक्षण के लिए उपर्युक्त साहित्य तैयार करना ।	कार्यगोष्ठी आयोजित करना	8-9 अगस्त 1990 2 दिन	15	बोर्ड कार्यालय
4.	शिक्षाकर्मियों के लिये इकाईबद्ध प्रशिक्षण एवं साहित्य निर्माण करना	इकाईबद्ध प्रशिक्षण साहित्य निर्माण हेतु कार्यगोष्ठी	6-7 जुलाई 1990 (द्वितीय एवं तीस दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	25	बोर्ड कार्यालय

1	2	3	4	5	6
			समीक्षा)		
			21-22 सितम्बर 1990 (10 दिवसीय पाठ्यक्रम निर्माण)	25	,, ,, ,,
			24-26 अक्टूबर 1990 (तीनों तीस दिवसीय पाठ्यक्रम)	25	,, ,, ,,
5.	शिक्षाकर्मियों के लिए पत्राचार पाठ तैयार करना	पत्राचार पाठ निर्माण विषयवार	चारों विषयों के प्रतिमाह एक पाठ मासिक समाचार बुलेटिन में प्रकाशित करवाये जायेंगे । प्रतिमाह की 2 तारीख को प्रस्तुत कर दिये जायेंगे ।	प्रतिमाह तारीख 2 को	
6.	शिक्षाकर्मियों को एवं परिवीक्षकों के प्रशिक्षण कार्य क्रम में भागीदारी	शिक्षाकर्मियों के प्रशिक्षण चयप शिविरों में भागीदारी	शिक्षा कर्मियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में कार्य करना, चयन में भाग लेना		
7.	शिक्षाकर्मियों के उपयोग के लिये साहित्य तैयार करना ।	संदर्भ सामग्री निर्माण	संपूर्ण सत्र में		
		विज्ञान-1. अविभक्त इकाई शिक्षण संदर्शिका	जनवरी,1991		
		2. कक्षा 3,4,5 की शिक्षण संदर्शिका	अप्रेल,1991		
		हिन्दी-1. अन्तर्कथाएँ	1. सितंबर,1990		
		2. मुहावरों का संकलन	2. मई,1990		
		3. शिक्षण में सहायक खेल एवं गीतों का संकलन	3. दिसम्बर, 1990		

1	2	3	4	5	6
		सामा. विज्ञान 1. पाठ्यपुस्तक पर इकाईवार शिक्षण बिन्दु तैयार करना 2. अनुपयोगी सामान से बनने वाली वस्तुओं की जानकारी 3. शिक्षण में सहायक खेल एवं क्रियाओं का संकलन (इकाईवार) गणित - अविभक्त इकाई एवं कक्षा 3-5 तक की शिक्षण इकाइयों की शिक्षण बिन्दुवार संदर्शिका तैयार करना ।	जनवरी, 1991 अप्रेल, 1991		
8.	मासिक पत्रिका का प्रकाशन	शिक्षाकर्मियों एवं इस कार्यक्रम से जुड़े लोगों की कार्यक्रम की गतिविधियों एवं अन्य उपयोगी सामग्री की जानकारी देना ।	प्रतिमाह के दिनांक 28 तक प्रेषित कर दी जावेगी ।		
9.	प्रयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावशीलता देखने के लिए का अनुसंधानात्मक अध्ययन	दी गई सामग्री की	फरवरी, मार्च 1991		

महिला शिक्षाकर्मी प्रशिक्षण केन्द्र
वार्षिक कार्यक्रम 1990-91

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	कार्यक्रम का नाम	कार्यक्रम की अवधि एवं दिनांक	संभागी संख्या स्तर व जिला	आयोजन स्थल
1	2	3	4	5	6
1.	सर्वेक्षण आधारित चयन	योग्य प्रशिक्षणार्थियों का चयन	9 अप्रेल, 1 दिन	संभागी-8 दूदू के मित्र गाँवों से जिला जयपुर	पंस.दूदू के पांच गाँव तथा अजमेर जिला
2.	प्रशिक्षक चयन	विषय प्रशिक्षक चयन	11 अप्रेल, 1 दिन	एकट-कोटड़ी 9	एकट-कोटड़ी (रुपनगढ़,अजमेर)
3.	विचार गोष्ठी	प्रशिक्षण कार्यक्रम कार्यगोष्ठी	17,18अप्रेल 2 दिन	15 दक्ष प्रशिक्षक जयपुर	शिक्षाकर्मी बोर्ड ,जयपुर
4.	विचार गोष्ठी	प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यगोष्ठी	5 मई, 1 दिन	6 दक्ष प्रशिक्षक जयपुर	,,
5.	प्रशिक्षण प्रशिक्षण	प्रशिक्षण कार्यगोष्ठी कार्यक्रम	18-27 मई, 10 दिन	18 चयनित प्रशिक्षक जयपुर	श्री महावीर दिग. जैन.विद्यालय
6.	सर्वेक्षण आधारित चयन	प्रशिक्षणार्थियों का चयन	28-31 मई 4 दिन	लगभग 40 ग्रामीण महिलाएँ	पं.स.सलूम्बर आर सराड़ा के गाँव
7.	प्रशिक्षण केन्द्र योजना	महिला शिक्षाकर्मी प्रशिक्षण केन्द्र	1 जून से	15 ग्रामीण महिलाये डूंगरपुर जिला	पं.स. बिछीवाड़ा माड़ा गाँव
8.	प्रशिक्षण केन्द्र योजना	महिला शिक्षाकर्मी केन्द्र	1 जून से	30 ग्रामीण महिलायें नागोर, अजमेर	कोटड़ी पं.स.सिलोरा (रुपनगढ़)
9.	प्रशिक्षण केन्द्र योजना	महिला शिक्षाकर्मी प्रशिक्षण केन्द्र	1 जूलाई से	30 ग्रामीण महिलाये उदयपुर	चावण्ड पं.स.सराड़ा जिला उदयपुर

1	2	3	4	5	6
10	समीक्षा	प्रशिक्षण केन्द्र	3,4 अगस्त, 90	दक्ष प्रशिक्षक दल-5	माड़ा पं.स.बिछीवाड़ा कोटड़ी पं.स.सिलोरा
11.	विचार गोष्ठी	अनुवर्तन कार्य	17, 18 अगस्त, 90	दक्ष प्रशिक्षक स्वैच्छिक	शिक्षाकर्मी बोर्ड जयपुर
12.	विचार गोष्ठी	कार्यक्रम पुनरावलोकन	25 अगस्त 1990	सं.1 संधान,विकास अध्ययन सं. शिक्षाकर्मी बोर्ड	शिक्षाकर्मी बोर्ड जयपुर
13.	प्रशिक्षक प्रशिक्षण	प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम	3-7 सित. 90	प्रशिक्षक दक्ष प्रशि.17	जनता कॉलिज, डबोक उदयपुर
14.	सर्वेक्षण आधारित चयन	योग्य महिला आशार्थी चयन	13-14 सित. 90	ग्रामीण महिलायें चुरु जिला	पं.स.ग्राम चुरु जिला
15.	प्रशिक्षक चयन	विषय प्रशिक्षकों का	4 - 5 अक्टू. 90	महिला आशार्थी,चुरु	जि.भोरु ग्राम चुरु जिला
16.	सर्वेक्षण आधारित चयन	महिला प्रशिक्षणार्थीचयन	16-17 अक्टू. 90	ग्रामीण महिलायें भीलवाड़ा जिला	शाहपुरा पं.स. भीलवाड़ा जिला
17.	,,	प्रशिक्षणार्थी चयन करना	29-31 अक्टू.90	,, ,, सवाई माधोपुर जिला	पं.स.करोली,सपोटरा
18.	,,	प्रशिक्षणार्थी चयन कार्यक्रम	5-7 नव. 90	,, ,, बीकानेर जिला	कोलायत पं.स.
19.	प्रशिक्षक चयन	विषय प्रशिक्षक चयन कार्य	15-30नव.90	सभी आवेदनकर्ता चयन दल	श्री महावीरजी शाहपुरा बज्जू
20.	विचार गोष्ठी	प्रशिक्षण पाठ्यक्रम गोष्ठी	6-7दिस.90	विषयवार 10 दक्ष प्रशि.	शिक्षाकर्मी बोर्ड, जयपुर
21.	प्रशिक्षण	प्रशिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम	14-22दिस.90	विषयवार दक्ष प्रशि.14	शाहपुरा, भीलवाड़ा जिला
22.	विचार गोष्ठी	स्वैच्छिक संस्था प्रतिनिधि बैठक	3-4 जन.91	20 संभागी	शिक्षाकर्मी बोर्ड, जयपुर
23.	प्रशिक्षण केन्द्र योजना	महिला शिक्षाकर्मी प्रशिक्षण	15जन.से	30ग्रामीण महिलायें	शाहपुरा, जिला भीलवाड़ा

1	2	3	4	5	6
				भीलवाड़ा जिला	
24.	प्रशिक्षण केन्द्र योजना	महिला शिक्षाकर्मी प्रशि.	15 जनवरी से	30 ग्रामीण महिलायें सवाई माधोपुर	श्री महावीर जी जिला सवाई माधोपुर
25.	समीक्षा	प्रशिक्षण केन्द्र समीक्षा	20-30जन.91	समीक्षा दल 10व्यक्ति	उदयपुर,डूंगरपुर,अजमेर
26.	प्रशिक्षण केन्द्र योजना	महिला शिक्षाकर्मी प्रशिक्षण	फरवरी,91	30ग्रामीण महिलायें जिला चुरु	भोरु ग्राम चुरु
27.	विचार गोष्ठी	अनुवर्तन कार्यक्रम	20-21फर 91	स्वैच्छिक सं.प्रतिनिधि -6 दक्ष प्रशिक्षक-8	शिक्षाकर्मी बोर्ड,जयपुर
28.	विचार गोष्ठी	अनुवर्तन कार्यक्रम	3-4मार्च91	10 भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर	,, ,,
29.	समीक्षा	प्रशिक्षण केन्द्र समीक्षा कार्य	25-26मार्च 1991	10 उदयपुर,डूंगरपुर अजमेर जिला समीक्षा दल	चावण्ड,माड़ा,कोटडी

S... s Unit,
...ational
D-6012
Date 15-4-91

" To Survive we need a revolution in our thoughts and outlook . From the alter of the past we should take the living fire and not the dead ashes . Let us remember the past ,be alive to the present and create the future with caurage in our hearts and faith in ourselves."

Dr. S.Rardhakrishnan

" I like being with children and talking to them,and even more playing with them .....(Children) read many fairy tales and stories of long age. But,the World itself is the greatest fairy tale or story of adventure that has ever been written . Only, We must have eyes to see and ears to hear and a mind that opens out to the life and the beauty of the world.....

Surely. science is not merely an individual search for truth, It is something infinitely more than that if it worked for the community ....

I do believe firmly that the only right approach to the world problems and to our national problems is the approach of science, that is to say , of the spirit of science, and method of science ."

Jawahar Lai Nehru

" The quality of education must be reflcted in the quality of life, in its value and grace, in the culture of the social and individual mind and last in our intellectual and technological competence to face and master the problems before us."

Indira Gandhi

NIEPA DC
D06012